संस्कार धारा

अंक - छठवां

2023

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय

जी.एस.टी. भवन, नेपियर टाउन, जबलपुर (म.प्र.)

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय जबलपुर के मुख्यालय भवन
का मुख्य प्रवेश द्वार

संस्कार धारा

अंक - छठवां वर्ष - 2023

संरक्षक

श्री चंद्रप्रकाश गोयल
मुख्य आयुक्त, भोपाल अंचल, भोपाल

प्रधान संपादक

श्री लोकेश कुमार लिल्हारे
आयुक्त

संपादक

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
अपर आयुक्त

प्रबंध संपादक

श्री ब्रह्मानंद प्रसाद
संयुक्त आयुक्त

संपादन समिति

श्री सुदर्शन मीणा, उपायुक्त
श्री मेहुल कुमार पुरूषोत्तम दयाल, सहायक आयुक्त
श्री सुनील कुमार, सहायक आयुक्त

विशेष सहयोग

श्री रोहित कुमार सोलाखे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक
केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.)

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ संख्या
1.	राजभाषा प्रेम (जबलपुर आयुक्तालय के संदर्भ में)	रोहित कुमार सोलाखे	11
2.	एक जिद	प्रिया पांडे	14
3.	जीएसटी – सफलता के 6 वर्ष	विवेक वर्मा	15
4.	मुंबई से जबलपुर	ब्रह्मानंद प्रसाद	17
5.	भारत में प्रभावी जीएसटी कार्यान्वयन के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका	सुदर्शन मीणा	18
6.	नूतन वर्ष के उपलक्ष्य पर	सुनील कुमार	21
7.	जीवन की सार्थकता	अजय कुमार शुक्ला	22
8.	तबादला – मुंबई से जबलपुर में : एक संस्मरण	आसिफ जमाल	23
9.	जबलपुर (भारत के मध्यप्रदेश राज्य के इस शहर में आपका स्वागत है)	एम.पी. दयाल	24
10.	संस्मरण : मैं हूं नशे का सिपाही	सुनील कुमार	26
11.	दिव्य वाणी – अवतार वाणी (संकलन)	व्ही.बी.एस. राजपूत	28
12.	कुत्ते का पिल्ला	सतीश कुमार रैकवार	29
13.	नेतृत्व का सम्मान	सुजीत कुमार	31
14.	मन की आशाएं	रोहित कुमार सोलाखे	32
15.	बाजार बातों का	प्रेम जुनेजा	33
16.	उज्जैन दर्शन	आशीष सिंघल	34
17.	सुविचार (संकलन)	महेश कुमार कोष्टा	36
18.	सुबह–ए–गौरीघाट	चेतन सक्सेना	39
19.	हमारी धरोहर (भाग–1) बादशाह हलवाई मंदिर, ग्वारीघाट रोड, जबलपुर	अंशु शर्मा	40
20.	परिश्रम	सुजीत कुमार	41
21.	जबलपुर के प्रमुख पर्यटन स्थल	इंद्रजीत कुमार	42
22.	छोड़ दे	रोहित कुमार सोलाखे	47
23.	रेटिंग की दुनिया	आयुष सक्सेना	48
24.	आप उस नदी में दुबारा नहीं उतर सकते	तान्या	50
25.	कर्मयोग	रोहित यादव	51
26.	महाभारत के युद्ध में भोजन प्रबंधन	श्वेता तिवारी	52
27.	परिवर्तन	शिवम साहू	53
28.	जल संरक्षण	राजकिशोर यादव	54
29.	वड़ा पाव : एक लघु कथा	सुनील कुमार	56
30.	दो कविताएं – कुछ सफर के दरमियां, कुछ मंजिल के	सुनील कुमार	57
31.	बागवानी – आत्मा की संवेदनशीलता और प्राकृतिक संरचना	गज्जू लाल चौधरी	58
32.	कर अधिकारी हम	शुभी चौबे	59
33.	तू मानव था	अजय कुमार शुक्ला	60
34.	जीवन का संगीत , राष्ट्र के नाम	शुभी चौबे	61
35.	जीवन की पाठशाला	शुभी चौबे	62
36.	चले आइये	मधु सोलाखे	62
37.	गणतंत्र दिवस 2023	(फोटो पृष्ठ)	63
38.	रोजगार मेला	(फोटो पृष्ठ)	64
39.	गौरवशाली उपलब्धि	(फोटो पृष्ठ)	66
40.	स्वतंत्रता दिवस 2023	(फोटो पृष्ठ)	68
41.	पौधा वितरण कार्यक्रम	(फोटो पृष्ठ)	69
42.	स्वच्छता अभियान, स्वच्छ भारत मिशन	(फोटो पृष्ठ)	70
43.	शपथ ग्रहण, क्रिकेट	(फोटो पृष्ठ)	71
44.	जब्ती, साइकिल रैली	(फोटो पृष्ठ)	72
45.	सघन जाँच अभियान	(फोटो पृष्ठ)	73
46.	जीएसटी दिवस	(फोटो पृष्ठ)	74
47.	विकसित भारत के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत	रोहित कुमार सोलाखे	75
48.	संघर्ष की उड़ान	शुभी चौबे	80
49.	भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत	रवि भूषण सिंह	81
50.	भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत	राज किशोर यादव	82
51.	सलीम का सपना	व्ही.बी.एस. राजपूत	85
52.	''एक अधूरी आस''	शुभम कुमार	88
53.	उम्मीद	अमर कुमार	90
54.	कृत्रिम बुद्धिमता एवं सूचना प्रोद्योगिकी	तान्या	91
55.	कृत्रिम बुद्धिमता एवं सूचना प्रोद्योगिकी	श्वेता तिवारी	93
56.	कृत्रिम बुद्धिमता एवं सूचना प्रोद्योगिकी	अमरकांत कुमार	95
57.	चित्रकला	विभा श्रीवास्तव	98
58.	चित्रकला	दीपाली शर्मा	99
59.	सोशल मीडिया की झलकियाँ	(फोटो पृष्ठ)	100

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.)

संरक्षक की कलम से

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर अपनी वार्षिक विभागीय गृह-पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के छठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। जबलपुर आयुक्तालय अपनी गृह पत्रिका का अनवरत प्रकाशन के प्रति पूर्णत प्रतिबद्ध है। अतः मुझे आशा है कि ''संस्कार-धारा'' पत्रिका का यह अंक अपने पूर्व के पांच अंकों की तरह ही पूर्णतः उम्मीदों पर खरा उतरने वाला होगा।

हिंदी को हमारे संविधान में राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है और राजभाषा का सम्मान करना संविधान का पालन करने और राष्ट्र से प्रेम करने के बराबर है। अपनी राजभाषा में कार्य करना और उसका प्रचार-प्रसार करना अपने आप में एक प्रशंसनीय कदम है। पत्रिका प्रकाशन जैसे कार्य हमारे राजभाषा के प्रति प्रेम को दर्शाते हैं और निस्संदेह ही इन कार्यों का लाभ हमें हमारे दैनिक कार्यालयीन कार्यों में मिलता है।

मैं, भोपाल अंचल का मुख्य आयुक्त होने के नाते जबलपुर आयुक्तालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियों से यह अनुरोध करता हूं कि वह अपने दैनिक सरकारी कामकाज में मूल रूप से राजभाषा हिंदी का प्रयोग करें, ताकि जबलपुर आयुक्तालय के अन्य सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले। इसके साथ ही मैं, जबलपुर आयुक्तालय के आयुक्त समेत गृह-पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के संपादन कार्य से जुड़े हुए सभी सदस्यों को इसके प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान करता हूं।

(चंद्रप्रकाश गोयल)
मुख्य आयुक्त
भोपाल अंचल, भोपाल

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.)

प्रधान संपादक की कलम से

नर्मदा के तट पर बसा हुआ जबलपुर नगर अपने आप में कई विविधताओं को समेटे हुए है। जबलपुर नगर का एक अन्य नाम संस्कारधानी भी है। संस्कार उन गुणों का किसी व्यक्ति में होने का नाम है, जिससे उसके आचार, विचार, व्यवहार और कर्म ऐसे होते हैं, जो स्वयं उसका ही नहीं अपितु अन्य का जीवन भी सहज, सुखी और सार्थक करता है और जहां से ऐसे अच्छे गुण या संस्कार मिलते है उस स्थान, धर्म, समाज, विद्यालय, शास्त्र या नगर को संस्कारधानी कहा जाता है। अतः संस्कारधानी में रहकर अपनी राजभाषा में कार्य करना और उसका प्रचार-प्रसार करना अपने आप में एक प्रशंसनीय कदम है।

हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व बनता है कि हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियम का अनुपालन सुनिश्चित करवाएं। ''क'' क्षेत्र में होने के कारण अगर हम सभी अपने निर्धारित लक्ष्य अर्थात 100 प्रतिशत कार्यालयीन कार्य हिंदी करते हैं तो इससे न केवल हमारे कार्य में पारदर्शिता आएगी बल्कि हमसे जुड़े हुए सम्माननीय करदाताओं को भी भाषा संबंधी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। हमें जरूरत इस इस बात की है कि हम हिंदी को उसके सरलतम रूप में अपनाकर सरकारी कामकाज में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें। राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन तथा उत्तरोत्तर विकास के लिए राजभाषा से संबंधित अनुदेशों का अनुपालन भी इस दृढ़ता के साथ किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है।

हिंदी भाषा में भारत के विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्य विद्यमान है जिनकी वजह से हम पूरे विश्व में अतुलनीय हैं हिंदी भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ-साथ भारत की भावात्मक एकता को मजबूत करने का भी सशक्त जरिया है। अपनी उदारता, व्यापकता एवं ग्रहणशीलता के कारण ही हिंदी भारत की सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है। किसी सुदृढ़ राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसका अपनी भाषा कितनी व्यापक एवं समृद्ध है।

हम सब साथ मिलकर मन वचन और कर्म से हिंदी के प्रचार प्रसार में सक्रिय एवं सृजनात्मक सहयोग प्रदान कर हिंदी को उसके सम्मानजनक स्थान पर पहुंचाकर राष्ट्र का गौरव बढ़ा सकते हैं हम सब, न सिर्फ इसे अपना संवैधानिक दायित्व मानकर बल्कि नैतिक दायित्व समझ कर शासकीय कार्यों के साथ-साथ अपने निजी जीवन में भी

पूरे मनोयोग के साथ हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हमें वांछित परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज में अभिव्यक्ति बहुत ही सरल, सहज और सुगम होती है चूंकि हमारी भाषा हिंदी है अतः हम सभी को एक केंद्रीय कार्मिक के तौर पर राजभाषा हिंदी को एक सरलतम रूप में अपनाकर दैनिक सरकारी कार्यों में इसका अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। प्रायः हम सभी के अंदर कुछ न कुछ रचनात्मकता छुपी हुई होती है और अगर एक सार्थक मंच मिले तो हमारी यह विशेषता उभरकर सामने आती है। जबलपुर आयुक्तालय के लिए यह एक प्रसन्नता का विषय है कि यहां तैनातित अधिकारी एवं कर्मचारी अपने नियमित कार्यालयीन कार्य के अलावा कुछ रचनात्मक लेखन में भी रुचि रखते हैं और इसके लिए कार्यालय द्वारा विभागीय गृह-पत्रिका का प्रकाशन एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं रुचिकार कदम है। विभागीय गृह-पत्रिका का प्रकाशन करना अपने आप में एक सराहनीय कदम है। इसी के अंतर्गत हम विगत पांच वर्षों से आयुक्तालय की वार्षिक विभागीय गृह विभागीय गृह पत्रिका ''संस्कार-धारा'' का निरंतर प्रकाशन कर रहे हैं। यह पत्रिका ना केवल विभागीय अधिकारियों की रचनात्मक को एक मंच प्रदान करती है अपितु उनके परिवारजनों को भी अपने लेखनकला के माध्यम से रचनात्मक प्रस्तुतीकरण का अवसर प्रदान करती है। इसी क्रम एवं परंपरा को बरकरार रखते हुए केंद्रींय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर इस बार अपनी वार्षिक विभागीय गृह-पत्रिका ''संस्कार धारा'' के छठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

जबलपुर आयुक्तालय का हमेशा से यह प्रयास रहा है कि ''संस्कार-धारा'' पत्रिका का हर नया अंक अपने पिछले अंक की तुलना में बेहतर हो और इस बार भी पत्रिका के संपादक मंडल ने यह दायित्व बखूबी निभाया है। अतः मैं पत्रिका के संपादक मंडल समेत आयुक्तालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यालय की विभागीय गृह-पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के छठवें अंक के सफल प्रकाशन में योगदान हेतु धन्यवाद देता हूं।

जय हिंद

लोकेश

(लोकेश कुमार लिल्हारे)
आयुक्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.)

संपादक की कलम से

मुझे ''संस्कार-धारा'' से जुड़कर अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। जब ''संस्कार-धारा'' के पिछले अंक मैंने देखे थे तो मेरे मन में कहीं न कहीं यह इच्छा अवश्य थी कि मैं भी ''संस्कार-धारा'' के लिए कुछ न कुछ अवश्य लिखूं और आज मुझे संस्कार-धारा के इस छठवें अंक के लिए संपादकीय लिखने का अवसर मिला है। ''संस्कार धारा'' के पिछले पांच अंकों में शामिल रचनाएं आलेख, पेंटिंग्स, फोटोग्राफ्स इत्यादि को पाठकगण द्वारा काफी पसंद किया गया था। हम इसके लिए सभी पाठक गण के आभारी है।

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय जबलपुर राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी निष्ठा और परंपरा को निभाते हुए अपनी वार्षिक विभागीय गृह पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के छठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। ''संस्कार-धारा'' पत्रिका के पिछले अंकों को हमने वर्चुअल माध्यम से प्रकाशित करके एक नया और अनूठा प्रयोग किया था। जबलपुर आयुक्तालय द्वारा पेपर बचाकर पेड़ों के संरक्षण पर आधारित उस प्रयोग की सराहना सभी कार्यालयों द्वारा की गई थी और कई कार्यालयों द्वारा इस नई परंपरा को अपनाया भी गया था। अतः इस वर्ष भी हम पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध होकर संस्कार-धारा पत्रिका के इस छठवें अंक को साफ्टकॉपी के रूप में वर्चुअल माध्यम से प्रकाशित कर रहे हैं जिसे की आप सभी पिछली बार की तरह की जबलपुर आयुक्तालय की वेबसाइट और विभिन्न सोशल मीडिया माध्यमों के जरिए पढ़ सकते हैं।

अपनी राजभाषा में कार्य करना उसका प्रचार-प्रसार करना अपने आप में एक प्रशंसनीय कदम है इसी क्रम एवं परंपरा को बरकरार रखते हुए जबलपुर आयुक्तालय अपने अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों से प्राप्त रचनात्मक लेखन को समाहित करते हुए संस्कार-धारा के छठवें अंक का प्रकाशन कर रहा है। अतः मैं, पत्रिका के संरक्षक श्री चंद्रप्रकाश गोयल सर, मुख्य आयुक्त, भोपाल अंचल, भोपाल एवं जबलपुर आयुक्तालय के आयुक्त श्री लोकेश कुमार लिल्हारे सर, जिनके मार्गदर्शन एवं सहयोग से यह पत्रिका प्रकाशन का पुनीत कार्य संपन्न हुआ है उन्हें धन्यवाद प्रदान करता हूँ और इनके साथ ही मैं संस्कार धारा पत्रिका के संपादक मंडल और जबलपुर आयुक्तालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी कार्यालय की विभागीय गृह-पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के छठवें अंक के सफल प्रकाशन में योगदान हेतु धन्यवाद देता हूं।

इन शब्दों के साथ ही केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर की ओर से विभागीय गृह पत्रिका ''संस्कार-धारा'' का छठवें अंक के प्रति आप सभी को सौंपते हुए मुझे अत्याधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आप सभी पाठकगण से यह अनुरोध है कि पत्रिका के इस अंक के संबंध में अपने अमूल्य सुझाव एवं विचारों से हमें अवश्य अवगत करवाएं ताकि हम पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक बेहतर बनाने का प्रयास कर सकें।

(वीरेन्द्र कुमार जैन)

अपर आयुक्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.)

प्रबंध संपादक की कलम से

विभागीय गृह-पत्रिका का प्रकाशन करना अपने आप में एक प्रशंसनीय कदम है। इसी क्रम एवं परंपरा को बरकरार रखते हुए केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर अपनी वार्षिक विभागीय गृह-पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के छठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। जबलपुर एक हिंदी भाषी क्षेत्र है अतः यहाँ पर राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम स्वाभाविक है। इसी क्रम में जबलपुर आयुक्तालय द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन एक प्रेरणादायक एवं सराहनीय कदम है। कार्यालय द्वारा पत्रिका का प्रकाशन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को एक ऐसा मंच प्रदान करता जहाँ वह अपने लेखन कौशल से सभी को प्रभावित कर सकते हैं। कार्यालयीन कार्य हिंदी भाषा में करना बहुत आसान है। जबलपुर आयुक्तालय में रहते हुए मैंने यह भी अनुभव किया है कि हिंदी भाषा में कार्य करने को लेकर यहां के कार्मिकों की रुचि अधिक है, अतः राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देना मेरी प्राथमिकता में हमेशा से रहा है।

मुझे आशा है कि ''संस्कार-धारा'' पत्रिका का यहा छठवाँ अंक अपने पूर्व के पांचों अंकों की तरह ही पूर्णतः उम्मीदों पर खरा उतरने वाला होगा और आगे साहित्यिक रचनात्मकता के पटल पर नया कीर्तिमान स्थापित करेगा।

अतः मैं, केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय की वार्षिक विभागीय गृह पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के छठवें अंक के सफल प्रकाशन के लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद करता हूं।

शुभकामनाओं सहित

ब्रह्मानंद प्रसाद

(ब्रह्मानंद प्रसाद)

संयुक्त आयुक्त

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.)

उप संपादक की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय जबलपुर अपनी वार्षिक विभागीय गृह-पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के छठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। यह भी प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय जबलपुर में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी अपने नियमित कार्यालयीन कार्य से इतर कुछ रचनात्मक लेखन में भी रुचि रखते हैं और उनके तथा उनके परिवारजनों के इसी रचनात्मक क्रियाकलाप को हम एक पत्रिका के रूप में प्रतिवर्ष आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। कार्यालय द्वारा विभागीय गृह-पत्रिका का प्रकाशन एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं रुचिकर कदम है। ''संस्कार-धारा'' पत्रिका के इस छठवें अंक में जहां एक ओर आपको हमारे अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा स्वचरित या संकलित आलेख, कविताएं पेटिंग्स इत्यादि पढ़ने/देखने मिलेगी वही दूसरी और इस पत्रिका में आपको जबलपुर आयुक्तालय में वर्ष भर के दौरान हुए विभिन्न कार्यक्रम/गतिविधियों की भी एक झलक दिखाई देगी।

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर की वार्षिक विभागीय गृह-पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के छठवें अंक के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से पत्रिका के संपादक मंडल समेत उन सभी अधिकारियों / कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों का आभार, जिनके आलेख, रचनाएं आदि से यह पत्रिका बनकर तैयार हुई है और अंत में मेरी ओर से विभागीय गृह-पत्रिका ''संस्कार-धारा'' के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाईयाँ।

(मेहुल कुमार पुरुषोत्तम दयाल)

सहायक आयुक्त (राजभाषा)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.)

सह संपादक की कलम से

बड़े सौभाग्य की बात है अपनी मातृभाषा हिंदी के साहित्य से जुड़े रहना। पहले सीमा शुल्क विभाग में काम करते हुए वहां से प्रकाशित होने वाली हिन्दी भाषा की पत्रिका के साथ जुड़ा रहा हूं। यह सौभाग्य जीएसटी जबलपुर आयुक्तालय में भी जारी रहा है। ''संस्कार-धारा'' के पुराने अंक को देखकर ही मैंने यह जुड़ाव महसूस किया था। जब नया अंक अब प्रकाशित होने वाला है तो इसमें मैंने बड़े उत्साह से भाग लिया है। अपनी रचनायें दी है। अपने सहकर्मियों को पत्रिका के लिए प्रेरित किया है। व्यक्तिगत प्रयास का असर ये हुआ है कि कई लोगों की रचनात्मकता इस बार सामने आ रही है।

बहुत ही संतुष्ट हूं सबों की सहभागिता देखकर। विविध विषयों पर लिखा है सबने। आशा करता हूं कि यह अंक एक कीर्तिमान स्थापित करेगा ।

शुभकामनाओं के साथ ।

(सुनील कुमार)
सहायक आयुक्त

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय जबलपुर (म.प्र.)

''संस्कार धारा'' संपादक मंडल

अंक - छटवां 2023

बाएं से प्रथम - **श्री रोहित कुमार सोलारवे** (वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी), **श्री मेहुल कुमार पुरूषोत्तम दयाल** (सहायक आयुक्त), **श्री ब्रह्मानंद प्रसाद** (संयुक्त आयुक्त), **श्री वीरेन्द्र कुमार जैन** (अपर आयुक्त), **श्री सुदर्शन मीणा** (उपायुक्त) एवं **श्री सुनील कुमार** (सहायक आयुक्त)

केवल विभागीय प्रयोग हेतु

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचना मौलिक ही है ऐसा सुनिश्चित करना संपादक मंडल के लिए संभव नहीं है ।

राजभाषा प्रेम

(जबलपुर आयुक्तालय के संदर्भ में)

रोहित कुमार सोलाखे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

जन-जन की भाषा है हिंदी, भारत की आशा है हिंदी
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है, वो मजबूत धागा है हिंदी
हिंदुस्तान की गौरवगाथा है हिंदी, एकता की अनुपम परंपरा है हिंदी
जिसके बिना हिंद थम जाएं, ऐसी जीवनरेखा है हिंदी
जिसने काल को जीत लिया है, ऐसी कालजयी भाषा है हिंदी
सरल शब्दों में कहा जाए तो जीवन की परिभाषा है हिंदी

भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक संपर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है। हिंदी हमारे देश के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल हमारी राजभाषा है, बल्कि यह हमारी अपनी संस्कृति का माध्यम भी है। हिंदी के माध्यम से न केवल भारत बल्कि दुनिया भर के करोड़ों लोग अपनी भावनाओं और विचारों को बेहतर तरीके से व्यक्त कर सकते हैं। ऐसे में हमें हिंदी के महत्व को समझते हुए इसके महत्व को जानना चाहिए। साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिए की भारत विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का मिश्रण है। इसलिए हमें अपनी भाषा का गर्व से प्रचार-प्रसार करना चाहिए और अन्य भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए।

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय जबलपुर का मुख्यालय मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक शहर जबलपुर शहर में हैं। इसके अंतर्गत पूर्वी मध्यप्रदेश के 22 जिलें आते हैं जबलपुर आयुक्तालय का मुख्यालय जिसमें 21 अनुभाग एवं 06 शाखाएं है। इसके अलावा 07 अधीनस्थ मंडल कार्यालय और 35 रेंज कार्यालय है। यह सभी कार्यालय अपने राजस्व संग्रहण की जिम्मेदारी को बखूबी निभा रहे हैं। यह बहुत ही हर्ष की बात है कि जबलपुर आयुक्तालय में तैनातित सभी कार्मिक राजभाषा हिंदी के प्रति अपने दायित्वों को लेकर भी पूर्णतः सजग है। मध्यप्रदेश राज्य की प्रमुख भाषा ''हिंदी'' होने के कारण जबलपुर आयुक्तालय का आंतरिक एवं बाहरी परिवेश अधिकतर हिंदी के अनुकूल है इस का लाभ दिन-प्रतिदिन के कार्यालयीन कार्यों में मिलता ही है। इससे कार्यालय में पदस्थ सभी अधिकारियों को राजभाषा में कार्य करने में आसानी होती है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं उच्च कार्यालयों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में प्राप्त आदेश, अनुदेश, नीतियों, कार्ययोजनाओं का समयपूर्व अनुपालन करने के प्रति जबलपुर आयुक्तालय हमेशा से प्रतिबद्ध है। राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए जाने वाली ''हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी वार्षिक कार्यक्रम'' में ''क'' क्षेत्र के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्यों का पालन जबलपुर आयुक्तालय के अंतर्गत मुख्यालय, सभी मंडल कार्यालयों और सभी रेंज कार्यालयों में किया जाता है। जबलपुर आयुक्तालय उक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रति भी सर्वदा प्रतिबद्ध है।

जबलपुर आयुक्तालय के संदर्भ में राजभाषा हिंदी की प्रगति को हम निम्न बिंदुओं के अंतर्गत समझ सकते हैं:-

- राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) एवं राजभाषा नियम 1976 के सभी बिंदुओं का अनुपालन जबलपुर आयुक्तालय में सुनिश्चित किया जाता है।
- भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रगामी के लिए जारी वार्षिक कार्यक्रम की तर्ज पर ही केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.) द्वारा अपना वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया गया है।जिसका सख्त अनुपालन कार्यालय में किया जाता है।
- कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के सक्रिय कार्यान्वयन के लिए हर तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमानुसार आयोजित की जाती है, जिसकी अध्यक्षता कार्यालय प्रमुख अर्थात आयुक्त महोदय द्वारा की जाती है। भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं वार्षिक कार्यक्रम पर चर्चा प्रत्येक बैठकों में की जाती है।आयुक्तालय के अनुभागों एवं मंडल कार्यालयों में हिंदी कार्यान्वयन की प्रगति तथा तिमाही प्रगति रिपोर्ट के आधार पर विस्तृत चर्चा होती है। आयुक्तालय के अधीनस्थ आने वाले मंडल कार्यालयों में भी अलग से तिमाही हिंदी प्रगति बैठकों का आयोजन किया जाता है जिसकी अध्यक्षता संबंधित, मंडल प्रमुख अर्थात उप/सहायक आयुक्त द्वारा की जाती है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठकों में जबलपुर आयुक्तालय की ओर से आयुक्त महोदय, अन्य वरिष्ठ अधिकारी और राजभाषा अधिकारी शामिल होते हैं।
- जबलपुर आयुक्तालय में लगभग सभी अधिकारी/कर्मचारी हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है वही कुछ अन्य अधिकारी/कर्मचारी के पास हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान है। जिसका प्रयोग वह अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में करते हैं। आयुक्तालय के अंतर्गत तैनातित सभी समूह ''क'' अधिकारियों द्वारा अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में किया जाता है जिससे प्रेरणा लेकर अधीनस्थ कर्मचारी भी हिंदी में कार्य करते हैं जिसका लाभ कार्यालय को होता है मंडल कार्यालयों एवं रेंज कार्यालयों द्वारा शासकीय पत्राचार के अलावा निर्धारितियों एवं सम्मानीय करदाताओं के साथ किए जाने वाले पत्राचार भी नियमानुसार हिंदी में ही किए जाते हैं। केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित है।अतः समय-समय पर इसके अनुपालन के लिए गठित जांच बिंदुओं की समीक्षा भी की जाती है।
- हर तिमाही के अंत में किए गए राजभाषा कार्यान्वयन को अवगत करते हुए हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट, निष्पादन प्रबंधन महानिदेशालय नई दिल्ली को प्रेषित की जाती है।केंद्रीय जीएसटी मुख्य आयुक्त का कार्यालय भोपाल अंचल, भोपाल, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-राजभाषा (मध्य क्षेत्र) एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जबलपुर को भी यह रिपोर्ट प्रेषित की जाती है यह रिपोर्ट राजभाषा विभाग को ऑनलाइन प्रस्तुत की जाती है। मार्च को समाप्त तिमाही के लिए वार्षिक रिपोर्ट निष्पादन प्रबंधन महानिदेशालय को प्रेषित की जाती है। तिमाही हिंदी प्रगति रिपोर्ट नियमानुसार राजभाषा विभाग की वेबसाईट पर भी ऑनलाइन सबमिट की जाती है।
- सितंबर माह में हिंदी दिवस/पखवाड़ा धूमधाम से मनाया जाता है। इस संदर्भ में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है। अधिक से अधिक संख्या में अधिकारीगण तथा कर्मचारीगण हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं।
- जबलपुर आयुक्तालय की वार्षिक विभागीय गृह पत्रिका ''संस्कार धारा'' के ऑनलाइन तथा ऑफलाइन

संस्करण का प्रकाशन नियमित तौर पर किया जाता है।

- ❖ एक नई पहल के तहत के जबलपुर आयुक्तालय द्वारा शुरू की गई में तिमाही पत्रिका ''कर दर्पण'' का प्रकाशन भी नियमित रूप से किया जाता है।
- ❖ हर एक तिमाही में कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है जिसमें राजभाषा नीति तथा राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न विषयों के अलावा अधिकारियों एवं कर्मचारियों के विभिन्न ज्ञानवर्धन के विषयों पर भी प्रशिक्षण दिया जाता है। यह कार्यशाला विभिन्न प्रारूपों में जैसे पूर्ण दिवसीय, अर्द्धदिवसीय, प्रत्यक्ष रूप से, ऑनलाइन माध्यम से, डेस्क-टू-डेस्क प्रकार से आयोजित की जाती है। इसमें राजभाषा अनुभाग के अलावा अन्य अनुभागों की भी भागीदारी होती है।
- ❖ राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए अनुभाग/मंडल को प्रतिवर्ष रोलिंग शील्ड से पुरस्कृत (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के लिए) किया जाता है। हिंदी में मूल काम के लिए पुरस्कार योजना के अंतर्गत पात्र अधिकारियों को पुरस्कार राशि प्रतिवर्ष दी जाती है।
- ❖ जबलपुर आयुक्तालय के मुख्यालय में हिंदी पुस्तकालय का रखरखाव एवं संचालन किया जाता है। हर वर्ष कार्यालयीन काम में उपयुक्त हिंदी पुस्तकें खरीदी जाती है इसके अलावा पुस्कालय में विभिन्न विषयों तथा विविध साहित्य अधिकारियों के पढ़ने हेतु उपलब्ध है। पुस्तकालय में हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं की अच्छी पुस्तकें उपलब्ध है। पुस्कालय में नियमित रूप से समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं भी पठन हेतु मंगाई जाती है।
- ❖ राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में सभी मंडल कार्यालयों एवं मुख्यालय के अनुभागों का निरीक्षण, नियमित रूप से किया जाता है। निरीक्षण के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति लाने के लिए अनुदेश एवं मार्गदर्शन दिया जाता है। सामान्य निरीक्षण के अलावा औचक निरीक्षण भी किया जाता है।
- ❖ जबलपुर आयुक्तालय राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) और राजभाषा नियम 5 का शतप्रतिशत पालन करने के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध है। इसके साथ ही जबलपुर आयुक्तालय फाइलों पर लिखी जाने वाली टिप्पणी और पत्राचार के संदर्भ में भी तय नियमों के अनुपालन के प्रति प्रतिबद्ध है।
- ❖ कार्यालय की सभी रबड़ की मुहरे द्विभाषी में और सभी नामपट्ट तथा सूचना पट्ट हिंदी या द्विभाषा में है। विभागीय संबंधी द्विभाषी शब्दावली सभी अधीनस्थ कार्यालयों में परिचालित किए जा चुके हैं। मानक मसौदे, द्विभाषी शब्द/वाक्यांश समय-समय पर परिचालित किए जाते हैं। अधिकारियों के संदर्भ के लिए मिसिल के आवरण में द्विभाषी वाक्यांश/वाक्य मुद्रित है। कार्यालय की वेबसाईट पर सभी निर्धारित प्रपत्रों के मसौदे अधिकारियों कर्मचारियों के लिए/उपलब्ध है। कार्यालय में होने वाली प्रत्येक बैठकों में चर्चा हिंदी में की जाती है एवं बैठक से संबंधित कार्यसूची तथा कार्यवृत आदि हिंदी या द्विभाषा में जारी किए जाते है अधिकारियों द्वारा डिक्टेशन आदि हिंदी में ही दिए जाते हैं।

उपरोक्त सभी कार्यों के सफलतापूर्वक संचालन के साथ ही आगामी भविष्य में भी जबलपुर आयुक्तालय के स्तर पर राजभाषा की उन्नति में सहयोग देने के लिए सभी अधिकारी तथा कर्मचारी अपने कर्तव्य के प्रति सजग है।

जबलपुर आयुक्तालय के राजभाषा के प्रति इसी प्रेम एवं समर्पण की सराहना करते हुए भारत सरकार, गृह मंत्रालय,

राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.) को संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए मध्य क्षेत्र (मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़) के सभी बड़े केंद्र शासकीय कार्यालयों (50 से अधिक कार्मिकों वाले) में से वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए तृतीय पुरुस्कार, वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए तृतीय पुरुस्कार एवं वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए प्रथम पुरुस्कार से सम्मानित किया गया है। अतः जबलपुर आयुक्तालय को यह सम्मान लगातार तीन वर्षों तक प्रदान किया गया है। यह उपलब्धि निश्चित ही भविष्य में कार्यालय के अधिकारियों के राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं प्रचार-प्रसार के प्रति पूर्ण समर्पण को मजबूत करेगी एवं एक नई दिशा प्रदान करेंगी। यह आयुक्तालय के सभी कार्मिकों के सामूहिक प्रयासों एवं वरिष्ठ अधिकारियों के उत्कृष्ट मार्गदर्शन और राजभाषा के प्रति सभी के लगाव के कारण ही संभव हुआ है इस उपलब्धि के लिए जबलपुर आयुक्तालय के सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण बधाई के पात्र है। जब भी हमें कोई उपलब्धि मिलती है या प्रशंसा प्राप्त होती है तो इसका सीधा सा मतलब यह है कि अब उस संबंधित क्षेत्र में सभी की अपेक्षाएं हमसे काफी बढ़ गई है और अब हमारे क्रियाकलापों के आंकलन करने वालों का दायरा भी अप्रत्याशित रूप से बढ़ चुका है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बेहतर निष्पादन के लिए हमें प्राप्त यह पुरुस्कार निस्संदेह ही हमारे राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम और इसके प्रचार-प्रसार में सतत रूप से प्रयासरत रहने के कारण ही मिला है। अतः अब जबलपुर आयुक्तालय के सभी कार्मिकों को अपने सम्मिलित प्रयास और टीमवर्क से अर्जित इस स्थान को न केवल आगे भी बनाएं रखना है कि बल्कि इसे उन्नत भी करना है।

हिंदी है भारत की आशा, हिंदी है भारत की भाषा

जय हिंद, जय राजभाषा

❋ ❋ ❋ ❋

एक जिद

देखे है मैंने जिन्दगी जीने के तरीके
कोई नहीं होता अपना सिवा इक ज़िद के।

ज़िद है तो जीने के लिए नये-नये तरीके,
जिद है बना के देख हालातों से निकल कर देख
मिलती है कैसे मंजिले।

जिद्दी हो और जिद को पूरा कर,
तू आया है दुनिया को जीतने
हासिल भी होगा मुकाम, पूरे होंगे तेरे सारे सपने।

हाँ मैं जिद्दी हूँ मुझे गुरूर है मेरी जिद पे,
मेरे जीने के तरीकों को बदला है मेरी जिद ने।

प्रिया पांडे
निरीक्षक

❋ ❋ ❋ ❋

जीएसटी - सफलता के 6 वर्ष

विवेक वर्मा
सहायक आयुक्त

''रुक जाना नहीं तू कहीं हार के, कांटों में चल के मिलेगे साए बहार के''

मजरुह सुल्तानपुरी के इस अमर गीत को चरितार्थ करती गाथा है हमारे इस महान देश में क्रांतिकारी जीएसटी कर प्रणाली के प्रादुर्भाव से अब तक की, सर्वाविदित है कि जीएसटी की परिकल्पना से इसे लागू किये जाने में ही 17 वर्ष का समय लग गया था, सर्वप्रथम वर्ष 2000 में तत्कालीन प्रधानमंत्री महोदय द्वारा एक समिति का गठन कर जीएसटी की आवधारणा को प्रस्तुत किया गया था जिसे संसद 01 जुलाई 2017 को मध्य रात्री में आहवात किए गए विशेष अधिवेशन में मूर्त रूप प्रदान किया गया।

इस कर प्रणाली को लागू किये जाने का फैसला जितना एतिहासिक था उतना ही साहसिक भी। जहाँ एक और करदाताओं हेतु कम्प्यूटर आधारित पूर्णतः ऑनलाइन कर प्रणाली हेतु बुनियादी अधोसंरचना उपलब्ध कराने की चुनौती थी वहीं संबंधित कानूनी प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित करने दक्ष एवं समर्पित कार्यपालन अधिकारियों की आवश्यकता थी।

अंततः जीएसटी कर प्रणाली को अमली स्वरुप में लाने का महती कार्य केंद्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क बोर्ड के मजबूत कंधों पर दिया गया जिसे राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के कर विभागों से साथ मिलकर इसे पूर्ण करना था। केंद्रीय उत्पाद शुल्क विभाग को महान लेखक प्रेमचंद ने अपनी कालजयी रचना ''नमक का दरोगा'' से विशिष्ट पहचान दी थी जिसमें दरोगा और कोई नहीं बल्कि केंद्रीय उत्पाद शुल्क निरीक्षक (अब केंद्रीय जीएसटी) का ऐतिहासिक स्वरुप है।

जिस तरह शैशव काल में बच्चा धीरे-धीरे खड़ा होना सीखता है फिर संभल कर चलना शुरु कर समय के साथ मजबूती से कदम बढ़ाता जाता है उसी तरह 01 जुलाई 2017 को अपने जन्म के बाद से अपने छः वर्ष के सफ़र में प्रारंभिक अड़चनों को पार पाकर अब जीएसटी अपने लक्ष्यों को भेदता बढ़ता चला जा रहा है। भारत सरकार द्वारा जीएसटी को लागू करने का फैसला इस विचार से लिया गया था कि इसमें न सिर्फ राजस्व आय में वृद्धि होगी बल्कि इसमें अंतर्निहित विशिष्ट प्रावधानों का लाभ न सिर्फ करदाताओं (व्यापार, वाणिज्य, उद्योग) को एक सरल एवं पारदर्शी कर व्यवस्था के रूप में मिलेगा वरन इससे उपभोक्ता एवं देश के आम नागरिक भी लाभान्वित होंगे, सैद्धांतिक रूप से यह प्रयास देश की अर्थव्यवस्था में व्यापक सुधार लाने की दिशा में एक कदम था।

आज जीएसटी लागू होने के छः वर्ष बाद जीएसटी का लाभ सभी को मिल रहा है। करदाता अनुपालन की सरलता से प्रसन्न है। छोटे व्यापारियों के लिए त्रैमासिक विवरणी सुविधा है वहीं 40 लाख तक विक्रय की सीमा वाले व्यापारियों को जीएसटी से पूर्ण छूट का विकल्प है। बड़े व्यापारी ई-इनवॉइस के माध्यम से स्वनिर्मित विवरणी का फायदा पा रहे हैं तो साथ में माल प्रदाता ईवे बिल के माध्यम से माल के बाधा रहित अंतर्राज्यीय परिवहन से माल की परिचालन लागन एवं समय की बचत का लाभ पा रहे हैं। संपर्क रहित पंजीकरण, कर स्व-निर्धारण एवं विवरणी में स्व. त्रुटिसुधार जैसे अनेकानेक नव रचित प्रावधान करदाताओं को जीएसटी प्रणाली को अपनाने में मददगार साबित हो रहे हैं। निर्यातक सरल एवं तीव्र कर वापसी (रिफंड) पा रहे हैं जिसके लिए जीएसटी विवरणी को सीमा शुल्क विभाग की प्रणाली से जोड़ा गया है जिससे निर्यातित माल पर जमा किया गया एकीकृत जीएसटी निर्बाध रूप के निर्यातकों के खाते में वापस आ रहा है फलस्वरूप निर्यात एवं

निर्यातकों को भारी प्रोत्साहन मिल रहा है जो की देश की अर्थव्यवस्था की प्रगति का कारक है। इसके साथ-साथ कर चोरी में लिप्त इकाईयों के विरूद्ध विभाग द्वारा की जा रही है लगातार कठोर कार्यवाही भी ईमानदार अनुपालन को प्रोत्साहन दे रही है।

जीएसटी लागू होने से माल की कीमत पर करो का कैस्केडिंग इफेक्ट (कर पर कर प्रभाव) खत्म होने से उपभोक्ता करों में कमी से कीमतों के घटने का लाभ ले रहे हैं तो साथ ही कर की दरों में स्पष्टता एवं बिलों में उनके दर्शाने की अनिवार्यता के चलते पूर्व में होने वाली अनियमितताओं और ठगी से बच पा रहे हैं। आम नागरिकों एवं समाज के कमजोर वर्गों हेतु शासन द्वारा चलायी जा रही है विभिन्न योजनाओं हेतु बढ़ते आर्थिक आवंटन का आधार जीएसटी का बढ़ता राजस्व भी है।

बीते छः सालों में जीएसटी कलेक्शन की सकल कर राजस्व में सबसे बड़ी भागीदारी रही है। माह अगस्त 2017 में कुल जीएसटी राजस्व 94633 करोड़ था जो दिसंबर 2023 में बढ़कर 164882 करोड़ तक पहुंच गया। अप्रैल-दिसंबर 2023 की अवधि के दौरान सकल जीएसटी संग्रह में वर्ष दर वर्ष 12 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि देखी गई, जो 14.97 लाख करोड़ रूपए तक पहुंच गई। सकल जीएसटी संग्रह पिछले वर्ष की समान अवधि (अप्रैल-दिसंबर 2022) में 13.40 लाख करोड़ रूपये थी। इस वर्ष की पहले 9 महीने की अवधि में 1.66 लाख करोड़ रूपए का औसत मासिक सकल जीएसटी संग्रह वित्त वर्ष 23 की इसी अवधि में दर्ज 1.49 लाख करोड़ रूपए के औसत की तुलना में 12 प्रतिशत की वृद्धि दिखाता है। जीएसटी लागू होने के बाद टैक्स पेयर बेस में भारी बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। एक जुलाई 2017 को जहां 66 लाख टैक्स पेयर थे वहीं एक जुलाई 2023 के डेटा के मुताबिक ये 112 फीसदी की बढ़ोत्तरी के साथ 1.4 करोड़ हो गए।

आज जीएसटी कर प्रणाली की सफलता का गुणगान करते लोग थकते नहीं है। इसका श्रेय सर्वप्रथम तो उन नीति निर्माताओं को जाता है जिनकी दूरदर्शिता के चलते इसको अस्तित्व में लाना संभव हो सका। तत्पश्चात केंद्र, राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के कर्तव्यनिष्ठ अधिकारियों की मेहनत एवं लगन इस प्रणाली को जमीनी स्तर पर कार्यान्वित करने एवं सफल बनाने में अहम रही परंतु इस कर प्रणाली की इस शानदार सफलता का श्रेय इस देश के ईमानदार करदाताओं और नागरिकों को जाता है जिनके द्वारा इस नूतन कर प्रणाली को सहर्ष स्वीकार किया गया एवं इसके प्रावधानों का पालन किया गया। अब कोई संदेह नहीं कि भविष्य में भी जीएसटी सफलता के नए शिखर चूमेगा और देश के आर्थिक विकास में एक महती भूमिका निभाएगा।

मुंबई से जबलपुर

ब्रह्मानंद प्रसाद
संयुक्त आयुक्त

मेरे प्रमोशन के उपरांत जब मेरा ट्रांसफर मुंबई सीजीएसटी जोन से भोपाल सीजीएसटी जोन में हुआ और जैसे ही मुझे पता चला कि मेरे पोस्टिंग भोपाल जोन के जबलपुर आयुक्तालय में हुई है, तो मेरी याददाश्त बरबस ही मेरी गया से मुंबई की पहली रेल यात्रा की तरफ गई। मेरे कॉलेज के दिनों में जब भी मैं घर से मुंबई जाता था, तो रेल से हमेशा जबलपुर स्टेशन होते हुए ही जाता था।

ट्रेन की टाइमिंग ऐसी होती थी कि ट्रेन जबलपुर दिन में दोपहर से शाम के बीज गुजरती थी। क्योंकि भूगोल विषय हमेशा से मेरा प्रिय विषय रहा है, अतः इटारसी से प्रयागराज के बीच की ज्योग्राफिकल टेरिटरी, नेचुरल ब्यूटी, फॉरेस्ट इत्यादि को लेकर मेरे मन में हमेशा से आकर्षण का विषय होने के साथ-साथ प्रकृति के रहस्य मेरे मन मस्तिष्क को हमेशा उलझाए और व्यस्त किए हुए रहते थे।

महाकौशल क्षेत्र में स्थित जबलपुर का नर्मदा नदी के किनारे स्थित होने के कारण, इस जगह की प्राकृतिक सौंदर्य की कल्पना में खोए हुए कब यह क्षेत्र ट्रेन यात्रा से निकल जाता था, आभास भी नहीं होता था। कई बार ट्रेन यात्रा के दौरान मैंने जबलपुर क्रॉस किया लेकिन कभी उतरकर दर्शन नहीं कर पाया।

जब पोस्टिंग के लिए पहली बार यहां आया, तब मन में इच्छा हुई कि जिस जगह के बारे में मैंने इतनी कल्पना कर रखी है उसके जल्द से जल्द दर्शन कर लिया जाए। जबलपुर के प्राकृतिक सौंदर्य की मेरी मानसिक कल्पना ने मुझे निराश नहीं किया। मुंबई की भीड़-भाड़ भरी जिंदगी से बाहर आकर जब मैंने जबलपुर के ग्वारीघाट जाकर माँ नर्मदा के साक्षात दर्शन किया तो मन और नयन दोनों तृप्त हो गए।

मैंने माँ नर्मदा को प्रणाम किया और समझा कि जबलपुर इतना खुशहाल है तो उसका कारण है माँ नर्मदा का वरदान। उसके बाद एक-एक कर जबलपुर के आसपास के प्राकृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों का भ्रमण किया और यह प्रक्रिया अभी भी जारी है। सिर्फ मुझे ही नहीं यह जगह मेरे परिवार और खासकर मेरी बेटी को बहुत पसंद आई फिर चाहे नर्मदा नदी का मनमोहक घाट या भेड़ाघाट के मार्बल रॉक्स और धुआँधार जलप्रपात चाहे बैलेंसिक रॉक या मदनमहल हो बरगी डैम का इंजीनियरिंग चमत्कार, ऐसा प्रतीत होता है कि जबलपुर प्रकृति और मानवीय संतुलन को साथ लेकर चलने वाला भविष्य की ओर अग्रसर एक शहर है। मंदिर से लेकर जलप्रपात तक, वन से लेकर दुर्ग तक, हैंडीक्राफ्ट से लेकर हेरिटेज तक, इन सारी चीजों में एक सहज एवं सुखद शांति की अनुभूति होती है।

हमारे आयुक्तालय के सभी साथियों को जबलपुर की इन सुखद अनुभूतियों के साथ नववर्ष 2024 की हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत में प्रभावी जीएसटी कार्यान्वयन के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका

सुदर्शन मीणा
उपायुक्त

वस्तु और सेवाकर (जीएसटी) अप्रत्यक्ष कराधान प्रणाली को कारगर बनाने के लिए भारत में पेश किया गया एक परिवर्तनकारी कर सुधार है। जैसा कि भारत आर्थिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहा है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई) का लाभ उठाना जीएसटी कार्यान्वयन की दक्षता और प्रभावशीलता को बढ़ाने पर विचार किया जाना समय की माँग है। इस लेख के माध्यम से जीएसटी से जुड़ी चुनौतियों को संबोधित करने का प्रयास किया जाएगा साथ ही इसके अनुपालन में सुधार, धोखाधड़ी को कम करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में ए आई की क्षमता की पड़ताल की जाएगी ।एआई प्रौद्योगिकियों को अपनाकर, भारत एक अधिक मजबूत और उत्तरदायी जीएसटी ढांचा बना सकता है, अंततः देश के आर्थिक विकास में योगदान दे सकता है।

परिचय - भारत में वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) का कार्यान्वयन देश के आर्थिक इतिहास में एक महत्पूर्ण मील का पत्थर है। जीएसटी ने अप्रत्यक्ष करों के एक जटिल जाल को बदल दिया, कर संरचना को एकजुट किया और एक सरलीकृत, पारदर्शी और कुशल कर प्रणाली को बढ़ावा दिया। हालांकि, किसी भी बड़े सुधार की तरह, जीएसटी कार्यान्वयन चुनौतियों का सामना करता है जिन्हें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के एकीकरण के माध्यम से संबोधित किया जा सकता है। इस लेख का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि एआई इन चुनौतियों पर काबू पाने में कैसे सहायक हो सकता है, जिससे भारत में जीएसटी कार्यान्वयन अधिक प्रभावी और सहज हो सकता है।

जीएसटी कार्यान्वयन में चुनौतियां : - जीएसटी ने भारत में कराधान को सुव्यवस्थित किया है परंतु इसके क्रियान्वयन के साथ बहुत सी चुनौतियां जुड़ी हुई है । कुछ प्रमुख चुनौतियों निम्नलिखित है :

जटिल अनुपालन प्रक्रियाएं - जीएसटी ढांचे में जटिल अनुपालन प्रक्रियाएं शामिल है, जिसमें रिटर्न दाखिल करना, चालान करना और इनपुट और आउटपुट करो का मिलान करना शामिल है यह जटिलता व्यवसायों विशेष रूप से छोटे और मध्यम उद्यमों (एसएमई) के लिए भारी हो सकती है।

कर अपवंचन और धोखाधड़ी - कर अपवंचन और धोखाधड़ी कराधान प्रणाली में लगातार बने हुए है। जीएसटी प्रक्रियाओं की जटिलता धोखाधड़ी गतिविधियों के लिए अवसर प्रदान कर सकती है, जिसमें नकली चालान (Fake Invoice) और आय की कम रिपोर्टिंग शामिल है।

प्रौद्योगिकी अपनाना : जीएसटी का सफल कार्यान्वयन व्यवसायों और कर अधिकारियों द्वारा प्रौद्योगिकी को अपनाने पर बहुत अधिक निर्भर करता है। हालांकि, सभी व्यवसायों के पास डिजिटल उपकरणों को प्रभावी ढंग से अपनाने के लिए संसाधन या क्षमताएं नहीं है।

डेटा प्रबंधन और विश्लेषण : जीएसटी लेन देन के माध्यम से उत्पन्न डेटा की विशाल मात्रा कुशल प्रबंधन और विश्लेषण के लिए एक चुनौती है। नीति निर्माण और निर्णय लेने के लिए इस डेटा से मूल्यवान अंतर्दृष्टि का उपयोग करने में पारंपरिक तरीके कम पड़ सकते हैं।

जीएसटी कार्यान्वयन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका

स्वचालित अनुपालन प्रक्रियाएं - एआई जटिल अनुपालन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित और स्वचालित कर सकता है, जिससे व्यवसायों के लिए जीएसटी नियमों का पालन करना आसान हो जाता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम अनुपालन पेंटर्न की भविष्यवाणी करने और स्वचालित रिपोर्ट उत्पन्न करने के लिए ऐतिहासिक डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे व्यवसायों पर बोझ कम हो सकता है।

धोखाधड़ी का पता लगाना और रोकथाम :- एआई के महत्वपूर्ण लाभों में से एक बड़े डेटासेट में पैटर्न और विसंगतियों का पता लगाने की क्षमता है। एआई-संचालित सिस्टम अनियमितताओं और धोखाधड़ी के संभावित उदाहरणों की पहचान करने के लिए लेनदेन डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं। यह सक्रिय दृष्टिकोण कर प्रवर्तन की प्रभावशीलता की काफी बढ़ा सकता है।

करदाता सहायता के लिए चैटबॉट्स : - एआई-संचालित चैटबॉट को लागू करने से करदाताओं और कर अधिकारियों के बीच वास्तविक समय संचार की सुविधा मिल सकती है। ये चैटबॉट जीएसटी से संबंधित प्रश्नों पर तत्काल स्पष्टीकरण प्रदान कर सकते हैं, फाइलिंग प्रक्रिया के माध्यम से उपयोगकर्ताओं का मागदर्शन कर सकते हैं और जटिल नियमों को समझने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

राजस्व पूर्वानुमान के लिए पूर्वानुमानित विश्लेषिकी :- ए-आई संचालित पूर्वानुमान विश्लेषण ऐतिहासिक डेटा और आर्थिक संकेतकों के आधार पर राजस्व रुझानों का पूर्वानुमान लगाने में कर अधिकारियों की सहायता कर सकता है। सटीक राजस्व पूर्वानुमान बेहतर राजकोषीय योजना और संसाधन आवंटन को सक्षम बनाता है, समग्र आर्थिक स्थिरता में योगदान देता है।

बुद्धिमान डेटा प्रबंधन : - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जीएसटी लेनदेन द्वारा उत्पन्न डेटा की विशाल मात्रा के प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्नत डेटा एनालिटिक्स टूल कर अधिकारियों को मूल्यवान अंतदृष्टि निकालने रुझानों की पहचान करने और जीएसटी प्रणाली की दक्षता बढ़ाने के लिए सूचित नीतिगत निर्णय लेने में मदद कर सकते हैं।

सुव्यवस्थित लेखा परीक्षा प्रक्रियाएं :- एआई डेटा निष्कर्षण, सत्यापन और विश्लेषण को स्वचालित करके ऑडिट प्रक्रिया को सुव्यवस्थित कर सकता है। यह न केवल ऑडिट के लिए आवश्यक समय और संसाधनों को कम करता है बल्कि ऑडिट प्रक्रिया की सटीकता और संपूर्णता को भी बढ़ाता है, जिससे जीएसटी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित होता है।

एआई कार्यान्वयन -चुनौतियां और समाधान :

बुनियादी ढांचा और कनेक्टिविटी : - जीएसटी ढांचे में एआई को लागू करने में एक बड़ी बाधा व्यवसायों के कुछ वर्गों, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में डिजीटल बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी चुनौतियों का सामना करना है। इसके समाधान के लिए, सरकार को डिजिटल बुनियादी ढांचे में सुधार और व्यापक इंटरनेट कनेक्टीविटी सुनिश्चित करने में निवेश करना चाहिए।

कौशल विकास :- एआई के सफल एकीकरण के लिए एक कुशल कार्यबल की आवश्यकता होती है जो एआई सिस्टम को विकसित करने, कार्यान्वित करने और बनाए रखने में सक्षम हो। कर अधिकारियों और व्यवसायों के डिजिटल कौशल को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पहलों में निवेश करना इस चुनौती पर काबू पाने में महत्वपूर्ण होगा।

डेटा सुरक्षा और गोपनीयता :- संवेदनशीलता वित्तीय डेटा को संभालने के लिए साइबर खतरों और अनधिकृत पहुंच से बचाने के लिए मजबूत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है। व्यवसायों और करदाताओं के बीच विश्वास बनाने के लिए कड़े डेटा सुरक्षा और गोपनीयता प्रोटोकॉल को लागू करना आवश्यक है।

कार्यान्वयन की लगात : - एआई सिस्टम को लागू करने की प्रारंभिक लागत कुछ व्यवसायों, विशेष रूप से छोटे उद्यमों के लिए एक निवारक हो सकती है। सरकार जीएसटी अनुपालन के लिए एआई प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए व्यवसायों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहन, सब्सिडी या कर ब्रेक प्रदान करने पर विचार कर सकती है।

केस स्टडी और सफलता की कहानियाँ :- कई देशों ने अपने प्रणालियों में एआई का सफलतापूर्वक लाभ उठाया है, जो अनुपालन, राजस्व संग्रह और समग्र दक्षता पर इसके सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया और एस्टोनिया जैसे देशों के केस स्टडी जीएसटी कार्यान्वयन के लिए एआई को अपनाने में भारत के लिए मूल्यवान अंतदृष्टि के रूप में काम कर सकते हैं।

सिंगापुर की एआई-संचालित अनुपालन प्रणाली : - सिंगापुर ने एक एआई-संचालित अनुपालन प्रणाली लागू की है जो कर रिटर्न के सत्यापन को स्वचालित करती है और संभावित विसंगतियों की पहचान करती है। इससे करदाताओं पर बोझ काफी कम हुआ है और कर प्रशासन की दक्षता में सुधार हुआ है।

ऑस्ट्रेलिया का डेटा मिलान कार्यक्रम :- ऑस्ट्रेलिया के कर अधिकारी करदाताओं द्वारा रिपोर्ट की गई आय में विसंगतियों की पहचान करने के लिए डेटा मिलान के लिए एआई एल्गोरिदम का उपयोग करते हैं। इस सक्रिय दृष्टिकोण से अनुपालन में वृद्धि हुई है और कर चोरी में कमी आई है।

एस्टोनिया की ई-सरकार प्रणाली :- एस्टोनिया अपनी ई-सरकार प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है, जहां एआई कर प्रशासन सहित विभिन्न प्रशासनिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एआई के निर्बाध एकीकरण के परिणामस्वरूप एक अधिक कुशल और पारदर्शी कर प्रणाली विकसित हुई है।

नीति की सिफारिशें : - जीएसटी कार्यान्वयन में एआई की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए, नीति निर्माताओं को निम्नलिखित सिफारिशों पर विचार करना चाहिए

एआई बुनियादी ढांचे में रणनीतिक निवेश : - सरकार को एआई बुनियादी ढांचे में रणनीतिक निवेश को प्राथमिकता देनी चाहिए, डिजिटल उपकरणों और उच्चगति इंटरनेट की व्यापक उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। इससे जीएसटी ढांचे में एआई के निर्बाध एकीकरण का मार्ग प्रशस्त होगा।

टेक उद्योग के साथ सहयोग : - मौजूदा एआई समाधानों और विशेषज्ञता का लाभ उठाने के लिए प्रौद्योगिकी उद्योग के साथ सहयोग करना आवश्यक है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी जीएसटी अनुपालन की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप एआई प्रणालियों के विकास और कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान कर सकती है।

सतत कौशल विकास : - सफल एआई कार्यान्वयन के लिए कर अधिकारियों और व्यवसायों के बीच निरंतर कौशल विकास को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं और प्रमाणपत्र जीएसटी अनुपालन में शामिल कार्यबल की डिजिटल क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं।

एआई अपनाने के लिए प्रोत्साहन : - व्यवसायों, विशेष रूप से एसएमई को जीएसटी अनुपालन के लिए एआई को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए सरकार कर क्रेडिट, सब्सिडी या अनुदान जैसे प्रोत्साहन प्रदान कर सकती है। ये वित्तीय प्रोत्साहन एआई सिस्टम को लागू करने से जुड़ी प्रारंभिक लागतों की भरपाई करेंगे।

डेटा सुरक्षा और गोपनीयता विनियम :- करदाताओं के बीच विश्वास बनाने के लिए मजबूत डेटा सुरक्षा और गोपनीयता

नियमों की स्थापना सर्वोपरि है। एआई सिस्टम संवेदनशील वित्तीय डेटा को कैसे संभालते है और उनकी रक्षा करते हैं, इस पर स्पष्ट दिशानिर्देश अनुपालन को बढ़ाएंगे और डेटा सुरक्षा के बारे में चिंताओं को कम करेंगे।

जन जागरूकता अभियान :- जीएसटी अनुपालन में एआई के लाभों के बारे में जन जागरूकता अभियान शुरु करना गलत धारणाओं को दूर करने और स्वीकृति को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। एआई प्रक्रियाओं को सरल कैसे बना सकता है और दक्षता बढ़ा सकता है, इसके बारे में पारदर्शी संचार व्यवसायों और करदाताओं से समर्थन प्राप्त करेगा।

भविष्य का दृष्टिकोण :- जीएसटी कार्यान्वयन में एआई का एकीकरण भारत में अधिक कुशल, पारदर्शी और उत्तरदायी कर प्रणाली बनाने की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम का प्रतिनिधित्व करता है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ती जा रही है कराधान प्रक्रियाओं में क्रांति लाने के लिए एआई की क्षमता केवल बढ़ेगी। निरंतर नवाचार, रणनीतिक निवेश और सरकार और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग भारत में जीएसटी कार्यान्वयन के भविष्य को आकार देगा।

समाप्ति

वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) का प्रभावी कार्यान्वयन भारत की आर्थिक वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का लाभ उठाना जीएसटी से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करने, अनुपालन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और समग्र दक्षता बढ़ाने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करता है। भारत में आज के दिन कुल 1 करोड 41 लाख टैक्सपेयर है जो रिटर्न भरते है जबकि इनकी तुलना में टैक्स ऑफिसर बहुत कम है जो इन रिटर्न का अन्वेषण कर सके ऐसे में एआई प्रौद्योगिकियों का अपनाकर भारत एक अधिक मजबूत और उत्तरदायी जीएसटी ढांचा बना सकता है, जो अंततः देश की आर्थिक समृद्धि में योगदान देगा। नीति निर्माताओं, व्यवसायों और कर अधिकारियों को एआई की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए सहयोग करना चाहिए और आने वाले वर्षों में अधिक उन्नत और प्रभावी जीएसटी कार्यान्वयन का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

❋❋❋❋

नूतन वर्ष के उपलक्ष्य पर

सुनील कुमार
सहायक आयुक्त

दिल में इरादे मजबूत हो तो नया साल है,
कोई जीने का सबूत हो तो नया साल है।
ख्वाहिशें उड़ान ले रही है तो नया साल है,
कोशिशे आसमां छूती हो तो नया साल है।
राहों में सफ़र बना रहे तो भी नया साल है,
मंजिले भी हासिल जो हो तो नया साल है।
जिंदगी जो गीत गुनगाये तो नया साल है,
बिछुड़े हुए मीत मिलाए तो नया साल है।
साथ सबकी आवाज हो तो नया साल है,
दुनिया में नया आगाज़ हो तो नया साल है।
कभी उनसे मुलाकात हो तो नया साल है,
मुलाकात में नई बात हो तो नया साल है।

जीवन की सार्थकता

अजय कुमार शुक्ला
सहायक आयुक्त

जीवन की सार्थकता एक अहम तथ्य है। प्राय ऐसा देखा जाता है की कुछ व्यक्ति जीवन के प्रत्येक मोर्चे पर बहुत सफल है जबकि कुछ ऐसे भी अपवाद मिल जाते हैं जो अपनी असफलताओं के लिए कोई न कोई कारण ढूंढ ही लेते हैं और स्व मूल्यांकन जैसी जरूरी आवश्यकता की उपेक्षा कर बैठते हैं। मानव की असीमित सीमाएं होने के बावजूद वो स्वयं अपनी सोच से उसे संकीर्ण बना डालने की भूल कर बैठते हैं। वृहद दृष्टिकोण और सोच हमें न केवल समाज चिंतन के बाध्य करती है बल्कि हमारे हृदय को देशप्रेम के लिए भी उद्वेलित करती है। देश के प्रति दायित्वों की अनुभूति और उनके निर्वाह की तीव्र उत्कंठा सरकारी विभागों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को समाज में उच्च स्थापित करती है और यथा सम्मान का हकदार बनाती है।

कुछ बुद्धिजीवी ऐसे भी देखे जा सकते हैं, जो स्वयं को महान उद्देश्यों से जोड़ने में असफल हो गए और उनकी क्षमताएं कुंठित होती चली गईं, जबकि सरकारी पदों पर आसीन ऐसे अधिकारी/कर्मचारी जो वृहद सोच के साथ अपने आपको देश निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा समझकर देश प्रेम की भावना से अभिभूत होकर और समर्पण की भावना से काम करते हैं, उनकी प्रतिभाएं निरंतर निखरती जाती है। दूसरे शब्दों में, वंदन ऐसे सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को जो भारत माता के चरणों में अपनी सेवाएं अर्पित करते हैं और भारत को अधिक शक्तिशाली बनाने की भावना को पोषित करते हैं।

जीवन का एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि अगर हमारा वर्तमान हमें सुख और संतुष्टि की अनुभूति करा रहा है, तो इसका श्रेय हम किसे दें ? आम तौर पर देखा जाता है कि हम अपनी प्रसन्नता का कारण अपने स्वयं के अंदर ढूंढने लगते हैं, जो कि निश्चित रूप से एक बड़ी भूल है। दरअसल, सहयोगियों का, कार्यालयों के सकारात्मक वातावरण का, परिवार और समाज का योगदान प्रसन्नता का प्रमुख कारक होता है, किंतु स्वयं को श्रेष्ठ मानने की भूल जीवन के वास्तविक आनंद को तो कम करती ही है, हमारी समाज उपयोगिता को भी उचित आयाम दिलाने में बाधक सिद्ध होती है। गौर से देखने पर लगता है कि सारा जीवन ही कर्ज से लदा हुआ है, कभी शिक्षक जिसने नन्हें बच्चे से उदासी का कारण पूछा, कभी वो दोस्त जिसका मकसद हमें हंसाकर खुश होना हुआ करता, कभी ट्रेन में मिले वो अनजान सहयात्री जिन्हें आपको भविष्य के लिए प्रेरित करके आनंद प्राप्त हो रहा है, कभी नए शहर में मिलने वाला वो व्यक्ति जिसका चिंतन ये है कि आपको नए शहर में कोई कष्ट न हो, ऐसे सारे दोस्त जो सम्मान देकर सामान्य अनुभव करते हैं, और भी न जाने कितने तरह के कर्ज एक मानव अपने जीवनकाल में अनुभव करता है। श्रेष्ठ मानवों के हृदय का और विशेषकर भारतीय परंपराओं का ये अद्भुत सौंदर्य जन्म देता है कर्तव्यबोध को। बहुत गहन चिंतन के बाद ये निष्कर्ष भी निकल ही आता है कि सफलताएं जिन्हें आमतौर पर हम अपनी समझकर आत्मविश्वास से ओतप्रोत रहते हैं, वास्तविकता में उन सफलताओं का श्रेय भी गुरु, मित्र, अभिभावक और देश की व्यवस्थाओं को ही जाता है। आत्मविश्वास का होना तो बहुत आवश्यक एवं अधिक ऊर्जावान बनने की प्रक्रिया है किंतु आत्मविश्वास का आधार गलत नहीं हो इस तथ्य को भी समझने का प्रयास आवश्यक है। अगर आपको सफल और प्रतिभाशाली होने का आनंद प्राप्त हो रहा है तो यही समय है जब आपको देश के प्रति समर्पित होने के विचार से संकल्पित होना चाहिए।

जीवन के प्रत्येक मोर्चे पर सफल होने का प्रयास एक स्वाभाविक मानवीय प्रयास है, किंतु सफलताओं को परिभाषित करने में भी सजगता नितांत आवश्यक है। पद, पैसे या प्रतिष्ठा सफलताओं के अस्थाई मापदंड हो सकते हैं लेकिन सुख और संतुष्टि उत्कृष्ट मानवीय जीवन के लिए आवश्यक है।

सादर सप्रेम अभिवादन, असीम सफलता की कामना। संपूर्ण रूपेण सुखी भवः।

तबादला - मुंबई से जबलपुर में : एक संस्मरण

आसिफ जमाल
सहायक आयुक्त

सीमा शुल्क विभाग में नौकरी लगी तो बहुत खुशी हुई थी फिर जब नियुक्ति हुई मुंबई में तो खुशी का ढिकाना न रहा। मुंबई शहर के बारे में काफी कुछ पढ़ा था, काफी कुछ सुना था। चकाचौंध रोशनी से ओतप्रोत ये मुंबई शहर कभी सोता नहीं है। दिन रात भागता रहता है। कभी सड़कों पर गाड़ियों में। कभी पटरी पर लोकल ट्रेन में। और नहीं तो पूरी भीड़ दो पैरों पर।

मैं भी कहां अलग हुआ। मुंबई आते ही कुछ सालों में मुंबईकर हो गया। शहर की आबोहवा में जागता और सोता। ऑफिस के लिए रोज़ ऐसे ही भागता। कभी गिरते पड़ते तो कभी ट्रेफिक जाम में फंसते हुए।

फिर शादी के बंधन में बंधा, बच्चे हुए फिर पूरी तरह से रम गए दिन प्रतिदिन की जद्दोजहद में और ज़िदगीी उम्मीदों में। मैं भी भाग रहा था। मेरे साथ ही सब कुछ आस पास भाग रहा था। वक्त कैसे बीता पता ना चला। पंद्रह साल नौकरी के इस शहर में कैसे गुजर गए, पीछे लौट कर देखता हूं तो आंखें यकीन नहीं कर पाती है।

मगर सच है कि जब प्रोनत्ति के साथ मुंबई से तबादला हुआ तो अचानक जैसे मेरी गाड़ी रुक सी गई। मैं थम सा गया। बिहार से आकर मुंबई में बस जाना भी कुछ आसान नहीं था लेकिन मुंबई से बाहर जाना भी जैसे कठिन पड़ रहा था। सरकार के एक आदेश से मेरा स्थानांतरण भोपाल सी.जी.एस.टी. जोन हो गया। उसके बाद मैं जबलपुर आयुक्तालय का हिस्सा बन गया।

जबलपुर के इस छोटे शहर में मैं किसी को नहीं जानता था, न ही कोई मुझे जानता था। उम्र के किसी भी पड़ाव पर आपको शून्य से शुरू करना पड़ सकता है, इस फल सफे में अब मैं और मेरा परिवार जी रहे थे।

किराए का घर, बच्चों का स्कूल, सब्जी मंडी, राशन की दुकान, दूध, दही, अंडा ... फेहरिस्त लंबी होती जा रही थी। मुंबई में इन सबकी जिम्मेवारी मेरी पत्नी के जिम्मे थी पर यहाँ मुझे सब कुछ शुरू से शुरू करना पड़ा।

वक्त के साथ ही जाना है कि वक्त में बहुत कुछ छुपा है। हर मुश्किल का उपाय भी। धीरे-धीरे वक्त बिता तो सारी जरूरत की चीज़ों का इंतजाम हो गया। जबलपुर शहर जो अजनबी बनकर सामने खड़ा था, उससे दोस्ताना होने लगा। समझ में यह भी आया कि वक्त के साथ आप तो शहर को पसंद करने लगते हैं वक्त के साथ शहर भी आपसे याराना कर लेता है। बच्चों को स्कूल पसंद आने लगा और नए दोस्त अच्छे लगने लगे और मुझे ऑफिस, ऑफिस की व्यस्तता, नया दायित्व, नए सहकर्मी सब भाने लगे फिर से नए सिरे से नई भाग दौड़ शुरू हो गई नई चुनौतियों के साथ।

इस अनुभव से यह भी जाना है कि तबादला और प्रोनत्ति अकेले नहीं आती, साथ में ढेर सारी परेशानियां, बड़ी सी चुनौतियां मगर अंत दिल को सुकून पहुंचाने वाली कुछ अचरज में डाल देने वाली खुशियां भी लाती है।

शुरू में मुश्किलें तो हुई मगर अब मैं जबलपुर शहर को पसंद करने लगा हूं। यहां की चिलचिलाती धूप, कपकंपाने वाली सर्दी और रुक रुक तेज से बरस कर आसमान और धरती को गिला कर देने वाली बारिश भी।

शायद यह छोटा सा प्यारा शहर अब मुझे भी पसंद करने लगा है .....

जबलपुर

(भारत के मध्यप्रदेश राज्य के इस शहर में आपका स्वागत है ।)

एम.पी.दयाल
सहायक आयुक्त

जबलपुर भारत के मध्यप्रदेश राज्य का एक शहर है। यहाँ पर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय तथा राज्य न्यायिक अकादमी जहाँ मध्यप्रदेश राज्य के समस्त न्यायाधीशों की ट्रेनिंग होती है तथा राज्य विज्ञान संस्थान है। इसे मध्यप्रदेश की 'संस्कारधानी' तथा जबलपुर को मध्यप्रदेश की न्यायिक राजधानी भी कहा जाता है। थलसेना की छावनी के अलावा यहाँ भारतीय आयुध निर्माणियों के कारखाने तथा पश्चिम-मध्य रेलवे का मुख्यालय भी है।

किंवदंतियों के अनुसार इस शहर का नाम पहले जबालिपुरम् था, क्योंकि इसका संबंध महर्षि जबालि से जोड़ा जाता है। जिनके बारे में कहा जाता है कि वह यही निवास करते थे। 1781 के बाद से ही मराठों के मुख्यालय के रूप में चुने जाने पर पर इस नगर की सत्ता बढ़ी, बाद में यह सागर नर्मदा क्षेत्रों के ब्रिटिश कमीशन का मुख्यालय का बन गया। यहाँ 1864 में नगरपालिका का गठन हुआ था।

एक पहाड़ी पर मदन महल का किला स्थित है, जो लगभग 1100 ई. में राजा मदन सिंह द्वारा बनवाया गया एक पुराना गोंड किला है जिसका निर्माण सामरिक उद्देश्य से किया गया था। इसमें आवासीय व्यवस्था नहीं थी। इसके ठीक पश्चिम में गढ़ है, जो 14 वीं शताब्दी के चार स्वतंत्र गोंड राज्यों का प्रमुख नगर था। भेड़ाघाट, ग्वारीघाट और जबलपुर से प्राप्त जीवाश्मों से संकेत मिलता है कि यह प्रागैतिहासिक काल के पुरापाषाण युग के मनुष्य का निवास स्थान था। मदन महल, नगर में स्थित कई ताल और गोंड राजाओं द्वारा बनवाए गए कई मंदिर इस स्थान की प्राचीन महिमा की जानकारी देते हैं। इस क्षेत्र में कई बौद्ध, हिन्दू और जैन भग्नावशेष भी है। कहते है कि जबलपुर में स्थित 52 प्राचीन तलैयों ने यहाँ की पहचान को बढ़ाया, इनमें से अब कुछ ही तालाब शेष बचे है परंतु उन प्राचीन ताल तलैयों के नाम अभी तक प्रचलित है। जिनमें से कुछ निम्न है, अधारताल, रानीताल, चेरीताल, हनुमानताल, फूटाताल, मढ़ाताल, हाथीताल, सूपाताल, देवताल, कोलाताल, बघाताल, ठाकुरताल, गुलौआताल, माढ़ोताल, मठाताल, सुआताल, खम्बेताल, गोकलपुर तालाब, शाहीतालाब, महानाद्दा तालाब, उखरी तालाब, कदम तलैया, भानतलैया, श्रीनाथ की तलैया, तिलकभूमि तलैया, बैनीसिंह की तलैया, तीनतलैया, लोको तलैया, ककरैया तलैया, जूड़ी तलैया, गंगासागर, संग्रामसागर। जबलपुर भेड़ाघाट मार्ग पर स्थित त्रिपुर सुंदरी मंदिर, हथियागढ़ संस्कृत के कवि राजशेखर से संबंधित है।

इसके आसपास के क्षेत्रों में नर्मदा नदी घाटी के पश्चिमी छोर पर स्थित एक अत्यधिक उपजाऊ, गेहूं की खेती वाला इलाका हवेली शामिल है। चावल, ज्वार चना और तिलहन आसपास के क्षेत्रों की अन्य महत्वपूर्ण फसलें हैं। यहाँ लौह अयस्क, चूना-पत्थर बॉक्साइट, चिकनी मिट्टी, अग्निसह मिट्टी, शैलखड़ी, फेल्सपार, मैंगनीज और गेरू का व्यापक पैमाने पर खनन होता है।

मध्यप्रदेश के प्रमुख पर्यटक जगहों में से एक जबलपुर अपने खूबसूरत नजारों, प्राचीन-इतिहास और प्राकृतिक खूबसूरती के लिए मशहूर है। यहां की नदियां, ऐतिहासिक जगह और प्राकृतिक झरने प्रकृति प्रेमियों को बेहद आकर्षित करते हैं। अगर आप ऐसी जगहों की तलाश में हैं, जहां आप मौज मस्ती के साथ बेहतरीन समय बिता सके, तो मध्य प्रदेश की इन जगहों पर जरूर जाएं।

धुआंधार जलप्रपात मुख्य शहर से 30 किमी की दूरी पर स्थित है, जिसे स्मोक कैस्केड के रूप में भी जाना जाता है। 98 फीट की ऊंचाई से गिरने वाली नर्मदा नदी के मनोरम दृश्यों के कारण इस स्थान को अपनी एक अलग पहचान मिली है। आप यहां इस खूबसूरत वॉटरफॉल का आनंद उठाने के साथ-साथ यहा बोटिंग और केवल कार जैसी एडवेंचर एक्टिविटीज कर सकते हैं। साथ ही इसके किनारे अपने परिवार वालों के साथ पिकनिक मनाने का भी लुत्फ उठा सकते हैं। यहां आप सुबह 6 बजे से रात 8 बजे के बीच जा सकते हैं।

नर्मदा नदी के तट पर जबलपुर के मुख्य शहर से 25 किमी दूर स्थित, भेड़ाघाट में संगमरमर की चट्टाने सौ फीट ऊंची है और 25 किलोमीटर में फैली हुई है। इन मार्बल के पत्थरों और नर्मदा नदी पर पड़ती सूर्य की किरणें बेहद ही खूबसूरत लगती है। यहां का शांत और मंत्रमुग्ध कर देने वाला वातावरण पर्यटकों को बेहद आकर्षित करता है। पंचवटी घाट पर जेटी से मोटरबोट (50 रूपये प्रति व्यक्ति) और नर्मदा नदी के किनारे 50 मिनट की सवारी करके इस क्षेत्र तक पहुंचा जा सकता है। बोटिंग के अलावा आप इस खूबसूरती का मजा केवल कार के जरिए भी ले सकते हैं। जबलपुर से टैक्सी किराए पर लेकर सड़क मार्ग से भेड़ाघाट पहुंच सकते हैं और यहां पहुंचने में सिर्फ 30-40 मिनट का समय लगता है।

प्राकृतिक परिदृश्य और धार्मिक मंदिरों के अलावा, जबलपुर कई ऐतिहासिक स्मारकों का घर भी है और यदि आप इतिहास के शौकीन हैं, तो निश्चित रूप से आपके पास जबलपुर में करने के लिए बहुत सारी चीजें है। एक चट्टानी पहाड़ी के ऊपर स्थित, मदन महल किला गोंड शासकों के लिए एक वसीयतनामा के रूप में खड़ा है, जिन्होंने कभी शहर पर शासन किया था। 116 ईस्वी में राजा मदन शाह निर्मित, यह किला मूल रूप से एक सैन्य चौकी और एक पहरेदारी के रूप में कार्य करता था। इस राजसी किले में युद्ध कक्ष, गुप्त मार्ग, अस्तबल और एक छोटा जलाशय है जो इस जगह की स्थापत्य सुंदरता का एक जीवंत उदाहरण स्थापित करता है।

जबलपुर में देखने के लिए यहां का अद्भुत वैलेसिंग रॉक है। ऊपरी चट्टान निचली चट्टान पर इस तरह संतुलित है कि स्थानीय लोगों का कहना है कि भी कोई भी प्राकृतिक आपदा आ जाए इन पत्थरों का संतुलन कभी नहीं बिगड़ता। यह रॉक 6.5 रिक्टर पैमाने के भूकंप में भी अपना संतुलन बनाए रखने में कामयाब रहे हैं। जबलपुर से 6 कि.मी. की दूरी पर स्थित यह शहर का एक अनूठा नजारा है जो स्थानीय निवासियों के साथ-साथ पर्यटकों को भी समान संख्या में आकर्षित करता है।

कलचुरियों द्वारा 10 वीं शताब्दी में निर्मित चौसठ योगिनी मंदिर देश के सबसे पुराने विरासत स्थलों में से एक है। जैसा कि नाम से पता चलता है ('चौसठ' का अर्थ 64 है), मंदिर में 64 थाइन है जो इसके गोलाकार परिसर की दीवारों के साथ बने हैं, प्रत्येक में एक योगिनी की नक्काशीदार आकृति है, और केंद्र में एक मुख्य मंदिर है जो भगवान शिव और देवी पार्वती को समर्पित है। हालांकि अब ये मंदिर खंडहर में बदल गया है, जिसे 150 सीढ़ियों का सफर तय करने के बाद देखा जा सकता है। जबलपुर आ रहे हैं, तो इस मंदिर को भी अपनी ट्रैवलिंग लिस्ट में जरूर शामिल करें।

संस्मरण : मैं हूं नशे का सिपाही !

सुनील कुमार
सहायक आयुक्त

आजादी का अमृत काल में बहुत सारे कार्यक्रम आयोजित किए गए। आदेश था कि इसकी अंतिम कड़ी में 9 अगस्त को स्कूल - कॉलेज के बच्चों को CBIC के स्थानीय कार्यालय में लेकर आना है। नशीली दवाओं के खतरे और इसे रोकने के लिए बने कानून के बारे में उन्हें जानकारी देनी है। साथ में इनसे संबंधित विषयों पर प्रतियोगिता आयोजित करनी है। दिशा - निर्देश का पालन हुआ। जबलपुर के शिशु विद्या पीठ के बारह बच्चे और तीन शिक्षक आए। नौ से बारह वर्ग के बच्चों में दस छात्राएं थी और दो छात्र। अनुपात असंतुलित था और संदेश स्पष्ट था कि लड़कियां अब हर जगह न सिर्फ दस्तक दे रही है बल्कि नई ऊंचाईयां छू रही है। भीषण प्रतियोगिता हुई। प्रथम, द्वितीय और तृतीय तीनों स्थानों पर नारी शक्ति विराजमान हो गई थी। संयुक्त आयुक्त श्री ब्रह्मानंद प्रसाद जी ने विजेता को पुरस्कार दिया और अपने संबोधन से कार्यक्रम का समापन किया।

कार्यक्रम का संचालन अधीक्षक भाटिया जी ने किया। अधीक्षक राजपूत जी आमतौर पर प्रेरणा भरी बातें कही। जब मेरी बारी आई तो मैं सोचने लगा कि इन बच्चों तक दुनिया के इतने संवेदनशील और खतरनाक पहलू पर संदेश कैसे पहुंचाऊ। जिन बच्चों से जीवन की आशाओं और नई बुलंदियों के बारे में बाते की जानी चाहिए। आज हम उन्हें समझा रहे हैं कि नशीली दवा क्या है, उनके कुप्रभाव से कैसे बचा सकता है। हलांकि जब समस्या सिर पर खड़ी हो तो एक सामूहिक प्रयास करना ही होगा और उन सबको शामिल होना होगा जो इससे प्रभावित हो सकते हैं फिर चाहे बच्चे हो या बड़े। समाज के दरिदों ने कहा सोचा कि उनके शिकार मासूम बच्चे हैं तो यह रहा है कि 'पब' और 'क्लब' से निकल कर नशीली दवाओं के धंधे को धन के लोभी कुछ लोगों ने इसे कॉलेज और स्कूल के दरवाजे तक ले आया है। हर संभव प्रयास हो रहा है कि कैसे उनके जाल में अधिक से अधिक युवक-युवतियां फंसती चली जाए और उनके धुओं का साम्राज्य फैलता जाए।

मेरा मन क्षोभ में था लेकिन संदेश बच्चों को देना ही था। याद आया कि जब मैं (NACIN National Academy of Cutoms. Indirect Texes and Narcotics) में था तब वहां नशीली दवाओं के कुप्रभाव पर एक नाटक का मंचन किया गया था। सांस्कृतिक विभाग मेरे पास था, इसलिए इस नाटक का हिस्सा मुझे भी हो जाना स्वाभाविक था। नई नियुक्ति के बाद वहां आवश्यक प्रशिक्षण के लिए आने वाले निरीक्षक और निवारक अधिकारी ने इसमें भाग लिया था। नाटक की कहानी कुछ इस तरह थी ....

नाटक के पटकथा में दो कहानियां चलती है। एक माँ और बेटा की, दूसरी पिता और बेटी की। बेटी पढ़ लिखकर लायक बन जाती है। जीएसटी की निरीक्षक बन जाती है। परिवार और देश का फिक्र करती है जिम्मेदार नागरिक बनकर। बेटा नशीली दवाओं के चक्रव्यूह में फंसकर नालायक हो जाता है। अकेली बीमार माँ की भी फिक्र नहीं करता इस तरह देश और समाज पर बोझ बन जाता है। यहां तक कि बीमार माँ दवा के लिए तड़प रही होती है और बेटा नशीली दुनिया में ऐश कर रहा होता है। परिणाम होता है कि बीमार माँ मर जाती है।

बेटा माँ का मृतक शरीर देख कर बेचैन हो उठता है। आखिर उसने भी तो ऐसा अंत नहीं सोचा था। खूब रोता है, बिलखता है किंतु वक्त ने अपना फैसला सुना दिया था तभी उसकी आत्मा जागती है और वह कह उठता है कौन रोकेगा इस खौफ़नाक मंज़र को ... फिर स्वयं ही कह उठता है कि मैं ही रोकूंगा इसे अब। किसी और को उसकी माँ नहीं खोने दूंगा अब... तभी मेरी कलम से निकली एक कविता पढ़कर अपना संकल्प वह सबको सुनाता है और अपने किरदार को नया आयाम देता

है ... जिंदगी के मायने खोज लेता है।

इस अवसर पर उस नाटक का वीडियों मंगवाया और बच्चों को दिखाया वीडियों की समाप्ति पर मुझे लगा कि बच्चों तक सही रूप में नशीली दवाओं पर संदेश पहुंच रहा था फिर मैंने भी उसी पुराने अंदाज़ में वो कविता पढ़ डाली जिससे नाटक का समापन किया गया था ...

देख! इस नशे में मैंने क्या-क्या ज़हर बोया
देख! मेरे माथे पे जलजले का कहर ढोया
दोस्त यार छोड़ गए, दुनिया सारी छूट गई
देख! नशे में माँ की ममता का लहर खोया।

सोचा! इस किस्से का खूबसूरत अंजाम होगा
हूर होगी, परी होगी, चकाचौंध सरेआम होगा
हासिल है अब जबकि इक घुटन भरी ज़िंदगी
और कितना यहां इस नशे का ग़ुलाम होगा

कहना चाहता हूं मेरी व्यथा ए दोस्त ! ए राही !
नशे में बस थे साथ मगर अब कौन है हमराही
बता! कौन चलेगा मेरे चेहरे का आईना लेकर
सर पे कफ़न बांध लिया मैं हूं नशे का सिपाही!
मैं हूं नशे का सिपाही ! मैं हूं नशे का सिपाही !
मैं हूं नशे का सिपाही ! ....

दिव्य वाणी - अवतार वाणी (संकलन)

व्ही.बी.एस.राजपूत
अधीक्षक

1. अशांत मन का मूल कारण

अशांत मन का मूल कारण क्या है ? हमें अपना हर दिन शांति से जीने के लिए क्या करना चाहिए ? ज्ञानी जन हमें प्रेम से समझाते हैं कि - जो कुछ भी तुम्हारे पास है, उसमें संतुष्ट रहना, जो नहीं है उसकी चिंता न करना, जहाँ तक हो सके इच्छाओं, आवेगों और द्वेषों को कम करने और दूर करने का प्रयास करना, सत्य, धर्म (सदाचरण), प्रेम और धैर्य को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। उनको उपजाओं और साथ ही व्यवस्थित रूप से उनका अभ्यास करो। यही मानवता का वास्तविक कर्तव्य है, मानव जन्म का वास्तविक उद्देश्य है। यदि उपर्युक्त चार गुणों का विकास और अभ्यास किया जाए तो लोगों के बीच कोई ईर्ष्या नहीं होगी, स्वार्थ में जीना बंद हो जाएगा, दूसरों के हितों का सम्मान होगा और विश्व शांति स्थापित हो सकती है। इसके बजाय, यदि तुम्हारे स्वयं के जीवन में शांति नहीं है, तो तुम विश्व शांति कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं ? विश्व शांति के प्रति उत्साही लोगों को पहले स्वयं शांति का अनुभव करना और उसका आनंद लेना सीखना चाहिए; उसके बाद ही, वे उस शांति को बाहर की दुनिया में फैला सकते हैं और इसे बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

2. सफलता की कुंजी

सफलता की कुंजी क्या है, चाहे सांसारिक सफलता हो या आध्यात्मिक ? ज्ञानी जन हमें उन छः गुणों की प्रेमपूर्वक याद दिलाते हैं जिन्हें हमें विकसित करना चाहिए। जहाँ उत्साह, दृढ़ संकल्प, साहस, बुद्धि, योग्यता और वीरता के छः गुण विद्यमान हैं, वहाँ दिव्य सहायता भी प्रकट होती है। प्रेमस्वरूपों ! किसी भी क्षेत्र में, किसी भी समय, किसी भी व्यक्ति के लिए जो इन सभी छः अनमोल गुणों से संपन्न होता है, सफलता निश्चित है। वे गुण मनुष्य की सर्वांगीण समृद्धि में योगदान देते हैं। इन छः गुणों के माध्यम से सारी सफलता मिलती है। हालांकि, इन गुणों को समय-समय पर विभिन्न कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जिस प्रकार एक विद्यार्थी को विभिन्न परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है, उसी प्रकार उसके इन गुणों की भी परीक्षा होती है। ऐसी परीक्षाओं को व्यक्ति की उच्च उपलब्धियों के मार्ग पर पहला कदम माना जाना चाहिए। ये परीक्षाएं हानि, कठिनाई, पीड़ा, कष्ट और दुर्भाग्य के रूप में सामने आती है। इन परेशानियों को साहस और आत्मविश्वास से पार करके आगे बढ़ना होगा। विशेषकर विद्यार्थियों को अपने अंदर आत्मविश्वास विकसित करना होगा। आत्मविश्वास के बिना ये छः गुण प्राप्त नहीं किये जा सकते। वास्तव में, आत्मविश्वास हर व्यक्ति की प्राणवायु होनी चाहिए।

3. विश्व शांति में योगदान

हम स्वयं खुश रहकर, शांति से रहकर, विश्व शांति में भी योगदान देने के लिए क्या कर सकते हैं ? ज्ञानी जन इस बारे में प्रेमपूर्वक हमारा मार्गदर्शन करते हैं। यदि कोई व्यक्ति समाज में जीवन की जिम्मेदारियों से ही भाग जाता है, तो शांति का आनंद नहीं लिया जा सकता है। शांति कभी नहीं आएगी लेकिन यदि इच्छाओं पर नियंत्रण पा कर उन्हें समाप्त कर दिया जाए, तो भागने की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। जो कुछ पास है, उसी में संतुष्ट रहकर, जो पास नहीं है, उसके अभाव में चिंतित न होकर और जहां तक संभव हो, इच्छाओं, जुनून और नफरत को कम करने और खत्म करने का प्रयास कर सत्य, धर्माचरण, प्रेम और धैर्य विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए। उन्हें विकसित करो और साथ ही उन्हें व्यवस्थित रूप से जीवन में उतारो। मानवता का वास्तविक कर्तव्य है, मानव जन्म का वास्तविक उद्देश्य है। यदि उपर्युक्त चार गुणों को हर कोई स्वयं में विकसित करे और उन्हें जीवन में भी उतारे, तो लोगों के बीच कोई ईर्ष्या नहीं होगी, स्वार्थ के लिए हड़पना बंद हो जाएगा, दूसरों के हित का सम्मान किया जाएगा और विश्व शांति में स्थिरता आ जाएगी।

कुत्ते का पिल्ला

सतीश कुमार रैकवार
अधीक्षक

हे मानव तू सर्वश्रेष्ठ है। तूने समस्त जीवों पर विजय पाई है। तेरा जीवन धन्य है। अपने समक्ष ईश्वर को भी तुच्छ समझने वाले मानव तू सचमुच महान है।

लंबा चौड़ा तारकोल का पक्का सड़क सीमेंट की छोटी पतली दीवार से दो भागों में विभाजित दिखाई दे रहा था। सड़क के एक ओर लंबा चौड़ा मैदान फैला था, सड़क के दूसरी ओर सड़क से लग कर बहता हुआ गंदे पानी का एक बड़ा सा नाला दिखाई दे रहा था। नाले के बाद गंदी झोपड़ियों का सिलसिला था और उसके बाद शुरू होता था। बड़ी-बड़ी अट्टलिकाओं का सिलसिला भव्य इमारतों के सामने बना यह गंदी झोपड़ियों का झुण्ड इन इमारतों में रहने वाले लोग बहुत पहले ही जलवा देते यदि उनके अधिकांश नौकर और मेहरियाँ इन झोपड़ों में न रहते होते।

आज की सुबह इन इमारतों और गंदी झोपड़ियों में रहने वालों के लिए चिड़ियों का चहचहाअट और सूरज की सुनहली किरणों से नहीं हुई थी बल्कि इनकी आज की सुबह एक नवजात शिशु के रोने की करूण आवाज से हुई थी।

समाज के अमिट कलंक से बचने के लिए न जाने समाज का कौन सभ्य कहा जाने वाला असभ्य मानव अपने कुकृत्य की जीते जागते परिणाम को सड़क पर छोड़ गया था। सड़क के किनारे सफेद कपड़े में लिपटा वह नवजात शिशु अपने नन्हें-नन्हें हाथ पैरों का हिलाते हुए जोर-जोर से रो रहा था। उसे घेर कर खड़ा जनसमुदाय तरह-तरह की बातें कर रहा था कोई कह रहा था अस्पताल वालों को फोन करो कोई पर बच्चे की मदद करने के लिए कोई आगे नहीं बढ़ रहा था।

आज न जाने क्यों दिदिया इतनी देर से सोकर उठी थी शायद कल रात को ज्यादा देर तक मंडी में गेहूं साफ करती रही इसलिए अपनी झोपड़ी से सड़क पर लगी भीड़ को देख अस्त व्यस्त दिदिया भी सड़क की तरफ लपक पड़ी।

कोमल असहाय शिशु अभी भी भूख की पीड़ा और शीतल हवा के झोकों को सहन न कर पाने के कारण से रो रहा था।

दिदिया ने शिशु को देखा क्षण भर उसकी हृदय भेदी करूण रूबाई सुनती रही अचानक उसने आगे बढ़कर उस शिशु का उठा अपने सीने से लगा लिया। भीड़ में से एक भद्र पुरूष कह रहे थे न जाने कैसी पागल है। किसी के लावारिस शिशु को अपने गले लगा रही है।

''सच दिदिया तू पागल ही तो है। इतनी पागल जिसे मानव के एक असहाय निर्बल शिशु से आत्मीयता तो है।''

पुलिस आयी अस्पताल वाले भी आये खोजबीन हुई पर पता न चल सका कहाँ से आया यह नवजात शिशु! शायद पता करने की कोशिश ही नहीं की गयी।

थानेदार ने फाइल बंद करते हुए सिपाही को आदेश दिया ''जाओ अस्पताल के अनाथालय में इसे भर्ती करा दो।''

''अनाथालय!'' इस शब्द को सुनकर दिदिया का हृदय धक से रह गया। अनाथ का मतलब दिदिया खूब जानती है। बचपन में माँ-बाप मर गये थे दिदिया के बाल-विवाह हुआ था उसका जब से हैजे की चपेट में आकर दिदिया का पति मरा तब से अनाथ ही तो है दिदिया। नाले के सबसे नजदीक वाली झोंपड़ी दिदिया की है। मंडी में गेंहू साफ करने वाली दिदिया दिल की बहुत साफ है। जब से दिदिया ने उस शिशु को अपने सीने से लगाया है न जाने कैसी कसक उसके सीने से बार बार उठ रही है।

दिदिया ने दौड़कर थानेदार के पैर पकड़ लिए चिरौली करने लगी - साब इसे मेरे ही पास रहने दो, अपनी जान से ज्यादा प्यार करूंगी इसे। जरा सोचिए साहब कैसे जिएगा यह छोटा सा बच्चा अनाथालय में। दिदिया रो पड़ी। अब लोगों ने

आत्मीयता दिखाई ठीक ही तो कहती है दिदिया। कहाँ रहेगा ये बिन माँ का बच्चा दिदिया के ही पास रहने दो।

पुलिस चली गई अस्पताल वाले चले गये भीड़ भी खत्म हो गई। रह गयी दिदिया और नवजात शिशु की किलकारियाँ।

सच दिदिया कितना अच्छा लगता है तुम्हारा बेटा सालभर के मनु के रंगरूप और नटखट को देख अक्सर लोग कह देते। दिदिया भी खुशी-खुशी अपने हाथों को फैला कर कहती - ''इतना सा तो था, जब सड़क पर पड़ा था। कितनी मेहनत से शीशी का दूध पिला-पिला कर बड़ा किया है मैंने अपने लाल को'' कहते-कहते दिदिया का गला भर आता और वह मनु को अपने सीने से लगा लेती।

आज शाम से मनु जोर-जोर से रो रहा था। पड़ोस के झोपड़ वाले ने एक सूखी रोटी मनु के हाथ में पकड़ा दी पर तब भी वह चुप नहीं हुआ तो क्रोध में एक चांटा भी जड़ दिया। मनु मार खा कर और रोने लगा। न जाने आज इतनी रात हो गई दिदिया क्यों नहीं आई। दो वर्ष का मनु पूस की कड़कड़ाती ठंड में सिर्फ एक फटी सी सूती बनियान पहले ठंड से कांपता अभी भी रो रहा था। एक झोपड़ वाला अभी दौड़ा-दौड़ा आया था, सबको इकट्ठा करके वह बता रहा था ''शहर में कुछ गड़बड़ हो गई है। लगता है दंगा हो गया है सब चुपचाप सो जाओ'' इस सूचना के बाद मनु को चुप कराने की कोशिश में न जाने कितने लोगों ने मनु पर अपने हाथ जमाए। अंत में लोगों ने मनु को बस्ती से बाहर भगा दिया।

सड़क से कुछ दूर तेज रोशनी के प्रकाश में चमकती भव्य अट्टालिक के अंदर से भी एक बच्चे के रोने की आवाज आ रही थी। इस बच्चे के रोने का मुख्य कारण था अल्शेसियन कुत्ते का एक छोटा सा पिल्ला जो आज शाम से न जाने कहाँ खो गया था। बच्चे को चुप कराने के लिए उस भयानक माहोल में कोठी का मालिक और कोठी के सभी नौकर उस कुत्ते के पिल्ले की तलाश में इधर-उधर घूमते नजर आ रहे थे।

सड़क के फुटपाथ पर खड़ा मनु लगातार रोए जा रहा था, कड़कड़ाती ठंड और भूख की पीड़ा को सहन न कर पाने के कारण मनु का रोना क्रमशः धीरे-धीरे शांत हो रहा था। थोड़ी देर में कड़कड़ाती ठंड मे ओस भरी हरी-हरी घास पर निढाल मनु सो गया। न जाने कहाँ से अल्शेसियन कुत्ते का वह छोटा पिल्ला मनु के पास आ गया। जहाँ मनु के रोने का स्वर शांत हो गया था वहीं ठंड बर्दाश्त न कर पाने के कारण पिल्ले के कूँ-कूँ की आवाज तेज होने लगी।

कुत्ते को ढूंढ़ता कोठी का मालिक और नौकरों का झुंड उसी ओर आ निकला। कोठी के मालिक ने कुत्ते को उठाया और चला गया। मनु के कंपकंपाते बदन को किसी ने नहीं देखा। थोड़ी देर में कोठी से आती बच्चे के रोने की आवाजें बंद हो गई। कुत्ते के कूँ-कूँ का स्वर भी बंद हो गया। इन सबके साथ-साथ मनु का कंपकंपाता बदन भी खामोश हो गया।

सूरज की किरणें रात की ठंड के कारण सुबह-सुबह हल्की-हल्की गर्मी बढ़ा रही थी। सड़क पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी। भीड़ के बीच में मनु का शांत शरीर पड़ा था जो रात की कड़कड़ाती ठंड न सह सकने के कारण ठंडा हो गया था। मनु पहले की तरह एक बार फिर सड़क पर पड़ा था लावरिस और खामोश। रात की ठंड से कुछ लोगों ने एक क्षुद्र कुत्ते के पिल्ले की जान तो बचा ली थी पर असहाय निर्बल मानव शिशु की ओर किसी ने अपना हाथ नहीं बढ़ाया था।

हे मानव तू कैसा श्रेष्ठ ! तू एक तुच्छ प्राणी है। तूने समस्त जीवों पर विजय पाई है पर अपनी स्वार्थ भावना और धन-लोलुपता पर विजय न पा सकने वाले स्वार्थी जीव तेरा जीवन अकारथ है। तुझमें किसी जीव के प्रति दया नहीं है - नहीं तुझमें दया है किंतु अपने एक कुत्ते के पिल्ले के लिए अपने एक तुच्छ जीव के लिए लेकिन किसी दूसरे मानव के असहाय दरिद्र बच्चे के प्रति तुझमें कोई दया भावना नहीं है। कोई दया नहीं।

❊❊❊❊

नेतृत्व का सम्मान

सुजीत कुमार
अधीक्षक

फोन की घंटी बजी। उधर से आवाज़ आई। इस बार पत्रिका के लिए आपका कोई योगदान प्राप्त नहीं हुआ .... मैं सहज ही इस विचार में पड़ गया की सत्य है। इस कार्यालय के कार्यो की ऊहापोह में वास्तविक जीवन कही पीछे छूटता जाता है। हम अपनी रुचियों और शौक को कहीं भूलते ही चले जाते है। इस बात से बेखबर हुए जाते हैं कि कार्यालय के कार्यकाल की अंतिम तिथि तो उसी दिन निर्धारित हो गयी थी जिस दिन हमने इसे ज्वाइन किया। हालांकि हमारे जीवन का अंत भी उसी समय से निश्चित होता है जब हम जन्म लेते हैं परंतु उसका दिन और समय किसी को पहले से ज्ञात नहीं होता। दरअसल कार्यालय से संबद्धता जीवन का एक बहुत छोटा सा भाग है। कार्यालय को उचित समय देना और अपने उत्तरदायित्वों को सही से निर्वहन करना हमारा परम कर्तव्य है परंतु यही हमारा जीवन बन जाए ऐसा नहीं हो सकता। हमें जीवन को भरपूर जीने का प्रयास करना चाहिए।

इधर हमारा देश दिन प्रतिदिन नयी ऊंचाईयों को छूता जा रहा है। चाहे वो ज्ञान, विज्ञान, विदेश नीति, इकोनॉमी या कोई और क्षेत्र हो हम चहुओर प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। इस प्रगति में संपूर्ण देश वासियों का किसी न किसी रूप में योगदान है। हम कर्मचारी वर्ग भी इस प्रगति के लिए अपना योगदान देते हैं परंतु प्रगति हासिल करने के लिए लक्ष्य निर्धारण अत्यंत आवश्यक है। यहाँ नेतृत्व कि विशेष भूमिका होती है। यह नेतृत्व कई स्तर पर होता है और हर स्तर अपना अलग महत्व रखता है।

मेरा यह लेख इसी नेतृत्व के लिए एक विशेष पहलू से आपको रूबरू करवाने का एक प्रयास है।

जो व्यक्ति नेतृत्व करता है उसका कुशल होना आवश्यक है क्योंकि एक अकुशल नेतृत्व किसी भी संस्था के लिए एक अभिशॉप से कम नहीं। हालांकि जो व्यक्ति नेता (जिसमें हर स्तर पर नेतृत्व करने वाला व्यक्ति चाहे तो राजनीति, सरकारी कार्यालय या निजी क्षेत्र से जुड़ा हो, शामिल है) होता है उसके चयन की प्रक्रिया अत्यंत वृहद होती है और कुछ अपवादों को छोड़कर सामान्यतया नेतृत्व अपने उत्तरदायित्वों का प्रभावी रूप से निर्वहन नहीं कर सकता। यह सम्मान देने के बिना नेतृत्व अपने उत्तरदायित्व का प्रभावी रूप से निर्वहन नहीं कर सकता। यह सम्मान देने के लिए यह भी आवश्यक है कि ये मान लिया जाए कि जो नेता है वो असाधारण व्यक्ति है, साधारण नहीं। वैसे तो हर व्यक्ति साधारण ही होता है, उसका अपना जीवन होता है तब उसे अपने अधीन आने वाले किसी व्यक्ति के कल्याण के बारे में नहीं सोचना होता है बल्कि सभी के बारे में सोचना होता है तथा साथ ही अपने उत्तरदायित्व का भी निर्वहन करना होता है। इन सभी कारणों के चलते नेतृत्व के साथ कुछ विशेषाधिकारों का होना स्वाभाविक है।

अंग्रेजी में एक कहावत है, "Power Corrupts and Absolute Power Corrupts Absolutely" अर्थात सत्ता भ्रष्ट करती है और संपूर्ण सत्ता संपूर्ण रूप से भ्रष्ट करती है। नेता को चाहिए कि वो अपने विशेषाधिकारों का ऐसे प्रयोग करें कि वो उसे भ्रष्ट न बना दे, तभी वह सम्मान का अधिकारी होगा।

पृथ्वी पर बहुत से सम्मान तो हमारे अपने बनाए हुये हैं। उदाहरण के लिए प्राचीन काल में प्रजा राजा को असाधारण मानती थी, ये कहा जाता था कि राजा ईश्वर का रूप होता है लेकिन वास्तव मे राजा असाधारण नहीं होता था। वह भी एक साधारण व्यक्ति ही होता था परंतु जब वह राजा के कर्तव्य को निभाता था तब उसे अपने साधारणता को छोड़कर असाधरण

बनना पड़ता था अन्यथा वह राज ही नहीं कर पाता। राजा से सुचारू ढंग से व्यवस्था पाने के लिए प्रजा उसे असाधारण बना देती थी और उस के अनुकूल सम्मान देती थी।इस सम्मान की ज़िम्मेदारी राजा को संभालनी पड़ती थी यानि उसे असाधारण व्यक्ति बनना पड़ता था। मनुष्य के प्रायः सभी संबंधों में ऐसी ही कृत्रिमता देखने को मिलती है। हर परिवार में पिता और माता की विशेष सम्मान प्राप्त होता है, उसी कारण उन्हें समाज में विशेष रूप से आदरणीय माना जाता है। इसी प्रकार परिवार के बड़े पुत्र को भी विशेष पद प्राप्त होता है और वह इसलिए है क्योंकि पिता के अनुपस्थिति में वह पिता वाली सारी जिम्मेदारियां निभाता है।

ऐसा व्यक्ति, जो नेता नहीं है, उसको कई बार ऐसा लगता है कि नेता के इस आदेश के कारण उसे नुकसान हुआ था, उस आदेश के कारण उसे फायदा हुआ और इस कारण से नेता अच्छा है या बुरा है।दरअसल ऐसा मान लेना हमारी नासमझी के अलावा कुछ नहीं।यदि हमने किसी चीज का केवल भावात्मक अनुभव किया है परंतु उसका भौतिक अनुभव नहीं किया है या उसका आकार प्रकार रंग रूप हमारे सामने स्पष्ट नहीं हुआ है तो उसको ठीक से समझा पाना हमारे लिए आसान नहीं है। किसी निर्णय को लेने के लिए एक कुशल नेता को कई पहलुओं पर विचार करना पड़ता है, उसमें से कोई निर्णय को लेने के लिए एक कुशल नेता को कई पहलुओं पर विचार करना पड़ता है, उससे से कोई निर्णय किसी के लिए फायदेमंद होता है तो कोई किसी और के लिए।समाज में यह संतुलन बना के रखना आवश्यक है।कोई भी निर्णय ऐसा नहीं हो सकता जिस से सभी प्रसन्न हो।यहाँ तक कि यदि यह घोषणा कर दी जाए कि बिना किसी धार्मिक, लैंगिक अथवा जातिगत भेद भाव के सभी को एक अमुक धनराशि प्रति माह दी जाएगी उससे भी शायद करदाता नाराज हो जाएंगे।जैसे रात्री के वृहद अंधेरे में दिये की जलती हुयी छोटी सी बाती हमें एक सकारात्मकता देती है और अंधकार के बजाय हम दिये की उस छोटी बातों पर ही आस्था रखते हैं उसी प्रकार अपने नेतृत्व पर आस्था रखना और उसका सम्मान करना हमारा दायित्व है।

❋❋❋❋

मन की आशाएं

रोहित कुमार सोलाखे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

तुम बनके हमसफ़र, हर सफ़र में आते रहना,
मैं तन्हा अकेला हूँ, मेरा साथ निभाते रहना।
रास्तों में है मुश्किले दिशाएं भी खो गई,
मैं कही बहक ना जाऊं, होश में लाते रहना।
दर्द न हो तो खुशी की कीमत पता नहीं होती,
इन यादों को यूं ही अपने जहन में बसाते रहना।
मैं तुम्हारी इस ख़ामोशी को भला क्या समझूं,
मुझे नहीं आता नजरें मिलना और झुकाते रहना।
यूं ही बीत जाएगी जिंदगी एक दिन साथी,
दिल ना भी करें तो हंसना और हंसाते रहना।

❋❋❋❋

बाजार बातों का

प्रेम जुनेजा
सहायक आयुक्त (से.नि.)

वो दिन अब नहीं रहे जब दादा जी हर सुबह टकटकी लगाये गेट को निहारते रहते थे। पेपर वाले की साइकिल की घंटी सुनकर चेहरा ऐसे खिल उठता था मानों सुबह की चाय का प्याला। वक्त ने करवट ली, अब '24×7' इलेक्ट्रॉनिक मीडिया न चाहते हुए सभी प्रकार की खबरों का प्रसार करता रहता है। सुबह की खबर शाम को तड़का लगाकर ब्रेकिंग न्यूज के रूप में परोस दी जाती है। यही नहीं न्यूज फ्लैश का मैसेज तो हर कुछ मिनट में दस्तक देता रहता है। बेटे को जब किसी प्रकार की खबर की जानकारी दो, तब वह बड़े ही भोलेपन से कहता है अरे डैड यह तो यू ट्यूब पर दो दिन पहले ब्रेक हो चुकी है। हम तो बासी दाल का सेवन बड़े चाव से किये जा रहे थे।

हद तो तब हो जाती है जब हर शाम कुछ पुराने चेहरे चैनल बदल-बदल कर डिबेट के नाम पर वार्तालाप करते हैं, जैसे कारगिल का युद्ध। सभी की अपनी कोई व्यक्तिगत राय नहीं होती, अपितु पार्टी लाइन का बखान मंजे हुए योद्धा की तरह करते हैं, यह जानते हुए भी कि वो किसी पप्पू नेता की गलत जानकारी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। ऐसे में वो कभी-कभी शहीद भी हो जाते हैं तब उन्हें किसी विमान की तरह ग्राउंडेड कर दिया जाता है। ऊपर से तुर्रा यह कि वह तो उनकी व्यक्तिगत राय हो सकती है, पार्टी का मत भिन्न है। जो पार्टी का प्रवक्ता विजयी होता है व शीघ्र संगठन अथवा सरकार में उच्च पद अथवा संसद की टिकिट पाने में सफल हो जाता है।

चैनल भी कहने को सरकार का चौथा स्तंभ होते हैं पर विज्ञापन के लॉली-पॉप को चूसते-चूसते किसी एक पार्टी के विचारधारा को समर्थन प्रदान करने लगते हैं। स्क्रीन पर नजर आने वाला एंकर जहां वार्तालाप की दिशा और दशा को तय करता है वहीं चैनल किसी नैरेटिव को सैट करने में मददगार होता है ऐसा करते हुए मोटा नजराना तो मिलता ही है कल के संवाददाता और होस्ट आज के चैनल मालिक नजर आते हैं हां कभी कोई अनजानी दुर्घटना भी घट जाती है तब या तो वह पब्लिक से गायब हो जाता है और कभी तो जेल यात्रा का भी प्रबंध हो जाता है।

इससे हासिल क्या होता है, सत्ता का सारा खेल है और यह खिलाड़ी जनमानस का आचार-विचार तैयार करने का कार्य करते हैं। सर्वे की चाशनी में हमें आंकड़े परोसे जाते हैं, सही या गलत यह तो कुछ वक्त बाद में तय होता है। कुछ धन राशि का आदान प्रदान और समायोजित करने का प्रावधान भी हो जाता है। जनता मूक-दर्शक ही सही सहभागी बन जाती है। 'जनता का सवाल' के रूप में नाम और कुछ राशि भी प्राप्त हो जाती है। हम जैसे सेवा - निवृत का मन भी लगा रहता है।

खेल यही खत्म नहीं होता, Twitter/Telegram जैसे माध्यमों से नेता की पहुंच बड़े पैमाने पर लोगों तक हो जाती है। मन की बात कहने का यह भी तो सही तरीका है चाहे सही या गलत/फेक न्यूज का ठेका तो फेसबुक/व्हाटसअप ने संभाल ही रखा है। सही या गलत का निर्धारण तो जनता को स्वयं करना है, सामने वाला तो शिखंडी के तीर की तरह होता है।

लोकतंत्र जनमानस का खुद को आगे ले जाने का माध्यम है अब उसकी दुहाई देकर कौन आगे निकलता है यह धारणा से तय होता है फिर बैठ गया तो पास वरना फेल। जनता को तो राजनेता वैसे भी फ्री का झुनझुना कुछ माह पूर्व पकड़ा देते है। फ्री बिजली, पानी से लेकर फ्री लैपटॉप, मोबाइल, मंगलसूत्र, बरतन, स्कूटी, विवाह बरतन, राशन सब मिलता है। वोट वाले दिन के नोट, बोतल, मुर्गा अलग से। हमारा लोकतंत्र समय के साथ कितना असहज हो चला है। सरकार और न्यायपालिका न चाहते हुए भी हर मुद्दे में आमने-सामने खड़ी नजर आती है। बातों के इस जमा खर्च का हिसाब तो चुनाव द्वारा हो जाता है सही या गलत यह अलग विषय है। देश की चाल तो चंद हाथों में होती है और हम यह व्याख्या करके अपना योगदान करने का प्रयास करते हैं बुद्ध जीवी का यही कर्म है।

उज्जैन दर्शन

आशीष सिंघल
अधीक्षक

उज्जैन, एक पुराना शहर है जो क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है, इसे पहले उज्जयिनी और अवंतिका के नाम से जाना जाता था, जिस पर प्रख्यात राजा विक्रमादित्य राज करते थे। उज्जैन, मध्यभारत में एक हिंदू तीर्थ स्थल के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान है। उज्जैन के श्री महाकालेश्वर भारत में बारह प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

महाकाल मंदिर सबसे पहले कब अस्तित्व में आया, यह बताना मुश्किल है। हालांकि, इस घटना को प्रागैतिहासिक काल का बताया जा सकता है। पुराण बताते हैं कि इसकी स्थापना सबसे पहले प्रजापिता ब्रह्मा ने की थी। महाकाल मंदिर की कानून व्यवस्था की देखभाल के लिए बी.सी. चौथी-तीसरी शताब्दी के उज्जैन के पंच-चिह्नित सिक्के, छठी शताब्दी में राजा चंदा प्रद्योत द्वारा राजकुमार कुमार सेन की नियुक्ति का उल्लेख मिलता है। महाकाल मंदिर का उल्लेख कई प्राचीन भारतीय काव्य ग्रंथों में भी मिलता है। कालिदास से शुरू करते हुए, कई संस्कृत कवियों ने इस मंदिर को भावनात्मक रूप से समृद्ध किया है। इन ग्रंथों के अनुसार यह मंदिर अत्यंत भव्य था। गुप्त काल से पहले मंदिरों पर कोई शिखर नहीं थे। मंदिरों की छतें अधिकतर सपाट होती थीं। संभवतः इसी तथ्य के कारण, रघुवंशम में कालिदास ने इस मंदिर को 'निकेतन' के रूप में वर्णित किया था। राजा का महल मंदिर के आसपास था। (पूर्व मेघ) के आरंभिक भाग में कालिदास ने महाकाल मंदिर का आकर्षक वर्णन किया है।

उज्जैन भारतीय समय की गणना के लिए केंद्रीय बिंदु हुआ करता था और महाकाल को उज्जैन का विशिष्ट पीठासीन देवता माना जाता था। समय के देवता, शिव अपने सभी वैभव में, उज्जैन में शाश्वत शासन करते है। महाकालेश्वर का मंदिर, इसका शिखर आसमान में चढ़ता है, आकाश के खिलाफ एक भव्य अग्रभाग, अपनी भव्यता के साथ आदिकालीन विस्मय और श्रद्धा को उजागर करता है। महाकाल शहर और उसके लोगों के जीवन पर हावी है, यहां तक कि आधुनिक व्यस्तताओं के व्यस्त दिनचर्या के बीच भी और पिछली परंपराओं के साथ एक अटूट लिंक प्रदान करता है। भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक महाकाल में लिंगम (स्वयं से पैदा हुआ), स्वयं के भीतर से शक्ति को प्राप्त करने के लिए माना जाता है, अन्य छवियों और लिंगों के खिलाफ, जो औपचारिक रूप से स्थापित है और मंत्र के साथ निवेश किए जाते हैं - शक्ति। महाकालेश्वर की मूर्ति दक्षिणमुखी होने के कारण दक्षिणामूर्ति मानी जाती है। यह एक अनूठी विशेषता है, जिसे तांत्रिक परंपरा द्वारा केवल 12 ज्योतिर्लिंगों में से महाकालेश्वर में पाया जाता है। महाकाल मंदिर के ऊपर गर्भगृह में ओंकारेश्वर शिव की मूर्ति प्रतिष्ठित है। गर्भगृह में पश्चिम, उत्तर और पूर्व में गणेश, पार्वती और कार्तिकेय के चित्र स्थापित है। दक्षिण में नदी की प्रतिमा है। तीसरी मंजिल पर नागचंद्रेश्वर की मूर्ति केवल नागपंचमी के दिन दर्शन के लिए खुली होती है। महाशिवरात्रि के दिन, मंदिर के पास एक विशाल मेला लगता है और रात में पूजा होती है। उज्जैन कुछ प्रसिद्ध मंदिरों और धार्मिक स्थलों का घर है, जिनमें से कुछ नीचे सूचीबद्ध हैं -

कालभैरव, हरसिद्धि, वेदशाला, संदीपनि आश्रम, चिंतामणि गणेश, त्रिवेणी नवग्रह, मंगलनाथ, सिद्धवथ, गोपालमंदिर।

उज्जैन कैसे पहुँचे

वायु मार्ग - निकटतम हवाई अड्डा देवी अहिल्याबाई होल्कर हवाई अड्डा इंदौर (53 किमी) यहाँ से दिल्ली, मुंबई, पुणे, जयपुर, हैदराबाद और भोपाल की नियमित उड़ाने हैं।

ट्रेन द्वारा - उज्जैन पश्चिम रेलवे जोन का एक रेलवे स्टेशन है। यहाँ का UJN कोड है। यहां से कई बड़े शहरों के लिए ट्रेन उपलब्ध है।

सड़क मार्ग - नियमित बस सेवाएं उज्जैन को इंदौर, भोपाल, रतलाम, ग्वालियर, मांडू, धार, कोटा और ओंकारेश्वर आदि से जोड़ती है। अच्छी सड़कें, उज्जैन को अहमदाबाद (402 किलोमीटर), भोपाल (183 किलोमीटर), मुंबई (655 किलोमीटर), दिल्ली (774 किलोमीटर), ग्वालियर (451 किलोमीटर), इंदौर (53 किलोमीटर) और खजुराहों (570 किलोमीटर) आदि से जोड़ती है।

उज्जैन में बन रहा कॉरिडोर काशी विश्वनाथ मंदिर से आकार में करीब चार गुना बड़ा है। महाकाल कॉरिडोर में शिव तांडव स्त्रोत, शिव विवाह, महाकालेश्वर वाटिका, महाकालेश्वर मार्ग, शिव अवतार वाटिका, प्रवचन हॉल रूद्रसागर तट विकास, अर्थ पथ क्षेत्र, धर्मशाला और पार्किंग सर्विसेस भी तैयार किया जा रहा है। इससे भक्तों को दर्शन करने और कॉरिडोर घूमने के दौरान खास अनुभव होने वाला है। इस कॉरिडोर को शिवपुराण की कथाओं के आधार पर तैयार किया गया है। इसे खूबसूरती देने के लिए 900 मीटर लंबी म्यूरल वाल का स्वरूप देकर 54 अलग अलग शिव गाथाओं को म्यूरल के माध्यम से उकेरा गया है।

महाकाल कॉरिडोर में जहां एक तरफ पत्थरों का बेहतरीन इस्तेमाल है तो वहीं दूसरी और यहां 40000 से ज्यादा पेड़ पौधों को लगाकर आने वाले समय में एक ग्रीन कॉरिडोर के रूप में भी विकसित किए जाने की योजना है। खास बात यह है कि यहां लगाए गए पेड़ पौधों में से सिर्फ उन्हीं प्रजातियों को चुना गया है जो भगवान शिव को बेहद प्रिय हैं या फिर उनकी पूजा में जिनकी पत्तियों का इस्तेमाल होता है। महाकाल कॉरिडोर में जो पेड़ पौधे लगाए गए हैं उनमें प्रमुख रूप से कैलाशपति, शमी, रुद्राक्ष, सप्तपर्णी, गूलर, वटवृक्ष और पीपल शामिल है। महाकाल कॉरिडोर में जहां एक तरफ लोग धार्मिक रूप से जुड़ सकेंगे तो वहीं दूसरी तरफ प्रकृति के करीब रहे इसका भी यहां पूरा ध्यान रखा गया है। अहमदाबाद के साबरमती रिवरफ्रंट की तरह महाकाल कॉरिडोर के पास स्थित रुद्रसागर को विकसित कर यह एक बेहद भव्य रुद्रसागर लेक फ्रंट तैयार किया गया है जहां पर बैठकर लोग रूद्र सागर के वैभव को निहार सकेंगे और यहां फुरसत के कुछ पल बिता सकेंगे।

दरअसल, महाकाल दुनिया का इकलौता दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है और इसीलिए यहां पर साल के 12 महीने श्रद्धालुओं की भीड़ रहती है। भगवान शिव को प्रिय महीना सावन का है ऐसे में सावन के पूरे महीने मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। इसके अलावा महाशिवरात्रि का पर्व हो नाग पंचमी हो या हर साल 12 साल में आने वाला महाकुंभ का अवसर, महाकाल मंदिर श्रद्धा का सबसे बड़ा केंद्र बन जाता है। ऐसे में यहां क्राउड मैनेजमेंट स्थानीय प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती साबित होता है। इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए महाकाल कॉरिडोर को इतना भव्य और विराट स्वरूप दिया गया है जिसके चलते लाखों श्रद्धालुओं को एक ही दिन में भगवान महाकाल के दर्शन कराए जा सकेंगे। महाकाल परिसर में महाकाल कॉरिडोर, फेसिलिटी सेंटर, सरफेस पार्किंग का भी निर्माण किया गया है। परिसर इतना विशाल है कि पूरे मंदिर परिसर में घूमने और सूक्ष्मता से दर्शन करने के लिए 5 से 6 घंटे का वक्त लगेगा। इसके लिए यहां पर बैटरी से चलने वाली गाड़ियों का इंतजाम भी किया गया है। महाकाल कॉरिडोर में धर्म और तकनीक का अनूठा संगम भी आपको देखने को मिलेगा क्योंकि यह जितनी भी मूर्तियां है। उन सब की अपनी एक कहानी है और इन कहानियों को जानने के लिए आपको सिर्फ इन मूर्तियों के सामने लगे बार कोड को स्कैन करना होगा। बार कोड स्कैन करते ही मूर्तियों से जुड़ी कहानी ऑडियों और टेक्स्ट फार्मेट में आपके मोबाइल में आ जाएगी। यहां पर जिस तरह से भगवान शिव से जुड़े प्रसंगों को दिखाया गया है वह दुनिया में कही भी नहीं है और इसलिए जब लोग इस कॉरिडोर से होकर गुजरेंगे तो वो भगवान शिव से जुड़े प्रसंगों की यादें भी साथ ले जाएंगे।

सुविचार (संकलन)

महेश कुमार कोष्ठा
अधीक्षक

अपना दृष्टिकोण सुधारें

जिस तरह हरा चश्मा चढ़ा लेने पर चारों और हरा ही हरा, लाल चढ़ा लेने पर लाल ही लाल दिखाई देता है, वैसे ही संसार की विभिन्नता मनुष्य के दृष्टिकोण का ही परिणाम है। एक पेड़ को बढ़ई इस दृष्टि से देखेगा कि इसमें से काम का सामान क्या बनेगा, एक दार्शनिक विश्व चेतना और जड़ के सम्मिलित सौंदर्य को देखकर खिल उठेगा, एक पशु उसे अपने भोजन की वस्तु समझेगा और साधारण व्यक्ति उसे कोई महत्व नहीं देगा।

मनुष्य का जैसा दृष्टिकोण होता है वह दूसरों के प्रति जैसा सोचता है, उसी के अनुसार उसके विचार होते हैं और इनके फलस्वरूप वैसा ही वातावरण तथा परिस्थितियां प्राप्त कर लेता है। दूसरों के दोष - दर्शन, नुक्ताचीनी करने वाले व्यक्ति जहां भी जाते हैं, उन्हें अच्छाई नजर ही नहीं आती और लोगों से उनकी नहीं बनती। सबको अच्छी निगाह से देखने पर सरल सात्विक स्वभाव के लोगों को सब जगह अच्छाई ही नजर आती है। बुराई में भी वह ऊंचे आदर्श का दर्शन करते हैं। मरे हुए कुत्ते से लोग घृणा करते हैं, किंतु करुणामूर्ति ईसा मसीह ने उसी में परमात्मा के सौंदर्य का दर्शन कर अपनी गोद में उठा लिया था।

वास्तव में जिस व्यक्ति के अपने भीतर बुराई रहा करती है, उसे सारा संसार बुरा दिख पड़ता है। यह बात हर व्यक्ति के बारे में सत्य है। इसलिए आदमी की पहली आवश्यकता है, अपने भीतर की बुराई को दूर करे, फिर दूसरों की बुराईयों की तरफ ध्यान दे। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर कविवर संत कबीर ने अपने अनुभव के आधार पर कहा -

बुरा जो देखन में चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।।

स्पष्ट है कि कबीर जैसे संत ने इस ओर संकेत किया है कि व्यक्ति को अपनी वास्तविकता जानकर ही अपना दृष्टिकोण या नजरिया स्पष्ट करना चाहिए व दूसरों की खोज या विश्लेषण नहीं करना चाहिए

सर्वत्र अच्छाई के दर्शन करने पर बुरे तत्व भी अनुकूल बन जाते हैं। इस तरह बाह्य वातावरण एवं परिस्थितियों के निर्माण में मनुष्य का स्वयं का अपना दृष्टिकोण और उससे प्रेरित भाव, विचार, आचरण ही प्रमुख होते हैं। मनुष्य के मित्र और शत्रु उसके भाव, विचार, आचरण, दृष्टिकोण आदि ही है।

''जिम्मेदार'' नागरिक बनिए

जिम्मेदारियां भगवान ने मनुष्य को अनेक रूपों में सौंपी है। समाज ने भी उसे मर्यादाओं और वर्जनाओं के अंकुश को मानने के लिए बाधित किया है। इन सब की जो अवज्ञा करता है उसे उद्दंड, उच्छृंखल माना जाता है।

हर व्यक्ति शरीर रक्षा, परिवार व्यवस्था, समाज निष्ठा, अनुशासन का परिपालन जैसे कर्तव्यों से बंधा हुआ है। जिम्मेदारियों को निभाने पर ही मनुष्य का शौर्य निखरता है, विश्वास बनता है और विश्वसनीयता के आधार पर ही वह व्याख्या बनने लगती है जिसके अनुसार उन्हें अधिक जिम्मेदारियां सौंपी जाएं, प्रगति के उच्च शिखर पर जा पहुंचने का सुयोग खींचता चला जाए लोग उन्हें आग्रह पूर्वक बुलाए और सर माथे पर चढ़ाए। जिम्मेदार लोगों का ही व्यक्तित्व निखरता है और बड़े पराक्रम वहीं कर पाते हैं।

देशद्रोही कृष्ण राव अलाउद्दीन के लिए जासूसी कर रहा है, जब इस बात का पता उसकी पत्नी वीरमति को चला तो उसने अपने पति की हत्या कर दी। मरते हुए पति ने कहा - ''यह क्या किया वीरमति तुमने ? भारतीय स्त्रियां ऐसा तो कभी नहीं करती।'' ''हां तुम बिल्कुल ठीक कहते हो, पर भारतीय पुरुष भी तो कभी देशद्रोह नहीं करते। इस समय राष्ट्र की रक्षा ही मेरा धर्म है। रही पतिव्रत धर्म की बात सो यह अभी लो।'' यह कहकर उसने खुद को भी कटार भोंक ली और पति के साथ सती हो गई।

हर समझदार व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वे जिस प्रकार अपने शरीर और अर्थव्यवस्था का ध्यान रखता है उसी प्रकार अपने प्रमुख उपकरण शरीर और मस्तिष्क को स्वस्थ व संतुलित बनाए रखें। शरीर भगवान की सौंपी गई अमानत है उसे यदि असंयमित और अव्यवस्थित न किया जाए तो पूर्ण आयु तक निरोगी रहा जा सकता है। हमारी जिम्मेदारी है कि जिस प्रकार चोर को घर में नहीं घुसने दिया जाता उसी प्रकार मस्तिष्क में अनुपयुक्त विचारों को प्रवेश न होने देवें। गैर जिम्मेदारी का आभास यहीं से मिलता है कि व्यक्ति ने अपने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को गड़बड़ा तो नहीं दिया।

नवयुवकों! तुम्हें भी ईश्वर ने विवेकशील मस्तिष्क और विशाल हृदय दिया है। अपनी जिम्मेदारियां निभाना सीखों अपने देश, धर्म, समाज, संस्कृति से संबंधित अपने संपर्क क्षेत्र को भौतिक दृष्टि से समुन्नत और भावना की दृष्टि से सुसंस्कृत बनाने का प्रयत्न करो, क्योंकि तुम ही वर्तमान हो, तुम भी भविष्य हो। हमारा परिवार समाज व राष्ट्र यशस्वी बने, यह तुम्हारी जिम्मेदारी है।

आपकी असफलता के लिए दूसरे ही दोषी क्यों है ?

अपनी हर एक बाह्य परिस्थिति की जिम्मेदारी दूसरों पर मत डालिए, वरन् अपने ऊपर लीजिए। दुनिया को दर्पण के समान समझिए जिसमें अपनी ही सूरत दिखाई पड़ती है। दूसरे लोगों में अच्छाईयाँ-बुराईयाँ दिखाई पड़ती हैं, सामने जो प्रिय - अप्रिय परिस्थितयाँ आती है, इसका कारण कोई और नहीं, वरन् आप स्वयं है और उनमें परिवर्तन करने की शक्ति भी किसी और में नहीं, वरन् आप में है। मनोविज्ञान शास्त्र बताता है कि मनुष्य में यह एक बड़ी भारी त्रुटि है कि वह अपनी भूल या न्यूनता को स्वीकार नहीं करता। अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेने को तैयार नहीं होता। अपने दोषों को दूसरों पर थोपने का प्रयास करके वह स्वयं निर्दोष बनता है।

हम मानते हैं कि दूसरों में भी दोष है, अनायास अप्रिय परिस्थितियाँ भी सामने आती है, पर काँटों से आसानी के साथ बच निकलने योग्य विवेक की आँखे भी तो मौजूद हैं। अच्छाईयों के साथ बुराईयों से बच निकलना बुद्धिमता का काम है। ऐसी बुद्धिमता तब आती है जब आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण को अपना लिया जाता है। आप किसी गुत्थी को सुलझाने के लिए दूसरों की सहायता ले सकते हैं, पर उनके ऊपर अवलंबित मत रहिए। आप अपनी कठिनाईयों को सुलझाने का प्रयत्न करिए। जब तक आप दूसरों पर आश्रित रहते हैं, यह समझते हैं कि हमारे कष्टों को कोई और दूर करेगा, तब तक बहुत बड़े भ्रम में हैं। सारी समस्याओं को सुलझाने की कुंजी अपने अंदर है। दूसरे लोगों से जिस बात की आशा करते हैं, उसकी योग्यता अपने अंदर पैदा कीजिए, तो अनायास बिना मांगे ही वह इच्छाएँ पूरी होने लगेंगी।

आप चाहते हैं कि आपको बीमारी न सताए, तो स्वास्थ्य नियमों पर दृढ़तापूर्वक चलना आरंभ कर दीजिए। आप चाहते हैं कि लोग आपका लोहा मानें, तो शक्ति संपादन कीजिए। आप चाहते हैं कि प्रतिष्ठा हो तो प्रतिष्ठा के योग्य कार्य कीजिए। आप चाहते हैं कि ऊँचा पद हो, तो उसके लिए योग्य गुणों को एकत्रित करिए। धन, बुद्धि, बल, विद्या चाहते हैं तो परिश्रम और उत्साह उत्पन्न करिए। जब तक अपने भीतर वे गुण नहीं है, जिनके द्वारा मन की इच्छाएँ पूरी हुआ करती हैं, तब तक यह आशा रखना व्यर्थ है कि आप सफल मनोरथ पा जाएँगे।

संसार में सफलता प्राप्त करने की आकांक्षा के साथ अपनी योग्यताओं में वृद्धि करना भी आरंभ कीजिए। अपने भाग्य को जैसा चाहें वैसा लिखना अपने हाथ की बात है।

''सफलता'' की सही कसौटी

संसार में प्रायः लोग विजय-पराजय, सफलता-असफलता की स्थूल उपलब्धियों से ही नापते हैं किसी ने किसी प्रकार धन-दौलत, मान-सम्मान अथवा नाम-धाम पा लिया है, स्थूल बुद्धि वाले उसे सफल ही मान लेते हैं। वे यह नहीं देख पाते कि इसने जो यह वैभव-विभूति प्राप्त की है, उसके उपायों एवं साधनों के औचित्य पर ध्यान नहीं रखा जबकि उपायों का अनौचित्य उसकी बहुत बड़ी नैतिक पराजय है।

इसके विपरीत जो व्यक्ति ईमानदारी से प्रयत्न करते हुए भी स्थूल उपलब्धियों को संयोग अथवा अन्य हेतुओं वश नहीं पा सकते उन्हें सामान्य बुद्धि वाले लोग असफल ही मानते हैं, जबकि अनुपलब्धि को स्वीकार करके भी ''ईमानदार प्रयत्न'' में लगे रहने की सफलता उनकी बहुत बड़ी विजय है।

सफलता-असफलता तथा विजय-पराजय के विषय में इस प्रकार की धारणा रखने वाले व्यक्ति स्थूल दृष्टि से स्थूल उपलब्धियों को ही देख पाते हैं और उनसे ही प्रसन्न एवं प्रभावित हुआ करते हैं ऐसे लोग पुरुषार्थ एवं कर्मशीलता का मान सम्मान करना नहीं जानते। निश्चय ही ऐसे लोग भौतिक विभूतियों के अविवेकशील भक्त होते हैं। उनकी दृष्टि में भौतिक उपलब्धियों के सिवाय मनुष्य के प्रयत्न एवं पुरुषार्थ का कोई मूल्य-महत्व नहीं होता।

तत्वदर्शी बुद्धिमानों का दृष्टिकोण स्थूलवादियों से सहमत नहीं होता। वे सफलता एवं विजय का मापदंड पुरुषार्थ एवं प्रयत्न को ही मानते हैं। बिना परिश्रम अथवा पुरुषार्थ के विरासत संयोग अथवा प्रारब्ध वश नाम-धाम अथवा धन-दौलत पाने वालों को वे सफल व्यक्तियों की श्रेणी में नहीं रखते और गर्हित उपायों का अवलंबन लेकर सफल होने वालों की ओर तो वे उतना ही ध्यान नहीं देते जितना कि प्रारब्ध-प्रसन्न व्यक्तियों की ओर। उनका विश्वास होता है कि सफलता अथवा विजय का संबंध मनुष्य के पुरुषार्थ, प्रयत्न एवं संघर्ष न करना पड़ा हो तो सफलता का श्रेय उनकी किस विशेषता से, किस गुण से जोड़ा जाएगा। उपलब्धियां स्वयं में कोई सफलता नहीं है। यह तो सफलता की परिचायक प्रतीक मात्र होती है। प्रतिद्वंदी के पस्त-हिम्मत होने के कारण कोई पहलवान अखाड़े में उतरे बिना ही विजयी घोषित नहीं माना जा सकता। उसकी विजय की घोषणा तो वास्तव में प्रतिद्वंदी की साहसहीनता की सूचक होती है। इस प्रकार की घटना में यह घोषणा प्रस्तुत पक्ष की विजय ही नहीं, निरस्त पक्ष के पराजय की होनी चाहिए।

पुरुषार्थ में विश्वास रखने वाले सच्चे कर्मवीर जीवन में कभी असफल अथवा परास्त नहीं होते। उनकी पराजय तो तब ही कही जा सकती है जब वे एक बार सफलता से निराश होकर निष्क्रिय हो जाएं और प्रयत्न के प्रति हथियार डाल दें। सच्चा कर्मवीर एक क्या हजार बार की असफलता से भी पराजय स्वीकार नहीं करता। जीवन के अंतिम क्षण तक उपलब्धियों का मुख न देख सकने वाले प्रयत्न निरत कर्मवीरों की असफल अथवा पराजित कौन किस मुंह से कहने का साहस कर सकता है ? राणा प्रताप, पोरस तथा पृथ्वीराज चौहान ऐसे ही कर्म वीरों में से हैं, जो स्थूल रूप से हार कर भी नैतिक रूप से पराजित नहीं हुए। श्रृंखलाओं एवं संकटों के बीच भी उन्होंने अपने को पराजित स्वीकार नहीं किया। जीवन का अंतिम अणु-कण संघर्ष के दाव पर लगा देने के बाद भी विजय ना पा सकने वाले यह वीर आज भी विजयी व्यक्तियों के साथ ही गिने जाते हैं। उनकी परिस्थितियां अवश्य हारी किंतु उनके प्रयत्न कभी पराजित नहीं हुए। यही उनकी विजय है जिसे यशस्वी कर्मवीरों के अतिरिक्त साधन संपन्नता के बल पर संयोगिक विजय पाने वाले कर्महीन कायर कभी नहीं पा सकते।

सुबह-ए-गौरीघाट

चेतन सक्सेना
अधीक्षक

जबलपुर शहर के एक छोर पर नर्मदा नदी के किनारे स्थित गौरी घाट का धार्मिक और आध्यामिक महत्व वही है, जो बनारस के घाटों का है। गौरीघाट की सुबह का नजारा और अनुभव अद्भुत है।

जब हल्के स्याह अंधकार का घूंघट जरा सा सरकाकर दिव्य दिवाकर की प्रथम पावन किरण मद्धिम पवन की थाप पर नाचती हुई गगन से नीचे उतरकर पवित्र नर्मदा की जल लहरी को अलंकृत और धरा की शाश्वत वीणा को झंकृत कर जीवन के संगीत के नवोदित अलाप का आगाज करती है, तो लगता है कि प्रकृति मुस्कुराकर आशा भरे सबेरे की सौगात मनुष्य को सहज प्रस्तुत कर रही हो। उस सुबह में अलौकिक ईश्वर का लौकिक स्वरुप प्रतिबिंबित होता है, जिसका अद्भुत श्रृंगार प्रकृति के भौतिक तत्व स्वयं करते हैं। सूर्य द्वारा अंबर के ललाट पर भोर की लालिमा का तिलक-अभिनंदन, स्वर्णिम किरणों के महीन धागों से बुने वस्त्रों का अलंकरण, नदी-नर्मदा द्वारा चरण-कमलों का पखारण, सुर-लहरियाँ बजाती समीरण, खग-वृंदों का समवेत गायन, झूमते शाख-पर्णो का नृत्यन, एक ऐसा समेकित चित्र प्रस्तुत करते हैं जिसकी शब्द-व्याख्या गौरी घाट पर मंत्र-मुग्ध खड़ा मनुष्य कर नहीं सकता, बस आत्मिक-अनुभव कर सकता है। इस अनुभव को शिवालों का शंख-नाद, मंदिरों की घंटियां, गुरुद्वारे का अरदास और वातायन में गूंजती रामधुन और अधिक अध्यात्मिक बना देती है। घाट किनारे खड़े हो जब दूसरे किनारे को देखते हैं, तो एक लंबी दूरी का एहसास होता है पर जब किनारे बंधी कश्तियों को देखते हैं तो विश्वास जगता है कि कोई भी दूरी इतनी बड़ी नहीं होती जिसे मानव अपने उद्यम से पार न कर सके। इसी विश्वास के साथ जब नाव में सवार होते हैं तो पतवार की जल में छपाक की ध्वनि जल और मन में एक अराजकता उत्पन्न करती है, फिर अनुभव होता है कि अराजकता ही नाव और जीवन दोनों को आगे बढ़ाती है बस जरूरत है तो सही दिशा देने की। मांझी कश्ती को सही दिशा दे, पार ले चलता है पर जब तक उस पार नहीं होते, मंझधार में ही रहते हैं और इस मंझधार से मिलते हैं, छोटे-नन्हें अतिथि प्रवासी पक्षी जो उत्तर के अति सर्द क्षेत्र से गौरी घाट बिहार के लिये आते हैं। दाना देते ही ये पक्षी दोस्त बन जाते हैं और समझाते है कि संबंध बहुत सहजता से स्थापित हो सकते हैं बस एक छोटी सी पहल की आवश्यकता है। उस पार पहुंचकर जब गौरी घाट की और देखते हैं तो इस बार किसी भी दूरी का एहसास नहीं होता। नदी और जीवन दोनों को पार करने का रहस्य समझ आ जाता है। वापस गौरी घाट पहुंचकर खाली पड़े तख्तों पर कुछ देर ठहरते हैं तो भीतर शांति, आशा, ऊर्जा, आस्था और प्रकृति का अभूतपूर्व अनुभव होता है। कोई भी किसी स्थान पर सदा नहीं रह सकता पर स्मृतियां पटल पर सदा रहती है। इसी प्रकार गौरी घाट के प्रातः भ्रमण की मीठी स्मृति भीतर किसी कोने में अपना घर सदा के लिए बना लेती है।

हमारी धरोहर

(बादशाह हलवाई मंदिर, ग्वारीघाट रोड, जबलपुर)

अंशु शर्मा
अधीक्षक

मैं आपको जबलपुर आयुक्तालय के क्षेत्राधिकार में आने वाले पुरातात्विक महत्व के एक मंदिर से अवगत करना चाहता हूं। यह मंदिर मध्यप्रदेश के जबलपुर नगर में स्थित है। यह स्थान नर्मदा नदी के गौरी घाट के पास ही एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। जहाँ पैदल एवं वाहन दोनों तरीकों से पहुंचा जा सकता है। यह मंदिर एक ऐतिहासिक पुरातात्विक धरोहर है जो कि पंचानन महादेव के नाम से प्रसिद्ध है। पुरातत्व विभाग के अनुसार उक्त मंदिर का निर्माण वर्ष 1100 बी सी से 1300 बीसी के मध्य किया गया है। मंदिर में भगवान शंकर की पांच मुख वाली मूर्ति स्थापित है जिसके नाम पर इस मंदिर का नाम पंचानन महादेव पड़ा। मुख्य मंदिर में स्वंयभू शिवलिंग विराजमान है इसके साथ ही पंचानन महादेवकालीन स्थापित की 16 भुजी गणपति की प्रतिमा जो माता रिद्धि सिद्धि के साथ है यह मूर्ति अपने आप ही बहुत दुर्लभ है क्योंकि भारत में केवल दो या तीन स्थान ऐसे है जहां पर 16 भुजा गणेश के प्रतिमाएं स्थापित की गई है। इसके अतिरिक्त मंदिर में ऐसी कई प्रतिमा है जो आपका मन मोह लेंगे। मंदिर में कलयुग का प्रवेश के दृश्य की प्रतिमा है जो आपका मन मोह लेंगे। मंदिर में कलयुग का प्रवेश के दृश्य की प्रतिमा भी है साथ ही साथ चार युगों के स्वाभाविक स्वरूप भी मौजूद है। मंदिर की बाहरी दीवारों में कई प्रतिमाएं और कलाकृतियों बनी है। मुख्य मंदिर 30 पिलर पर टिका हुआ है एवं इन पिलर्स पर नौग्रह, 27 नक्षत्र, नदियां एवं देवी देवताओं की प्रतिमाएं क्रमबद्ध तरीके से बनाए गए है। इसे देखकर ऐसा लगता है मानों इस मंदिर को बनाने वाले एस्ट्रोनॉमी और एस्ट्रोलॉजी के विद्वान रहे होंगे। मंदिर की भीतरी दीवारों में भी कई प्रतिमाएं बनी है जिनमें से एक यह शिव पार्वती की प्रतिमा जो चोल साम्राज्य की आर्किटेक्चर डिजाइनों से मिलती-जुलती है। मंदिर में अष्ट भैरव विराजमन है जिनमें से दो इस मुख्य गर्भ ग्रह की सुरक्षा कर रहे हैं। इस मंदिर में एक अष्टधातु का बना हुआ घंटा भी है जिसके ठीक ऊपर मंदिर का मुख्य श्री यंत्र स्थापित है। इस घंटे की आवाज कई किलोमीटर तक सुनाई देती है। मंदिर के मुख्य पुजारी श्री रामगोपाल दुबे जी बताते है कि मंदिर के पीछे चोल साम्राज्य में बनी प्रतिमांए है कि जो कि मुगल साम्राज्य के समय ध्वस्त कर दी गई थी। आज भी यह प्रतिमाएं वृक्ष के नीचे दब गई है और कुछ प्रतिमा है जो आज भी क्षत विक्षत दिखाई देती है। मंदिर में एक गुफा भी है। जिसमें भगवान शिवलिंग विराजमान है। इस गुफा में तीन रास्ते बने हुए है और ऐसी मान्यता है कि इसमें से एक रास्ता है जो मदन महल तक जाता है दूसरा रास्ता जो मंडला तक जाता है और तीसरा रास्ता जो राजा घाट नर्मदा नदी तक जाता है। साथ ही ऐसा माना जाता है कि गोंड साम्राज्य की सबसे शक्तिशाली महिला रानी दुर्गावती इन्हीं गुफाओं के द्वारा नर्मदा नदी से स्नान करके भगवान शिव के दर्शन करने आई थी और यही से सीधे अपने राजकीय राजधानी मंडला या फिर किले की ओर वापस चली जाती थी।

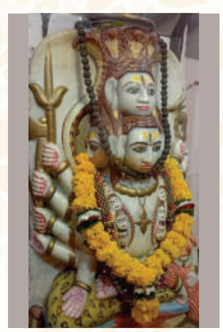

परिश्रम

सुजीत कुमार
अधीक्षक

बात तब की है जब मैं जवान था
दिन में सपने थे और आँखों में अरमान था।
मेहनत से न घबराता था इरादे बुलंद थे
जीत का जज़्बा था पर सामने चुनौतियों का तूफान था।।

बस एक सही राह पाने की थी चाहत।
पर उन चुनौतियों के बीच लक्ष्य साधना कहाँ आसान था।
चूंकि मन चंचल हो के भी निश्छल था
इसलिए साथ मेरे भगवान था।।

मैं चलता गया एक राह पकड़ कर
अपनी ज़िद्द में कि हो रहूँगा कुछ।
चलते-चलते जहाँ मैं पहुंचा
मैं खुद ही हैरान था।।

पग पग मुश्किल हिम्मत रखना
चलना गिरना और संभलना ।
अँधियारे को चीर निकालना
विकट समय कि चुनौतियों का मुझे नहीं अनुमान था ।।

सखा मिला मुझको फिर ऐसा
जो अत्यंत गुणवान था।
मानों मेरे सभी दुःख का
उसके पास निदान था।।

धन्य हुआ मैं उसको पा कर
जीवन का अर्थ समझ पाया।
कठिन डगर पर अडिग हो चलना
जीवन का सर्वश्रेष्ठ वरदान था

जबलपुर के प्रमुख पर्यटन स्थल

इंद्रजीत कुमार
कार्यकारी सहायक

1. धुंआधार जलप्रपात - धुंआधार जलप्रपात जबलपुर का प्रसिद्ध जलप्रपात है। यह प्रधान भेड़ाघाट क्षेत्र का प्रमुख दर्शनीय स्थान है। यह नर्मदा की धारा 50 फुट ऊपर से गिरती है। जिसका जल सफेद धुएं के समान उड़ने जैसा लगता है। इसी कारण इसे 'धुंआधार' कहते हैं। यह जबलपुर का प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पर्यटक स्थल है। यहां पर रोपवे का भी आनंद लिया जा सकता है। रोपवे से भेड़ाघाट क्षेत्र तथा आसपास के संगमरमर की चट्टानों का नजारा काफी मनमोहक होता है। अक्टूबर से फरवरी तथा बरसात के शुरूआती दिन यहां घूमने के लिए अति उपयुक्त है।

2. चौसठ योगिनी मंदिर - भेड़ाघाट स्थित इस चौसठ योगिनी मंदिर का निर्माण 10 वीं सदी में हुआ था। इसे त्रिपुरी के राजा युवराजदेव ने अपने राज्य विस्तार के समय योगिनियों के आशीर्वाद लेने के उद्देश्य से बनवाया था। यह मंदिर एक छोटी से पहाड़ी पर स्थित है। इस मंदिर तक पहुंचने के लिए आपको 150 से ज्यादा सीढ़िया चढ़नी पड़ेगी। बिल्कुल खड़ी चढ़ाई होने की वजह से आपको थोड़ी कठिनाई हो सकती है। चौसठ योगिनियों को मिलाकर इस मंदिर में कुल 95 समाधियाँ है। योगिनीयों की मूतियां खण्डित है, ऐसा माना जाता है कि इन्हें औरंगजेब के शासनकाल में खंडित करवाया गया था। बावजूद इसके मूर्तियों की बनावट खजुराहों के भव्य कलाकारी की याद दिला ही देती है। यह भारत के अत्यंत प्राचीन धरोहरों में से एक है। इस मंदिर के केंद्र में भगवान शिव का मंदिर स्थापित है, जिसमें नन्दी पर सवार शिव व पार्वती की अत्यंत प्राचीन मूर्तियां है। इस मंदिर का रखरखाव भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा किया जाता है। प्राचीन धरोहरों एवं लिपियों में दिलचस्पी रखने वालों के लिए यह एक महत्वपूर्ण अवलोकन स्थल है। मंदिर की पहाड़ी पर बांस, इमली, सीताफल, बेल एवं अन्य जंगली वृक्षों की भरमार है जो मंदिर के वातावरण और भी प्राकृतिक एवं दिव्य बना देती है यहां पर भीड़ कम होती है और आप बड़े आराम एवं शांति से प्राकृतिक खूबसूरती तथा मंदिर की स्थापत्य एवं मूर्तिकला का भरपूर आनंद ले सकते हैं। साल के बारह महीने आप यहां आ सकते हैं।

3. पंचवटी - पंचवटी भेड़ाघाट स्थित नौकायन केंद्र है। यहां से आप नांव लेकर नर्मदा के शांत लहरों पर पंचवटी में बंदरकूदनी तक नौकाभ्रमण का पूरा आनंद ले सकते हैं। तीन तरफ से मार्बल राक्स का बिहंगम एवं अविस्मरणीय दृश्य इसी नौकायन के माध्यम से देखने को मिलता है। भेड़ाघाट आने वाला हर पर्यटक पंचवटी से नौकायन का आनंद जरूर लेता है। चांदनी रात में यह नौकायन आपकी खुशी में कई गुना खुशियां और जोड़ देता है। भारी बरसात के दिनों में आमजनों के लिए यहां नौकायन बंद रहता है।

4. घुंघरा जलप्रपात - धुआंधार जलप्रपात से मात्र तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है यह खूबसूरत जलप्रपात। इस जलप्रपात के बारे काफी कम लोग जानते हैं, इसलिए यहां पर ज्यादा भीड़ नहीं होती है। हलांकि इसे मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों में जोड़ लिया गया है, फिर भी पर्यटन सुविधाएं पूरी तरह से विकसित नहीं हो सकी है। बावजूद इसके यह जलप्रपात अत्यंत खूबसूरत, रमणीय एवं मन को मोह लेने वाला है। इस जलप्रपात के दूसरी तरफ यूकेलिप्टस के जंगल खुबसूरत प्राकृतिक दृश्य का निर्माण करते हैं। ये जगह स्थानीय लोगों के लिए पिकनिक स्पाट के रूप में लोकप्रिय है।

5. संतघाट, परमहंस आश्रम - घुंघरा जलप्रपात के बिल्कुल पास ही है संत घाट, परमहंस आश्रम। नर्मदा की बिल्कुल शांत लहरे, सामने छोटी सी खूबसूरत पहाड़ी और पहाड़ी पर गिनती के दो चार घर कुछ ऐसा ही खूबसूरत नजारा है संत घाट का प्रकृति के मौन के निहारने वालों के लिए जबलपुर में शायद इससे अच्छी जगह हो ही नहीं सकती। भागदौड़ एवं कोलाहल से

दूर यदि कुछ समय चाहते हैं तो जरूर जायें। मन को बिल्कुल शांत कर देने वाला यह स्थल आपको बिल्कुल निराश नहीं करेगा।

7. रानी दुर्गावती का किला मदन महल - जमीन से लगभग 500 मीटर ऊंचे मदन महल की पहाड़ी पर बना यह किला काफी पुराना माना जाता है। यह पहाड़ी पर गौंड राजा मदन शाह द्वारा एक चौकी बनवायी गई थी। इसका इस्तेमाल सेना अवलोकन पोस्ट के रूप में किया जाता रहा होगा। शायद इस भवन में दो खंड थे। वर्तमान में इस किले के अवशेष ही बचे हैं जिनका रखरखाव भारतीय पुरातत्व संस्थान द्वारा किया जाता है। इस किले की छतों की छपाई में सुंदर चित्रकारी है। माना जाता है, इस महल में कई गुम सुरंगे भी है जो इस किले को चौसठ योगिनी मंदिर से जोड़ती है। यह अत्यंत साधारण संयम है परंतु गौड़ राजाओं के समय इस राज्य की वैभवता बहुत थी। ऐसा बताया जाता है कि इस किले के खजाने को मुगल शासकों ने लूट लिया था। गढ़ा-मंडला में आज भी एक दोहा प्रचलित है - ''मदन महल की छांव में, दो टोंगों के बीच। जमा गड़ी नौ लाख की, दो सोने की ईंट।।''

8. बैलेंसिग रॉक - रानी दुर्गावती किला के बिल्कुल समीप मदन महल की पहाड़ी पर स्थित है बैलेंसिग राक। कई भूकंप के झटकों के बावजूद आज तक यह चट्टान अपनी जगह पर जस का तस टिका हुआ है। लोगों का मानना है कि इस क्षेत्र पर माँ शारदा की कृपा है। विज्ञान की रुचि रखने वालों के लिए यह काफी रोचक स्थल है तथा गुरुत्व केंद्र का आदर्श उदाहरण भी। हलांकि शोधकर्ता आज तक इसकी खुबियों को जानने के प्रयास में लगें है। हर साल यहां पर हजारों विदेशी पर्यटक भी आते हैं।

9. डुमना नेचर रिजर्व - डुमना नेचर रिजर्व जबलपुर शहर से 10 किमी दूर है। प्रकृति और वन्य जीवों में रुचि रखने वालों के यह एक आदर्श जगह हो सकती है। डुमना एयरपोर्ट के रास्ते में पड़ने वाला यह रिजव 1058 हेक्टेयर के भूभाग पर फैला हुआ है। अगर आप जंगल की सैर पर निकलेंगे तो आपको कई तरह के जानवर देखने को मिलेंगे। हालांकि इसके लिए आपको वन्य विभाग के अधिकारियों की अनुमति लेनी पड़ेगी। कई प्रजाति के पक्षियों के अलावा यहां हिरन, जंगली सुअर, सियार, चीनल, साही और बंदर जैसे जीव आसानी से दिख जाते हैं। यहां पर एक कृत्रिम जलप्रपात भी है। डुमना नेचर रिजर्व परिवार के साथ घूमने और पिकनिक मनाने का एक बेहतरीन स्थान है। इस जगह को और बेहतर बनाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार ने यहां ट्रेकिंग, फिशिंग और जंगल में कैंप की सुविधा भी मुहैया कराई है। यहां पर ट्रवाय ट्रेन में सफर का आनंद ले सकते हैं। इस नेचर रिजर्व में एक बहुत बड़ा झील है जिसे खण्डारी झील कहा जाता है, इसमें मगरमच्छ एवं घडिंयाल जैसे खतरनाक जलीय जीव रहते हैं इसलिए इस झील में तैराकी करना पूरी तरह से प्रतिबंधित है फिर भी यह अत्यंत विशाल एवं शांत झील बेहद खूबसूरत प्राकृतिक छटा का निर्माण करती है।

9. परियट डैंम - जबलपुर शहर से लगभग 25 किमी दूर परियट नदी पर बना यह छोटा सा बांध अपने यहां पर मगरमच्छों की सघन आबादी की वजह से जाना जाता है। परियट नदी एवं इसके आसपास के क्षेत्रों में मगरमच्छ बिल्कुल स्वतंत्र रूप से उछलकूद करते देखे जा सकते हैं। रिपोर्ट्स की माने तो यहां पर लगभग 3000 से ज्यादा मगरमच्छ रहते हैं।

10. निदान जलप्रपात - जबलपुर से लगभग 45 किमी दूर कटंगी क्षेत्र में स्थित यह जलप्रपात प्राकृतिक खूबसूरती का एक अद्भुत उदाहरण है। चारों तरफ पहाड़ियों एवं घने जंगलों से घिरा यह जलप्रपात आपकी शारीरिक एवं मानसिक थकान को चुटकियों में मिटा देता है। यहां पर लोग प्रायः पिकनिक मनाने आया करते हैं। यह जलप्रपात मानसून के समय में अपनी खूबसूरती के उच्चतम अवस्था में होता है।

11. भंवरताल गार्डन - जबलपुर शहर के बिल्कुल मध्य में स्थित यह गार्डन जबलपुर शहर की शान कहा जाता है। इस गार्डन

की सजावट, खूबसूरती, रखरखाव एवं सफाई वास्तव में प्रशंसनीय है। इस गार्डन में म्यूजिकल फांउटेन, कृत्रिम झील, पाथवे, सिटिंग एरिया बने हुए है। इस पार्क में वॉच टावर तथा स्केंटिग एरिया भी है। पार्क में सुबह के समय कोई प्रवेश शुल्क नहीं लगता है जबकि शाम में प्रति व्यक्ति रूपये 10/- का प्रवेश शुल्क देय है।

12. रानी दुर्गावती संग्रहालय - रानी दुर्गावती संग्रहालय भवरताल गार्डन के बिल्कुल बगल में स्थित है। इसका भवन आकर्षक, द्विमंजिला एवं संग्रहालय विज्ञान के निर्दिष्ट सिद्धांतों व आवश्यकता के अनुरूप है। संग्रहालय में भूतल पर चार दीर्घा एवं एक कला वीथिका आडोटिरियम हाल है। प्रथम तल पर भी चार दीर्घायें है। इन दीर्घाओं के शेव दीर्घा, वैष्णव दीर्घा, जैन दीर्घा, उत्खनन अभिलेख दीर्घा, मुद्रा दीर्घा एवं आदिवासी कला दीर्घा है एक गलियारे में चौसठ योगिनियों के छायाचित्र प्रदर्शित है। इन दीर्घाओं में संग्रहालय के संग्रह की चयनित कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है, शेष कलाकृतियों आरक्षित संग्रह के रूप में रखी गई है। आरक्षित संग्रह से पुनः चयनित कर अपेक्षाकृत कम महत्व की प्रस्तर कलाकृतियों को संग्रहालय प्रागंण के उद्यान में मुक्ताकाल प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय में कुल 6163 पशु अवशेष संग्रहीत है। यह संग्रहालय सुबह प्रातः से शाम तक खुला रहता है।

13. रानी दुर्गावती समाधि स्थल - जबलपुर स्थित जी.एस.टी मुख्यालय से लगभग 20 किलोमीटर दूर स्थित यह समाधि रानी दुर्गावती की बलिदान भूमी के रूप में भी जानी जाती है। रानी दुर्गावती का संबंध गोंड जनजाति से है, जिनका विवाह गोंड शासक संग्राम सिंह के बड़े पुत्र दलपत शाह के साथ सन 1542 में हुआ था। सन् 1550 में उनके पति दलपत शाह की मृत्यु के पश्चात शासन की बागडोर स्वयं रानी दुर्गावती ने संभाली। परंतु इसी समय अकबर द्वारा अपने राज्य का विस्तार किया जा रहा था। अकबर के सूबेदार आसिफ खाँ ने 50000 सैनिकों के साथ रानी दुर्गावती को युद्ध के लिए चुनौती दिया। आसिफ खाँ की सेना प्रशिक्षित एवं अनुभवी थी जबकि रानी दुर्गावती की सेना के अधिकांश सैनिक अप्रशिक्षित एवं अनुभवहीन थे। बावजूद इसके नर्रई नाले के पास हुए भीषण युद्ध के पहले दिन आसिफ खां को पीछे हटना पड़ा। युद्ध के दुसरे दिन 24 जून 1564 को रानी दुर्गावती को चोट आई और उन्होंने अपने आप को असुरक्षित पाया, जिसके कारण उन्होंने अपनी कटार से अपने आप पर आत्मघात करके अपने प्राण को त्याग दिया। इसी स्थल पर उनकी समाधि बनायी गयी है। यहां पर छोटा सा गार्डन बना हुआ है। जहां पर आपको रानी दुर्गावती की एक विशाल मूर्ति भी देखने को मिलती है। रोड के एक तरफ रानी दुर्गावती की समाधि स्थित है और रोड की दूसरी तरफ रानी दुर्गावती के पुत्र वीर नारायण जी की मूर्ति देखने के लिए मिलती है। मूर्ति के पास जाने के लिए एक छोटा सा पुल बना हुआ है और बरसात के समय इस पुल में पानी बहता है, जो बहुत ही खुबसूरत लगता है। बरसात के समय यहां पर चारों तरफ हरियाली रहती है ऐसे में यहां का जंगल और भी खूबसूरत हो जाता है। 26 जनवरी के समय इस जगह पर मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से लोग आते हैं और यह मेला आठ दिनों तक लगता है। इस मेले में आप भी घूमने के लिए जा सकते हैं। 26 जनवरी के समय रानी दुर्गावती की समाधि में सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहते हैं। आप यहां पर अपने दोस्तों और फैमिली मेयर्स के साथ आ सकते हैं।

14. बरगी डैम - रानी दुर्गावती समाधि स्थल से लगभग 14 किलोमीटर दूर स्थित है बरगी डैम। बरगी पहाड़ियों के बीच स्थित यह एक मानव निर्मित झील है। नर्मदा एवं उसकी सहायक नदियों का जल संग्रहित करके इस डैम को निर्मित किया गया है। मुख्य रूप से इस योजना का संबंध पनबिजली, सिंचाई एवं मछली पालन से है। परंतु यहां पर पर्यटन को भी काफी आकर्षक ढंग से बढ़ाया जा रहा है। मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा यहां पर रेस्टोरेंट एवं होटल का संचालन किया जाता है।

15. नंदिकेश्वर मंदिर, बरगी - बरगी के साथ कुछ दूरी पर स्थित यह मंदिर आदिदेव शिव को समर्पित है। यह मंदिर बरगी डैम से लगी हुई एक पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर के मुख्य द्वार तक चारपहिया वाहन से पहुंचा जा सकता है। यह मंदिर काफी शांत क्षेत्र में अवस्थित होने के कारण यहां पर किसी भी प्रकार की भीड़ नहीं रहती। ऐसे में यहां पर एक अलग अध्यात्मिक शांति

महसूस की जा सकती है। मंदिर के ऊंचे प्रांगण से बरगी डेम एवं आसपास के पहाड़ियों का अवलोकन आपके मन को एक शांति एवं ऊर्जा प्रदान करता है।मानसून के समय यहां पर जाना अतिउपयुक्त रहता है।

जबलपुर के आस-पास के अन्य महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल

डिडोंरी - डिंडोरी मध्यप्रदेश का एक आदिवासी बाहुल्य जिला है। यदि आप आदिवासी जीवन को नजदीक से देखना एवं समझना चाहते हैं तो आपको यहां एक बार जरूर आना चाहिए। यहां के वनों में साल के सदाबाहार वृक्ष पाये जाते हैं, जिन्हें एशिया का सबसे अच्छा सदाबाहार बन माना जाता है।इन वनों की हरियाली एवं खूबसूरती देखते ही बनती है। लगभग पूरा क्षेत्र पहाड़ों से घिरा होने के कारण इन वनों का दृश्य और भी विहंगम हो जाता है। इस क्षेत्र में भ्रमण किये जाने योग्य कुछ स्थल निम्न प्रकार है।

राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान, घुघुवा - डिंडौरी जिले के शहपुरा तहसील में अवस्थित यह राष्ट्रीय उद्यान मध्यप्रदेश का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान है। यहां पर सहेज कर रखे गये जीवाश्म अति प्राचीन दुर्लभ है।यहां पर लगभग 6.5 करोड़ वर्ष पुराने पेड़-पौधों के जीवाश्म सुरक्षित किये गये हैं। यहां पर आप डायनासोर के अंडे एवम अति प्राचीन सिप एवं घोंघों के जीवाश्म का भी अवलोकन कर सकते हैं। वैज्ञानिक शोधों से यह जानकारी प्राप्त होती है कि यहां पर रखे गये कई जीवाश्म पैंजिया के लरिसिया एवं गोंडवाना लैंड से विभक्त होने के काल से संबंधित है।घुघवा के जीवाश्म पेड़, पौधों, पत्ती, फल, फूल एवं बीजों से संबंधित है। घुघवा में अभी तक 31 जेनेरा और 18 फैमिली के जीवाश्म खोजे जा चुके हैं। इस राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान की जबलपुर से दूरी लगभग 85 किलोमीटर के आसपास है।

कारोपानी श्याम-मृग (BLACK BUCK) संरक्षित क्षेत्र - कारोपानी एक वनग्राम है जो कि जबलपुर से लगभग 65 किलोमीटर तथा डिंडोरी जिला मुख्यालय से लगभग 18 किलोमीटर दूर है। यह क्षेत्र मानव एवं जंगली जीवों के सह-अस्तित्व के एक बेहतरीन उदाहरण है।यहां की पहाड़ियों पर काले हिरण एवं चित्तीदार हिरण खुले में स्वतंत्र रूप से विचरण करते हुये किसी भी समय देखे जा सकते हैं।यहां पर हिरणों के संरक्षण का श्रेय ग्रामीणों को दिया जाना चाहिए।

देवनाला जल-प्रपात - यह जल-प्रपात मंडला - डिंडौरी मुख्य मार्ग 14 किलोमीटर दूर है। इस स्थान पर नाले का पानी पहाड़ी के नीचे बने शिवलिंग पर सीधे तौर पर गिरता है। इस जलप्रपात में पूरे साल पानी रहता है। यह स्थान बिलकुल शांत है एवं यहां पर किसी प्रकार भीड़ नहीं होती है। एकांत में प्रकृति में रम जाने वाले लोगों के लिए यह स्थान किसी स्वर्ग से कम नहीं है। यहां पर पहाड़ की खूबसूरती एवं झरने की कलकलाहट आपके हृदय में एक नयी स्फूर्ती को जाग्रत करती है।

चांडा एवं सिलपिड़ी गांव - ग्रामीण पर्यटन स्थल - मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र में रूप में बढ़ावा दिये जाने वाले ये गांव जबलपुर से लगभग 105 किलोमीटर दूर स्थित है। यह गांव मध्यप्रदेश के ग्रामीण पर्यटन का एक बहुत ही बेहतरीन एवं महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह गांव बिल्कुल सघन वनों एवं चारो तरफ पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इन गांवों में आप बैगा जनजाति के सामाजिक जीवन, नृत्य, खान-पान इत्यादि से परिचित हो सकते हैं। वास्तव में ये गांव एवं आस-पास के क्षेत्र प्राकृतिक एवं पारंपरिक रूप से बैगा जनजातियां के निवास स्थल है। जनजाति, जिन्हें द्रविड़ जाति से संबंधित माना जाता है, अभी भी अपने जीवन में अति प्राचीन एवं पारंपरिक तौर तरीकों को अपनाते हैं। इन्हें राष्ट्रीय मानव जनजाति भी घोषित किया गया है। बैगा जनजाति की आम जीवन मुख्य धारा के जीवन से बिल्कुल अलग है। इनकी आजीविका, खान-पान, भाषा, शादी-विवाह से संबंधित रीति-रिवाज, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन यहां तक की इनकी पोषाक भी इन्हें अन्य लोगों से बिल्कुल अलग करती है। इनकी चिकित्सा पद्धति पूरी तरह से जंगल में उपलब्ध जड़ी-बूटी, पेड़ों की छाल, पत्तियों पर आधरित है।ग्रामीण एवं जनजातीय संस्कृति में रुचि रखने वाले हजारों पर्यटक हर साल इन क्षेत्रों में भ्रमण करने

आते हैं।

बैगा - टैटू - बैगा जनजाति की महिलाओं के जीवन में ''गोदना कला'' का विशेष महत्व है जिसे बैगा टैटू भी कहा जाता है। इसकी विशिष्टता यह है कि बैगा महिलाएं अपने शरीर के लगभग पूरे हिस्से पर विभिन्न प्रकार के टैटू गुदवाती है। टैटू गुदवाने की यह प्रक्रिया 08 साल की उम्र में शुरु करके लगभग पूरे जीवन चलती-रहती है।इसके शरीर के टैटू इनके जीवन के अलग-अलग कालखंड में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाते हैं। जनजातीय टैटू सामूहिक स्मृति मूल मिथकों स्थानीय धार्मिक मान्याताओं, लोककथाओं, पूर्वजों की पूजा, प्राकृतिक पर्यावरण इत्यादि के आधार पर जोड़ी गयी स्मृतियों के आधार पर बनाये जाते हैं। बैगा जनजाति के बीच प्रचलित मान्यता के अनुसार ये टैटू आदिपुरुष शिव एवं पार्वती के आशीर्वाद से संबंधित है।

बैगा नृत्य - बैगा के करमा, परघौनी, थोड़ी पैठाई और फाग प्रमुख नृत्य है। करमा नृत्य में बैगा अपने 'कर्म' को नृत्य-गीत के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। इसी कारण इस नृत्य करमा कहा जाता है। विजयादशमी से वर्षा के प्रारंभ होने क चलने वाला यह नृत्य बैगा युवक-युवतियां टोली बनाकर एक दूसरे के गांव जा जाकर करते हैं। घोड़ी पैठाई नृत्य दशहरे के दिन से शुरु होकर दिसंबर के अंत तक किया जाने वाला नृत्य है। सभी प्रकार के करमा में नृत्य करने की शैली एक सी ही होती है सिर्फ गीत गाने में अंतर होता है, उसके लय के उतार चढ़ाव के साथ ही ताल मिलाकर नृत्य किया जाता है।

शिष्टताएं जो बैगाओं का विशेष बनाती है जैसे की उनका जादू का पंथ, बेवर या खेती करने का तरीका, चिकित्सा के प्राचीन रीति-रिवाज, उनका दुर्जय शिकार करने का कौशल और उनकी प्रसिद्ध कहानी कहने की क्षमता यह सब भले ही नए काल में कम से कम हो गयी है लेकिन सभी बाधाओं के बावजूद बैगा अभी भी इन सभी विशेषताओं को बनाए रखने में कामयाब रहे हैं।

तामिया हिल्स और पातालकोट, छिंदवाड़ा - छिंदवाड़ा से लगभग 60 किलोमीटर दूर तामिया हिल्स अपनी प्राकृतिक खूबसूरती, आदिवासी जनजीवन एवं प्राकृतिक औषधियों के लिए जाना जाता है। पातालकोट एवं इसके आस-पास के क्षेत्रों में पर्यटन का सबसे बेहतर समय मानसून का समय माना जाता है। मानसून में यहां के जंगल, पहाड़ एवं घास के मैदान अपने खूबसूरती के चरम स्तर पर होते हैं। यहां पर भ्रमण के लिए निम्नलिखित स्थल है।

पातालकोट व्यू प्वाइंट - समुद्र तल से लगभग 1200 से 1500 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह स्थल अत्यंत सुंदर प्राकृतिक खूबसूरती से भरा हुआ है।यहां पर अश्वनाल की आकृति के पहाड़ी घाटी पर पर व्यू प्वाइंट बना हुआ है, कुछ पौराणिक कथाओं की माने तो यह पाताल का प्रवेश द्वारा माना जाता है।यहां पर सुबह से शाम तक सैलानी आते रहते हैं।हालांकि सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय यहां पर होना एक अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करता है। पातालकोट का कुछ क्षेत्र इतनी गहराई में बसा हुआ है कि वहां पर सूरज की रोशनी तक नहीं जा पाती और हमेशा अंधेरा रहता है। पातालकोट व्यू प्वाइंट से आप जहां तक नजर दौड़ायेंगे चारों तरफ हरियाली एवं खूबसूरत पहाड़ियां ही नजर आयेगी।

चिमटीपुर व्यू प्वाइंट - चिमटीपुर व्यूप्वाइंट अत्यंत रमणीय स्थल है। यहां मानसून के समय में दूर-दूर तक बादलों से घिरे पहाड़ों का नजारा आपके मन को मोह लेगा। इस व्यू-प्वाइंट पर दूर-दूर तक फैले हरे-भरे घास का मैदान हैं, जो किसी स्वर्ग से कम नहीं। यह क्षेत्र लगभग-लगभग निर्जन क्षेत्र है।यहां पर पर्यटक आते तो हैं पर ज्यादा भीड़ से पूरी तरह से मुक्त है। यहां पर अपने परिवार एवं मित्रों के साथ जाना एवं पिकनिक मनाना आपको काफी सुखद अनुभव प्रदान करता है।

कारेआम व्यू प्वाइंट एवं क्षेत्र - कारेआम पातालाकोट क्षेत्र के अंतिम गांव के रूप में जाना जाता है, जो कि समुद्र तल से लगभग 2000-3000 फीट की गहराई पर है। इसके आगे जाने के लिए कोई व्यवस्थित मार्ग उपलब्ध नहीं है।इसके आगे

जाने के लिए यहां के स्थानीय गाईड की सहायता लेनी पड़ती है, जो यहां के जंगलों एवं वनस्पतियों से भलीभांति परिचित होते हैं। यहां पर आम के बिल्कुल काले घने प्राकृतिक वन होने की वजह से ही इस जगह का नाम कारेआम (कालेआम) पड़ा है। यहां पर दिन में मुश्किल से तीन-चार घण्टे की धूप मिलती है कुछ क्षेत्र तो इतनी गहराई में है कि वहां साल भर में दो से तीन महीने तक ही सूरज की किरणे मात्र कुछ घंटों के लिए ही पहुंच पाती है। इस गांव में मुश्किल से 15-20 परिवार रहते हैं, जो मुख्यतः भारिया जनजाति से संबंध रखते हैं। इनकी संस्कृति, खान-पान इत्यादि को बचाये रखने के लिए इस क्षेत्र एवं जनजाति की मध्यप्रदेश सरकार एवं कई गैर सरकारी संगठनों द्वारा संरक्षण एवं सहायता प्रदान किये जाते हैं।

पातालकोट की रसोई - यदि आप तामिया एवं पातालकोट क्षेत्र में पर्यटन का आनंद ले रहे हैं तो पातालकोट की रसोई जरूर जायें। यहां पर आप जनजातीय पारंपरिक व्यंजनों का भरपूर आनंद ले सकते हैं। मक्के के खेतों के बीच यह पातालकोट की रसोई आपको किसी भी रुप में निराश नहीं करेगी। पातालकोट की रसोई गैर सरकारी संगठनों एवं वहां की स्थानीय जनजातियों के आपसी सहयोग से चलायी जाती है, जिनका मुख्य उद्देश्य पर्यटकों को स्थानीय जनजातीय खान-पान में अवगत कराना है। पातालकोट के जंगल में कई तरह की जड़ी-बूटियां एवं औषधीय पेड़-पौधे पाये जाते हैं। वहां रहने वाले स्थानीय लोग इनका उपयोग अपनी चिकित्सकीय जरूरतों के रुप में करते हैं। हालांकि बदलते समय एवं परिवेश के साथ जब जड़ी-बूटी एवं अन्य औषधियों की उपलब्धता एवं उनके प्रति जानकारी में कमी आयी है। बावजूद इसके कुछ स्थानीय लोगों को इनकी भरपूर जानकारी है और वे इनके संरक्षण में प्रयासरत भी है।

छोड़ दे।

रोहित कुमार सोलाखे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

ऐसा नहीं है कि फूल मुस्कुराना छोड़ दे,
कलियाँ न खिले, भँवरे गुनगुनाना छोड़ दे।
मैं जीने की कोशिश कर सकता हूँ,
शर्त ये है तू याद आना छोड़ दे।
फिर से महक रही है खुशबु उम्मीद की,
थोड़ी देर दिल को समझाना छोड़ दे।
हर ख्वाब आँसुओं के साथ बह जाएगा,
आँखों में अपनी तकदीर बसाना छोड़ दे।
एक लहर मिटा देगी समंदर की,
साहिल पर रेत के घर बनाना छोड़ दे।
जिंदगी कहती है कोई हमसफ़र ढूँढ लें,
दिल कहता है दिल लगाना छोड़ दें।

रेटिंग की दुनिया

आयुष सक्सेना
आशुलिपिक

यह ऐसे समय की कहानी है जब लोगों को उनके सोशल मीडिया रेटिंग के आधार पर जज किया जाता है, यानी कि सभी लोग अपने हर एक मुलाकात के बाद जो एक दूसरे को सोशल मीडिया पर रेट करते हैं इस आधार पर उनकी रेटिंग तय होती है। आप किसी को भी एक से लेकर पांच के बीच में रेट कर सकते हैं सुनने में यह चीज बहुत ही अजीब सी लग सकती है। लेकिन अब हमें ऐसी कुछ झलकियां चीन में देखने को मिल रही है जहां सोशल क्रेडिट सिस्टम नाम की एक सर्विस देखने को मिलती है। इसकी शुरुआत होती है, श्रुति अपने भाई के साथ रहती है एक सुबह श्रुति तैयार होकर जॉगिंग करने अपने घर से निकलती है तो दौड़ते समय भी उसके हाथ में उसका फोन होता है और वह अपने फोन चला रही होती है उस जगह और भी लोग जॉगिंग कर रहे होते हैं और सबके हाथ में फोन है वहां सब एक दूसरे को देखते हैं एवं एक दूसरे की एप पर रेटिंग करने लगते हैं। श्रुति जॉगिंग करने के बाद घर आकर सबसे पहले आईने के सामने खड़े होकर नकली हंसी हंसने की प्रैक्टिस करती है उसके बाद वह एक कैफे में जाती है। कैफे में भी सारे लोग अपने-अपने फोन में ही व्यस्त रहते हैं सबके हाथ में अपना फोन है। श्रुति जब कॉफी वाले को मुस्कुराते हुए धन्यवाद करती है उसके बाद दोनों एक दूसरे को एप में रेट करते है। कैफे का वातावरण काफी अजीब सा रहता है, सब कुछ वहां नकली लगता है ऐसा लगता है लोग एक्टिंग कर रहे हैं सबके चेहरे पर नकली सी हंसी है और सब के सब एक दूसरे के बारे में से अच्छी बातें बोल रहे है ताकि कोई उन्हें कम रेटिंग ना दे, जिससे उनकी रेटिंग खराब हो जाए। श्रुति का काफी पसंद नहीं है लेकिन अपनी रेटिंग्स को बढ़ाने के लिए कॉफी पीने से पहले वह उसकी तस्वीर लेती है उसको ऑनलाइन पोस्ट करती है जिसमें उसे बढ़िया रेटिंग मिलती है।

उसके बाद जब श्रुति अपने दफ्तर जा रही होती है तभी उसकी मुलाकात लिफ्ट में एक औरत से होती है और फिर दोनों बातें करने लगते हैं और उनकी बातें और उनकी हंसी बिल्कुल ही नकली होती है एवं दोनों एक दूसरे को इसके बाद अच्छा रेट कर देते हैं। जैसे ही श्रुति अपने दफ्तर में पहुंचती है, तभी उसके पास उसका एक सहकर्मी आता है, जो उसे जूस ऑफर करता है और तभी श्रुति देखती है कि उस आदमी की रेटिंग तो सिर्फ 3.1 है और ऑफिस के बाकी लोग बहुत ही आश्चर्य होकर श्रुति को देख रहे है कि आखिर वह एक 3.1 जैसे रेटिंग वाले आदमी से क्यों बात कर रही है तभी श्रुति का एक सहकर्मी उसे बताता है कि उसे आदमी का अभी तलाक हुआ और सारे लोग ने उसे डाउनग्रेड कर दिया है, अब यह आदमी सबको मक्खन लगाने की कोशिश कर रहा है ताकि इसकी रेटिंग कम से कम 4.5 होनी चाहिए, पर श्रुति की रेटिंग 4.2 है। श्रुति को डर है कहीं यह घर उसके हाथों में ना निकल जाए इसलिए वह जल्दी अपनी रेटिंग बढ़ाना चाहती है जिसके लिए वह एक रेटिंग विशेषज्ञ से मिलती है वह उसे कुछ उपाय बताता है जैसे गरीबों को खाना एवं कंबल वितरित करके सोशल मीडिया में पोस्ट करने से 4.5 रेटिंग 1 से 2 साल में पहुंच जाएगी विशेषज्ञ श्रुति को एक और उपाय बताता है कि उसे बहुत सारे लोग जिनकी रेटिंग 4.5 से ऊपर है वह अच्छी रेटिंग दे तो उसकी रेटिंग बढ़ सकती है।

इसी बीच श्रुति को उसके बचपन की दोस्त माया का फोन आता है, जिसकी रेटिंग 4.8 रहती है वह उस अपनी शादी में बुलाती है। माया का व्यवहार श्रुति के प्रति कभी कुछ खास ना था, लेकिन अपनी रेटिंग्स बढ़ाने के कारण श्रुति ने शादी में जाने के लिए हा कर देती है और उसे लगा कि अगर मैं शादी में जाऊंगी तो वहां मौजूद हाई रेटिंग वाले लोग को अगर मैं इंप्रेस कर दूं तो वह सब मुझे फाइव स्टार देंगे और मेरा काम बन जाएगा। इसके लिए वह एक शादी में बोलने के लिए एक स्पीच तैयार कर लेती है उसे स्पीच में कुछ इमोशनल लाइन लिखनी है जिसके बोलते समय वह नकली आंसू निकालने की कोशिश करती है और जिसमें सारी झूठी बातें होती है। जिस दिन श्रुति शादी में जा रही होती है तो उसका भाई कहता है कि

माया तुम्हारी दोस्त कब से हो गई है लेकिन वह अपने भाई की बात नहीं सुनती और इस कारण श्रुति की अपने भाई के साथ बहस हो जाती है, जिस वजह से उसकी गाड़ी छूट जाती है एवं गाड़ी वाला और उसका भाई उसे डाउनग्रेड कर देता है उसके बाद वह जब जल्दबाजी में नीचे जा रही होती है तो वह अचानक एक औरत से टकरा जाती है उस औरत की 4.8 रेटिंग होती है वह भी श्रुति को डाउनग्रेड कर देती है इसके बाद जब वह गुस्से में रहती है तो उसकी दूसरे कार ड्राइवर से भी झगड़ा हो जाता है जिससे वह भी श्रुति का डाउनग्रेड कर देता है। जब वह एयरपोर्ट के काउंटर में पहुंचती है तो उसकी दूसरे कार ड्राइवर से भी झगड़ा हो जाता है जिससे वह भी श्रुति को डाउनग्रेड कर देता है। जब वह एयरपोर्ट के कांउटर में पहुंचती है तो उसकी प्लाइट कैंसिल हो जाती है श्रुति कहती है कि उसे किसी भी कीमत पर जाना है क्योंकि उसकी मित्र की शादी है इसके बाद वहां मौजूद स्टाफ बताते हैं कि उसे एक स्टैंड बाय सीट मिल सकती है लेकिन उसके लिए 4.2 रेटिंग होनी चाहिए लेकिन इतने लोगों के डाउनग्रेड करने के बाद श्रुति के रेटिंग 4.0 हो जाती है। श्रुति उनसे बिनती करने लगती है कि मेरी रेटिंग अभी-अभी खराब हुई है कृपया मुझे जाने दीजिए लेकिन वह श्रुति की बात नहीं मानते जिससे वह और गुस्सा हो जाती है और वहां पर खड़े लोगों पर चिल्लाने लगती है तो वहां खड़े सभी लोग उसे और डाउनग्रेड कर देते है जिससे श्रुति की रेटिंग 3.7 हो जाती है।

इस कारण उसे शादी में पहुंचने के लिए कोई गाड़ी में लिफ्ट नहीं देता तभी एक आदमी रेटिंग 1.4 होती है वह उसे लिफ्ट का प्रस्ताव देता है श्रुति को बेमन से उस गाड़ी में बैठना पड़ता है, लेकिन जब वह उसे आदमी से बात करती है तो वह उसे बताता है कि एक समय था जब वह भी रेटिंग के पीछे भागा करता था लेकिन थोड़े दिन पहले उसकी पत्नी की तबीयत खराब हो जाती है और एक अच्छे हॉस्पिटल में जाना पड़ता है, जहां पर एक ही बेड खाली था और उसकी पत्नी की रेटिंग 4.1 थी लेकिन वह बेड किसी 4.4 वाले को मिल गया है जिस वजह से उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है। उसके बाद उसे समझ आ गया कि यह सारी रेटिंग जो हैं, नकली है और उसके बाद उसने नकली जिंदगी जीना बंद कर दिया, उसके मन में जो आता वह वही कहता जिसको जो बोलना होता वह सीधा मुंह पर बोल देता है और जिस कारण लोगों ने उसे इतनी कम रेटिंग दी है यह सब सुनकर श्रुति को उस पर थोड़ी हमदर्दी होती है, लेकिन तभी उसकी दोस्त माया का कॉल आता है कि तुम्हें शादी में आने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि तुम अगर आए तो मेरी बेइज़्ज़ती हो जाएगी क्योंकि तुम्हारी रेटिंग बहुत ही कम हो गई है लेकिन श्रुति इस बात को नहीं मानती और वह कहती वह कैसे भी शादी में आएगी लेकिन यह बात सुनने के बाद माया का गुस्सा और भी बढ़ जाती है और उसका फोन काट देती है और उसे और कम रेटिंग दे देती है।

जब श्रुति शादी के स्थान पर पहुंचती है तो गार्ड उसे अंदर नहीं घुसने देता उसके बाद वह अपना सामान उठाकर पीछे के रास्ते से जा रही होती है जिस वजह से वो कीचड़ में गिर जाती है और पूरे कीचड़ उसके कपड़ों में लग जाता है, उससे काफी गंध आ रही होती है पर वह चुपचाप कैसे भी माया की शादी में पहुंच जाती है वहां के सारे लोग उसको देखकर बिल्कुल आश्चर्यचकित हो जाते हैं लेकिन श्रुति को इस बात का कोई भी फर्क नहीं पड़ता और वह माइक छीन कर अपनी स्पीच देना शुरू कर देती है तभी वहां गार्ड आ जाते है और उसे बाहर निकाल कर फेक देता है और उसकी इस हरकतों को देखकर उसे वहां मौजूद सारे लोग डाउनग्रेड कर देते हैं। इसके बाद पुलिस उसे जेल में डाल देती है। श्रुति वहां जेल में रो रही होती है और उससे कुछ महसूस होता है जिसके बाद वह रोते-रोते हंसने लगती है। इस हंसी को देखकर लगता है यह एकदम असली हंसी है यह वह हंसी नहीं जो उसे आईने को देख करके प्रैक्टिस करके सीख गई हो और यहां तक की श्रुति का रोना भी असली है जो उस रोने से बिल्कुल अलग था, जो स्पीच में वह प्रैक्टिस कर रही थी।

इसके बाद श्रुति जेल में बंद दूसरे कैदी की तरफ देखकर चिल्लाने लगती है एवं दूसरा कैदी भी उसे कैदी भी उसे देखकर चिल्लाने लगता, श्रुति को ऐसा महसूस हो रहा था कि अब उस पर किसी तरीके से पाबंदी नहीं है। उससे कुछ भी नहीं सोचा कि उसे कोई डाउनग्रेड कर देगा या उसकी रेटिंग खराब हो जाएगी। वह जो चाहे जैसा चाहे वहां पर बोल सकती है यानी इस जेल में वह उस दुनिया से ज्यादा आजाद है।

आप उस नदी में दोबारा नहीं उतर सकते

तान्या
आशुलिपिक

''परिवर्तन ही संसार का नियम है''

गीता का यह उपदेश जीवन शाश्वत सत्य को बताता है जो कि 'परिवर्तन'। परिवर्तन ही है जो शाश्वत बना रहेगा। दुनिया में न केवल व्यक्ति अपितु हर प्राणी, वस्तु और तो और स्वयं ब्रहमाण्ड भी समय के साथ परिवर्तित हो जा रहा है तभी तो कहा गया है कि आप उसी नदी में दोबारा नहीं उतर सकते।

क्योंकि जब आप दुबारा उस नदी में प्रवेश करते हैं तो आप न वो व्यक्ति रहते हैं जो पहले थे ना ही वो नदी समान रहती है। अतः शाब्दिक अर्थ भी यही परिवर्तन के नियम को बताता है।

सर्वप्रथम हम व्यक्ति विशेष के जीवन चक्र पर गौर करते हैं व्यक्ति अपने जीवन में बालावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक का सफर पूरा करता है और अपनी हर अवस्था में वह पुराने अनुभवों व नई परिस्थितियों से सीखकर अपने व्यक्तित्व का निर्माण करता है। अतः हर स्थिति के साथ व्यक्ति में भी परिवर्तन होता है।

'जीवन पीछे को नहीं आगे बढ़ता नित्य, नहीं पुरातन से कभी सजे नया साहित्य'

व्यक्ति के साथ-साथ उसके मूल्यों व संबंधों में परिवर्तन आता है। वह अपने आस-पास के वातावरण में सीख कर अपने मूल्यों का विकास करता है। साथ ही अपने रिश्तों में बदलाव का अनुभव करता है और वो रिश्ते जिनमें एक बार परिवर्तन आ जाता है पुनः वैसे ही रुप में रहे, यह संभव नहीं होता। रहीम जी के शब्दों में -

''रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ों चटकाय।
टूटे पे फिर न जुड़े, जुड़े गॉठ परि जाए।।''

ऐतिहासिक संदर्भ में देखे तो प्राचीन काल से आधुनिक काल तक निरंतर परिवर्तन देखने को मिला है। सभ्यताओं के विकास से लेकर विभिन्न राजवंशों के काल तक निरंतर परिवर्तन आया है। शासक व्यवस्था में भी बदलाव आया है। राजवंश से लोकतंत्र तक का सफर निरंतर परिवर्तन के कारण ही सभव हो पाया है।

इसी तरह राजनीति के संदर्भ में देखे तो हमारे राजनीतिक मूल्य हमेशा एक जैसे नहीं रह सकते। उनमें भी निरंतर परिवर्तन होता है तभी तो भारतीय संविधान एक जीवंत दस्तावेज है। समय के साथ विभिन्न संसाधनों के माध्यम से स्वयं का परिवर्तित किया है और तो और जनता की अपेक्षाओं में भी परिवर्तन आया है। जहाँ प्रारंभ में मांगे रोटी, कपड़ा व मकान तक सीमित थी आज यह इंटरनेट का अधिकार, निजता का अधिकार जैसे कई पहलुओं को शामिल कर रही है।

अर्थव्यवस्था में भी समय के साथ परिवर्तन आया है। समाजवाद से पूंजीवाद, पूंजीवाद व उदारीकरण से कोविड के समय संरक्षणवाद समय के साथ हुए अर्थव्यवस्था में परिवर्तन को ही दर्शाता है। गोरख पांडेय जी के शब्दों में -

''समय का पहिया चले रहे साथी
समय का पहिया चले
फौलादी घोड़ों की गति से

आग बरफ में जले रे साथी

समय का पहिया चल''

इसी तरह सुरक्षा संबंधी आयामों में भी परिवर्तन आया है। सुरक्षा संबंधी आयाम व हमारी प्रतिक्रिया भी एक समान नहीं हो सकती। साइबर युग के समय में हमें अपनी तैयारी में परिवर्तन जरूरी है।

अगर परिवर्तन न हो तो क्या होगा ? तो अगर नदी में निरंतर परिवर्तन न हो, अर्थात् यदि नदीं में बहाव न हो, तो वह ठहर जाएगा, तो उसका अस्तित्व बनाए रखने के लिए निरंतर परिवर्तन होना आवश्यक है।

यथा कोविड-19 के दौरान हमने अपनी दिनचर्या, काम करने के तरीकों में परिवर्तन लाया जो कि आवश्यक था। दोनों समय (कोविड के पहले व बाद) परिस्थितियाँ एक समान नहीं थी। अतः परिवर्तन आवश्यक है।

''अतीत हमें सिखा सकता है, हमारा पोषण कर सकता है लेकिन यह हमें बनाए नहीं रख सकता। जीवन का सार परिवर्तन है, और हमेशा आगे बढ़ना चाहिए अन्यथा आत्मा मुरझाकर मर जाएगी।''

****

कर्मयोग

रोहित यादव
निरीक्षक

एक मूर्तिकार था, मूर्तियां बनाता था। अपने बच्चे से भी कहता था ''बेटे तुम भी मूर्तियां बनाओ। बच्चा अपने पिता को कहने के अनुसार मूर्तिया बनाने लगा। पिता की मूर्तियां दो रूपये में और बेटे की मूर्तियां तीन रूपये में बिकी, फिर इसी तरह बेटे की मूर्तियां चार रूपये, फिर पांच रूपये, फिर 15 रूपये की बिकी पिता ने फिर कहा- बेटे ''बेटे ! इसमें यह सुधार करना चाहिए, यह ध्यान रखना चाहिए, अपने काम में ज्यादा से ज्यादा तन्मयता, दिलचस्पी और गहराई पैदा करनी चाहिए।''

बाप बेटे की समझा रहा था कि बेटा बाप पर झल्ला पड़ा, ''आप की मूर्तियां दो रूपये की बिकती है और आप है कि नुक्ताचीनी करते हैं।'' पिता सर पर हाथ रखकर बैठ गया, बोला ''बेटे ! अब तेरी उन्नती का रास्ता बंद हो गया। मैं चाहता था कि 15 रूपये की मूर्तियां 25 रूपये की क्यों नहीं बिके ? - लेकिन अब वे 15 से 24 में बिकेगी, फिर 23 फिर 12 में बिकेगी।''

क्योंकि तुने समझा कि अब इस काम में मन लगाने की दिलचस्पी लेने की जरूरत नहीं है और ''जो कुछ चल रहा है सो ठीक है। इसमें हम गहराई पैदा करना नहीं चाहते, उसमें दिलचस्पी लेना नहीं चाहते। हमें क्या-क्या करना चाहिए ? जो काम है, उसमें इतना ज्यादा तन्मय हो जाना चाहिए कि वह काम हमारे मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम, दोनों का मिलाकर कुछ बेहतरीन हो सके।'' इसे ''कर्मयोग'' कहते है।

''काम करने में'' और ''कर्मयोग'' में यह अंतर होता है कि काम केवल शरीर से किया जाता है, थकान समझ कर किया जाता है, दुर्भाग्य समझ कर किया जाता है, वह काम है और 'कर्मयोग' से क्वालिटी (गुणवत्ता) बढ़ जाती है आपके काम की और फिर आपकी। इसमें व्यक्ति उत्साह से काम करता है ! दिलचस्पी से काम करता है ! मनोयोग से करता है ! और अपना कर्त्तव्य समझ कर काम करता है। कर्मयोग से अपनाने से संपूर्ण जीवन की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

****

महाभारत के युद्ध में भोजन प्रबंधन

श्वेता तिवारी
आशुलिपिक

महाभारत को हम सही मायने में विश्व का प्रथम विश्वयुद्ध कह सकते हैं क्योंकि शायद ही कोई ऐसा राज्य था जिसने इस युद्ध में भाग नहीं लिया। आर्यावर्त के समस्त राजा या तो कौरव अथवा पांडव के पक्ष में खड़े दिख रहे थे। श्रीबलाराम और रुक्मी ये दो ही व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने इस युद्ध में भाग नहीं लिया कम से कम इस सभी तो यही जानते हैं किंतु एक और राज्य ऐसा था जो युद्ध क्षेत्र में होते हुए भी युद्ध से विरत था। वो था दक्षिण ''उड्डपी'' का राज्य।

जब उड्डपी के राजा अपनी सेना सहित कुरुक्षेत्र पहुंचे तो कौरव और पांडव दोनों उन्हें अपनी और मिलाने का प्रयत्न करने लगे। उड्डपी के राजा अत्यंत दूरदर्शी थे। उन्होंने श्रीकृष्ण से पूछा - हे माधव ! दोनों और से जिसे भी देखों युद्ध के लिए लालायित दिखता है किंतु क्या किसी ने सोचा है कि दोनों और से उपस्थित इतनी विशाल सेना के भोजन का प्रबंध कैसे होगा ? इस पर श्रीकृष्ण ने कहा - महाराज ! आपने बिलकुल उचित सोचा है। आपके इस बात को छेड़ने पर मुझे प्रतीत होता है कि आपके पास इसकी कोई योजना है। अगर ऐसा है तो कृपया बताएं।

इस पर उड्डपी नरेश ने कहा - हे वासुदेव ! ये सत्य है। भाईयों के बीच हो रहे इस युद्ध को मैं उचित नहीं मानता इसी कारण इस युद्ध में भाग लेने की इच्छा मुझे नहीं है किंतु ये युद्ध अब टाला नहीं जा सकता इसी कारण मेरी ये इच्छा है कि में अपनी पूरी सेना के साथ यहां उपस्थित समस्त सेना के भोजन का प्रबंध करूँ। इस पर श्रीकृष्ण ने हर्षित होते हुए कहा - '' महाराज ! आपका विचार अति उत्तम है। इस युद्ध में लगभग 5000000 (50 लाख) योद्धा भाग लेंगे और अगर आप जैसे कुशल राजा उनके भोजन के प्रबंधन को देखेगा तो हम उस ओर से निश्चिंत ही रहेंगे। वैसे भी मुझे पता है कि सागर जितनी इस विशाल सेना के भोजन प्रबंधन करना आपके और भीमसेन के अतिरिक्त और किसी के लिए भी संभव नहीं है। भीमसेन इस युद्ध से विरत हो नहीं सकते अतः मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी सेना सहित दोनों और की सेना के भोजन का भार संभालिये।'' इस प्रकार उड्डपी के महाराज ने सेना के भोजन का प्रभार संभाला। पहले दिन उन्होंने उपस्थित सभी योद्धाओं के लिए भोजन का प्रबंध किया। उनकी कुशलता ऐसी थी कि दिन के अंत एक दाना अन्न का भी बर्बाद नहीं होता था। जैसे-जैसे दिन बीतते गए योद्धाओं की संख्या भी कम होती गयी। दोनों और के योद्धा ये देख कर आश्चर्यचकित रह जाते थे कि हर दिन के अंत तक उड्डपी नरेश केवल उतने ही लोगों का भोजन बनवाते थे जितने वास्तव में उपस्थित रहते थे। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर उन्हें ये कैसे पता चल जाता है कि आज कितने योद्धा मृत्यु को प्राप्त होंगे ताकि इस आधार पर वे भोजन की व्यवस्था करवा सके। इतने विशाल सेना के भोजन का प्रबंध करना अपने आप में ही एक आश्चर्य था और उस पर भी इस प्रकार कि अन्न का एक दाना भी बर्बाद ना हो, ये तो किसी चमत्कार से कम नहीं था।

अंततः युद्ध समाप्त हुआ और पांडवों की जीत हुई। अपने राज्याभिषेक के दिन आखिरकर युधिष्ठिर से रहा नहीं गया और उन्होंने उड्डपी नरेश से पूछ ही लिया। हे महाराज ! समस्त देशों के राजा हमारी प्रशांसा कर रहे है कि किस प्रकार हमने कम सेना होते हुए भी उस सेना को परास्त कर दिया जिसका नेतृत्व पितामह भीष्म, गुरु द्रोण और हमारे ज्येष्ठ भ्राता कर्ण जैसे महारथी कर रहे थे किंतु मुझे लगता है कि हम सब से अधिक प्रशंसा के पात्र आप है जिन्होंने ना केवल इतनी विशाल सेना के लिए भोजन का प्रबंध किया अपितु ऐसा प्रबंधन किया कि एक दाना भी अन्न का व्यर्थ ना हो पाया। मैं आपसे इस कुशलता का रहस्य जानना चाहता हूं। इस पर उड्डपी नरेश ने हंसते हुए कहा - ''सम्राट ! आपने जो इस युद्ध में विजय पायी

है उसका श्रेय किसे देंगे ? इस पर युधिष्ठिर ने कहा श्रीकृष्ण के अतिरिक्त इसका श्रेय और किसे जा सकता है ? अगर वे ना होते तो कौरव सेना को परास्त करना असंभव था। तब उड्डपी नरेश ने कहा '' हे महाराज ! आप जिसे मेरा चमत्कार कह रहे है वो भी श्रीकृष्ण का ही प्रताप है।'' ऐसा सुन कर वहाँ उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित हो गए।

तब उड्डपी नरेश ने इस रहस्य पर से पर्दा उठाया और कहा - ''हे महाराज ! श्रीकृष्ण प्रतिदिन रात्रि में मूंगफली खाते थे। मैं प्रतिदिन उनके शिविर में गिन कर मूंगफली रखता था और उनके खाने के पश्चात गिन कर देखता था कि उन्होंने कितनी मूंगफली खायी है। वे जितनी मूंगफली खाते थे उससे ठीक 1000 गुणा सैनिक अगले दिन युद्ध में मारे जाते थे। अर्थात अगर वे 50 मूंगफली खाते थे तो मैं समझ जाता था कि अगले दिन 50000 योद्धा युद्ध में मारे जाएंगे। उसी अनुपात में मैं अगले दिन भोजन कम बनाता था। यही कारण था कि कभी भी भोजन व्यर्थ नहीं हुआ।'' श्रीकृष्ण के इस चमत्कार को सुनकर सभी उनके आगे नतमस्तक हो गए। ये कथा महाभारत की सबसे दुर्लभ कथाओं में से एक है।

कर्नाटक की उड्डपी जिले में स्थित कृष्ण मठ में ये कथा हमेशा सुनाई जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस मठ की स्थापना उड्डपी के समाट द्वारा ही करवाई गयी थी जिसे बाद में श्री माधवचार्य जी ने आगे बढ़ाया।

❋ ❋ ❋ ❋

परिवर्तन

शिवम साहू
निरीक्षक

परिवर्तन एक मुकाम हासिल करने का,
परिवर्तन एक जज्बे को दिखाने का।
परितर्वन खुद को सबसे हट के रहने का
परितर्वन अपने सपने पूरे करने का।
अपना सपना बना ऐसा कि खुद की जिंदगी बदले
जिसको हासिल करना है मुश्किल उसे तू पा सके
परिवर्तन कर ऐसा कि सब तुझसे ले सबक
जीवन जीना किसे कहते हैं, ये देख सबमें उठे तलब।
जीतने की आदत आये, पाये तू सम्मान भी,
कर परिवर्तन खुद में ऐसा, जाये तुझमें अभिमान भी।
परिवर्तन आएगा तेरी जिद जीतेगी तू रख हौंसले,
उठा कदम, चल खुद में ला परिवर्तन।

❋ ❋ ❋ ❋

जल संरक्षण

राजकिशोर यादव
कार्यकारी सहायक

पृथ्वी पर जीवन व्यतीत करने के लिए तीन हवा, पानी और भोजन का होना बेहद आवश्यक है। इन्हीं में से जल हमारे लिए एक प्रमुख अमूल्य प्राकृतिक संसाधन है। यह न केवल ग्रामीण और शहरी समुदायों की स्वच्छता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है बल्कि कृषि के सभी रूपों और अधिकांश औद्योगिक उत्पादन प्रक्रियाओं के लिये भी आवश्यक है परंतु विशेषज्ञों ने सदैव ही जल को उन प्रमुख संसाधनों में शामिल किया है जिन्हें भविष्य में प्रबंधित या संरक्षित करना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा कि भारत एक गंभीर जल संकट के मुहाने पर खड़ा है। मौजूदा जल संसाधन संकट में हैं, देश के नदियाँ प्रदूषित हो रही है जल संचयन तंत्र (Water-Harvesting Mechanisms) बिगड़ रहे हैं और भूजल स्तर लगातार घट रहा है। इन सभी के बावजूद जल संकट और उसके प्रबंधन का विषय भारत में आम जनता की चर्चाओं में स्थान नहीं पा सका है।

भारत में जल उपलब्धता पर विचार किया जाए तो भारत में वैश्विक ताजे जल स्रोत का मात्र 4 प्रतिशत मौजूद है जिससे वैश्विक जनसंख्या के 18 प्रतिशत (भारतीय आबादी) हिस्से का जल उपलब्ध कराना होता है। आँकड़ों के अनुसार कमज़ोर मानसून के बाद देश भर में लगभग 33 करोड़ लोग (देश की एक चौथाई आबादी) गंभीर सूखे के कारण प्रभावित हुए है।

नीति आयोग द्वारा वर्ष 2018 में जारी कंपोजिट वाटर मैनेजमेंट इंडेक्स रिपोर्ट में बताया गया था कि देश भर के लगभग 21 प्रमुख शहर (दिल्ली, बंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद और अन्य) आने वाले कुछ वर्षों में शून्य भूजल स्तर तक पहुंच जाएंगे जिसके कारण लगभग सौ मिलियन लोग प्रभावित होंगे साथ ही इस रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि वर्ष 2030 तक भारत में जल की मांग, उसकी पूर्ति से लगभग दोगुनी हो जाएगी। जैसा कि देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति छः हजार घनमीटर थी, जो वर्ष 2000 में तेइस सौ घनमीटर रह गई तथा वर्ष 2025 तक इसके और घटकर सोलह सौ घनमीटर रह जाने का अनुमान है। आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत के शहरी क्षेत्रों में 9.7 करोड़ लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता है जबकि देश के ग्रामीण इलाकों में तकरीबन 70 प्रतिशत लोग प्रदूषित पानी पीने और 33 करोड़ लोग सूखे वाली जगहों में रहने को मजबूर है। यदि देश की राजधानी दिल्ली की बात किया जाए तो भारतीय मानक ब्यूरों द्वारा जारी एक हालियां रिपोर्ट में सामने आया था कि दिल्ली जल बोर्ड द्वारा सप्लाई किया जाने वाली पानी BSI मानकों पर खरा नही उतरता है और वह पीने योग्य नहीं है। भारत में तकरीबन 70 प्रतिशत जल प्रदूषित है, जिसकी वजह से जल गुणवत्ता सूचकांक में भारत 122 देशों में 120 वें स्थान पर है। देश में जल की कुल खपत का करीब 85 प्रतिशत हिस्सा कृषि कार्यों में 10 प्रतिशत उद्योगों में एवं केवल 5 प्रतिशत पानी घरों में उपयोग किया जाता है।

आज देश में जनसंख्या विस्फोट के कारण विभिन्न जल निकायों जैसे - नदियों, झीलों और तालाबों में प्रदूषण का स्तर दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। अधिकांश हिस्सों में भूजल स्तर अपेक्षाकृत कॉफी नीचे चला गया है। यूनेस्कों द्वारा एक रिपोर्ट में बताया गया था कि भारत दुनिया में भूमिगत जल का सर्वाधिक प्रयोग करने वाला देश है। अतः जल का प्रबंधन कृषि की बेहतरी के लिए कुशल सिंचाई पद्धतियों को विकसित करने में, प्रकृति और मौजूदा जैव विविधता के चक्र को बनाए रखने में एवं स्वच्छता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए देश में स्वच्छता को तब तक पूर्णतः सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है जब तक जल का उचित प्रबंधन न किया जाए। जल संकट देश की अर्थव्यवस्था को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है और जल प्रबंधन की सहायता से जल संकट को खत्म कर इस नकारात्मक प्रभाव से बचा जा सकता है।

अतः जल प्रबंधन हेतु निम्नलिखित उपायों का प्रयोग किया जा सकता है -

(क) अपशिष्ट जल प्रबंधन प्रणाली - उपयुक्त सीवेज सिस्टम साफ और सुरक्षित तरीके से अपशिष्ट जल के निपटान में मदद करते हैं। इसमें गंदे पानी को रिसाइकिल किया जाता है और प्रयोग करने योग्य बनाया जाता है ताकि उसे वापस लोगों के घरों में पीने और घरेलू कार्यों में इस्तेमाल हेतु भेजा जा सके।

(ख) सिंचाई प्रणालियां : सूखा प्रभावित क्षेत्रों में फसलों के पोषण के लिये अच्छी गुणवत्ता वाली सिंचाई प्रणाली सुनिश्चित की जा सकती है। इन प्रणालियों को प्रबंधित किया जा सकता है ताकि पानी बर्बाद न हो और अनावश्यक रूप से पानी की आपूर्ति को कम करने से बचने के लिये इसके पुनर्नवनीकरण या वर्षा जल का भी उपयोग कर सकते हैं।

(ग) प्राकृतिक जल निकायों की देखभाल करना - झीलों, नदियों और समुद्रों जैसे प्राकृतिक जल स्रोत काफी महत्वपूर्ण है। ताजे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र दोनों ही विभिन्न जीवों की विविधता का घर है और इन परिस्थितिक तंत्रों के समर्थन के बिना ये जीव विलुप्त हो जाएंगे।

देश में जल संरक्षण पर बल देना आवश्यक है और कोई भी इकाई (चाहे वह व्यक्ति हो या कोई कंपनी) अनावश्यक रूप से उपकरणों के प्रयोग को कम कर रोजाना कई गैलन पानी बचा सकता है। साथ ही साथ रेनवाटर हार्वेस्टिंग द्वारा जल का संचयन। वर्षा जल को सतह पर संग्रहित करने के लिये टैंकों, तालाबों और चेक-डेम आदि की व्यवस्था कर के जल का संचयन किया जा सकता है। वर्ष 2018 में नीति आयोग ने अभिनव भारत @ 75 के लिये कार्यनीति जारी की थी जिसके तहत यह निश्चित किया था वर्ष 2022-23 तक भारत की जल संसाधन प्रबंधन रणनीति में जीवन कृषि आर्थिक विकास, पारिस्थितिकी और पर्यावरण के लिए पानी को पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु जल सुरक्षा की सुविधा होनी चाहिए। नागरिकों और पशुओं के लिये स्वच्छता हेतु पर्याप्त और सुरक्षित पेयजल प्रदान कराना। सभी खेतों में उचित सिंचाई व्यवस्था सुनिश्चित करना (हर खेत को पानी) और कृषि जल उपयोगिता में सुधार करना, गंगा और उसकी सहायक नदियों की अविरल और निर्मल धारा सुनिश्चित करना।

जैसा कि भारत में जल प्रशासन संस्थानों के कामकाज में नौकरशाही, गैर-पारदर्शी और गैर-भागीदारी वाला दृष्टिकोण अभी भी जारी है। अतः इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि देश के जल प्रशासन में सुधार की आवश्यकता है। सूखे और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं की विश्वसनीय जानकारी और उससे संबंधित आँकड़े हमें जल्द-से-जल्द उपलब्ध कराने होंगे ताकि समय रहते इनसे निपटा जा सके और संभावित क्षति को कम किया जा सके। आवश्यक है कि भूजल स्तर को बढ़ाने और भूजल उपयोग को विनियमित करने संबंधी महत्वपूर्ण निर्णय भी अतिशीघ्र लिए जाएँ।

देश में नदियों की स्थिति भी दयनीय बनी हुई है और वर्तमान सरकार द्वारा गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त करने के प्रयास शायद अनुमानित सफलता नहीं प्राप्त कर पाए है, इसलिए आवश्यक है कि देश में नदियों की स्थिति पर गंभीरता से विचार किया जाए और उन्हें प्रदूषण मुक्त करने हेतु उपर्युक्त नीतियों का निर्माण किया जाए।

जल पृथ्वी का सर्वाधिक मूल्यवान संसाधन है और हमें न केवल अपने लिये इसकी रक्षा करनी है बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिये भी इसे बचा कर रखना है। वर्तमान समय में जब भारत के साथ-साथ संपूर्ण विश्व जल संकट का सामना कर रहा है तो आवश्यक है कि इस ओर गंभीरता से ध्यान दिया जाएं। भारत में जल प्रबंधन संबंधी नीतियाँ मौजूद हैं, परंतु समस्या उन नीतियों के कार्यान्वयन के स्तर पर है। अतः नीतियों के कार्यान्वयन में मौजूद शिथिलता को दूर कर उनके बेहतर क्रियान्वयन को सुनिश्चित किया जाना चाहिए जिससे देश में जल कुप्रबंधन की सबसे बड़ी समस्या को संबोधित किया जा सके।

वड़ा पाव : एक लघु कथा

सुनील कुमार
सहायक आयुक्त

चर्च गेट से लोकल ट्रेन पकड़ने से पहले मैं विट्ठल वड़ा पाव स्टाल से एक वड़ा पाव लेता और अंधेरी जाने वाली लोकल ट्रेन में बैठ जाता। शाम होते-होते थोड़ी भूख सी लग जाती थी। घर पहुंचने तक यह काम कर जाता। वड़ा पाव का स्वाद भी इतना अच्छा था कि पूरी भीड़ जैसे एक पंक्ति में खड़ी हो जाती थी उस स्टॉल पर। ऑफिस से छूटने के बाद यह दिनचर्या सी बन गई थी मेरी।

इधर कुछ दिनों से देख रहा था कि एक लड़की भी उसी वक्त आती थी और एक वड़ा पाव लेकर बांद्रा जाने वाली लोकल में बैठ जाती थी। हमारी आंखे कभी मिलती और फिर पलट जाती उस दिन स्टाल पर कुछ ज्यादा ही भीड़ थी। एक उहापोह में शायद वह लौट जाने वाली होगी बिना वड़ा पाव लिए हुए तभी मैंने उसके लिए भी वड़ा पाव ले लिया और उसे दौड़ते हुए जाकर दिया। वह सकुचाते हुए भी मगर ले ली और थैंक्स बोलकर पैसा देने लगी। मैंने कहा कि कल आपकी बारी होगी। मान गई और ट्रेन खुलने के साथ चली गई।

अगले दिन सचमुच में मुझसे पहले पहुंचकर मेरे लिए भी वह एक वड़ा पाव ले ली थी और मेरा इंतजार कर रही थी शायद कल का कर्ज उतारने के लिए। मैंने भी थैंक्स बोलकर स्वीकार किया और पैसा देने लगा। उसने आंखे गड़ा कर ऐसे देखी कि मैंने बटुए को खींसे में वापस रख लिया फिर तो ये एक सिलसिला-सा चल पड़ा था। एक दिन मैं और दूसरे दिन वो। वक्त बीता तो बात कॉफी तक भी गई।

ट्रेन भी छूटी बातों में बातों में इधर घूमते हुए फिर इंतजार का सिलसिला भी शुरु हुआ। देर हो जाती उसे तो मैं ठहरा रहता।

कभी जब नहीं आती तो मैं बेचैन हो उठता। न जाने क्यों। कई सवाल उठने लगे थे मगर जवाब नहीं मिल रहा था। आज भी इसका इंतजार करते हुए मैं बेचैन था तभी उसे आते हुए देखा। पूरे दस दिनों के बाद आ रही थी। मैं पूछता कि वह खुद कहने लगी कि मेरा बैंगलोर की एक कंपनी ट्रांसफर हो गया है .... मेरा मंगेतर भी वहाँ नौकरी करता है ... मैं कल जा रही हूँ ।

दो कविताएं - कुछ सफ़र के दरमियां, कुछ मंजिल के .....

सुनील कुमार
सहायक आयुक्त

1.

ना रास्ते का पता, ना सफ़र का पता, ना है मंज़िल का पता
ढूंढते है हम, कहाँ है ज़िदगी के समंदर में साहिल का पता।

कदम दर कदम चल कर बहुत दूर तलक आ तो गए लेकिन
अब जाना कहां है कारवां के मुसाफ़िर को यह नहीं पता।

हमने तो रौशनी में भी हर जगह कोई अंधेरा ढूंढ लिया था
वो जो चराग लेकर चलता है बताना किसे है उसका पता।

कल तलक जो सब अपने थे अब जैसे सफ़र के सपने हैं
कि उसके शहर में आकर हम सब भूल गए हैं अपना पता।

वो तमस मिटाता है चांद को ज़मी के थोड़ा करीब लाता है
कोशिश करके देखते हैं हमें भी तो चले आसमां का पता।

2.

आसान इतना है तो मिलता क्यूं नहीं
तलाश सबको है तो मिलता क्यूं नहीं।

गांव-गांव, शहर-शहर ढूंढा है जिसे
खबर है उसको तो मिलता क्यूं नहीं।

कहो तो सफ़र को ले चलूं वहां तक
अंजाम है कहीं तो मिलता क्यूं नहीं।

कारवां में सब साथ ही चले मगर
हमसफ़र है जो तो मिलता क्यूं नहीं।

कदम दर कदम का वादा किया था
पड़ाव मिला है तो मिलता क्यूं नहीं।

बागवानी : आत्मा की संवेदनशीलता और प्राकृतिक संरचना

गज्जू लाल चौधरी
अधीक्षक

प्रास्तावना

बागवानी, यह एक ऐसी शौकीन और सर्वांगीन रुचि है जो मानव जीवन को सौंदर्यपूर्ण बनाती है और उसका प्राकृतिक संरचना के साथ मेल जोड़ती है। बागवानी का मतलब सिर्फ पौधों को उगाना नहीं होता, बल्कि यह एक समर्थन है जो हमें धरोहर स्वास्थ्य और आत्म-समर्पण के माध्यम से संपृक्त करता है। इस लेख में, हम बागवानी को एक रुचि के रूप में विचार करेंगे और उसके महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों को अध्ययन करेंगे।

बागवानी का सुंदर संसार

बागवानी एक सुंदर, प्रशांत और प्राकृतिक संसार का निर्माण करने का अद्वितीय तरीका है। एक बाग न केवल हमें रंगीन फूलों और हरित पौधों का आनंद देता है, बल्कि यह हमें प्राकृतिक शांति और मानवता के साथ गहरा जुड़ाव भी महसूस कराता है। एक बाग में खुद को खोने का अनुभव हमें स्वयं जुड़ने का एक अद्वितीय मौका प्रदान करता है और हमें वातावरण से मिलनेवाली आत्मा की शक्ति प्रदान करता है।

स्वास्थ्य का धन :

बागवानी का एक और महत्वपूर्ण पहल है इसका स्वास्थ्य से संबंध। पौधों के साथ जुड़कर हम न केवल एक स्वास्थ्यपूर्ण और ताजगी भरे वातावरण का अनुभव करते हैं, बल्कि हमारा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी सुधरता है। बागवानी में कृषि और गुलाबी गंध के पौधों को छूना, उन्हें देखना और उनसे बातचीत करना एक संतुलन में ला देता है जिसमें मानव के मनोबल को बढ़ावा मिलता है। इससे स्वास्थ्य में सुधार होता है, तनाव में कमी होती है और मानवता , आत्मनिर्भरता और सच्ची खुशी की ओर बढ़ती है।

आत्म-समर्पण और सामर्थ्य :

बागवानी में समय बिताने से हम आत्म-समर्पण और सामर्थ्य का आनंद लेते हैं। एक बाग का निर्माण करना और उसकी देखभाल करना एक धीरे-धीरे चरणबद्ध होता है, जो हमें धैर्य और तन मन से काम करने की आदत डालता है। बागवानी में समर्पण का अहसास करना हमें एक सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है जो हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत और आत्मनियंत्रण की आवश्यकता की अद्भुतता को सिखाता है

बागवानी एक साक्षरता का केंद्र :

बागवानी न केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारती है, बल्कि यह एक साक्षरता का केंद्र भी है। एक व्यक्ति जो बागवानी के क्षेत्र में रुचि रखता है, वह अपने आस-पास के पौधों, फूलों और पौध शाला के माध्यम से विज्ञान, भूगोल और गणित के साथ अपनी शिक्षा को समृद्ध कर सकता है।

बागवानी में समय बिताने से व्यक्ति अपनी सोचने की क्षमता को बढ़ाता है और यह एक स्वयं शिक्षा का एक स्रोत बन सकता है जो व्यक्ति को बाहरी दुनिया के साथ जोड़ता है।

बागवानी का सामाजिक सहयोग :

बागवानी एक सामाजिक सहयोग का भी माध्यम है, जो लोगों को एक समृद्ध और सातत्वपूर्ण समुदाय की ओर

बढ़ने में मदद करता है। बागवानी के सभी पहलुओं में सहयोग होने से लोग एक दूसरे को अधिक समझने और समर्थन में शक्तिशाली होते हैं। बागवानी समृद्धि, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक एकता की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे समुदाय की सामरिक की स्थिति में सुधार होता है।

समाप्ति

बागवानी एक रुचि नहीं बल्कि एक जीवन शैली है जो हमें अपने प्राकृतिक आसपास के वातावरण से जोड़ने का एक सुंदर और आत्मनिर्भरता भरा तरीका प्रदान करती है। इसे एक रुचि के रुप में देखना उसकी सार्थकता को कम करता है।

क्योंकि यह हमारे जीवन के हर पहलुओं में व्यापक प्रभाव डालता है। बागवानी से हम सीखते हैं कि शांति, सुख और समृद्धि कैसे प्राकृतिक संरचना के साथ मिल सकते हैं और हम अपने जीवन को कैसे आत्मनिर्भर बना सकते हैं। इसलिए बागवानी को सिर्फ एक रुचि नहीं, बल्कि जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानना चाहिए जो हमें एक बेहतर और सहज जीवन की दिशा में मार्ग दर्शन करता है।

संदेश - पेड़ पौधे लगाएं, उनका संरक्षण करें, प्रकृति को हराभरा बनाएं।

कर अधिकारी हम

शुभी चौबे
निरीक्षक

अनुच्छेद 265 की छाया में, कर संग्रहण की धारा बहे
CGST अधिकारी हम, राजस्व की नींव रखें।

अनुच्छेद 266, राष्ट्र का कोष, हमारी जिम्मेदारी का प्रमाण,
धर्मनिरपेक्षता, समता की रक्षा, हमारा कर्तव्य अनुज्ञाना

अनुच्छेद 243G के पथ पर, स्थानीय स्वशासन का संग,
हम निभाते भूमिका अहम, विकास की ओर हर एक कदम।

अनुच्छेद 280 की दिशा में, वित्त आयोग के सिद्धांत सजीव,
आर्थिक संतुलन की ओर, हमारी मेहनत निरंतर निर्भीक।

अनुच्छेद 51A, की बाते, नागरिक कर्तव्यों की गाथा,
CGST के प्रहरी हम, देशहित में अपना सब कुछ साधा।

संविधान के प्रत्येक पन्ने में, हमारी भूमिका अनुपम,
राष्ट्र निर्माण में योगदान, हमारा प्रयास अतुलनीय और विपुल।

जय हिंद, जय भारत, संविधान की इस शान में,
CGST अधिकारी हम, निभाते दायित्व पूरे सम्मान में।

तू मानव था

अजय कुमार शुक्ला
सहायक आयुक्त

तू मानव था जब आया था फिर बहरुपिया तू बनता गया।
तू निर्मल, निष्पक्ष, निर्विकार, निःस्वार्थ भाव को तजता गया।।

नकाब, मुखोटों की आड़ में अपना सुंदर मुखड़ा ढकता रहा।
धर्म, जाति, पंथ की ओट में मानवता को घायल करता रहा।

कर्मवीर कायर बन गए और निष्ठाओं को हताहत होना ही पड़ा।
प्रकृति, प्रवृत्ति को विच्छिन्न कर तुझे इसको प्रगति कहना पड़ा।

वृहद मानवीय क्षैतिज को तू प्रतिपल संकीर्ण बनाता ही रहा।
दाता होने की क्षमता रख, क्या पाया विचार तुझे डसता रहा।

मानव महान के समक्ष क्यों मानवता की सांसे उखड़ती रही।
परमार्थ का तेरा जिम्मा था, तेरे स्वार्थ की ढपली बजती रही।

अथाह ज्ञान की विरासत को क्यों तूने अपमानित कर डाला।
असीम आनंद को धता बता, पथ तम का प्रशस्त कर डाला।

क्यों अंतस को अपने मार दिया, क्यों कर स्वयं से दूर हुआ।
अंतर के अद्भुत सौंदर्य का, किस कारण यूं तिरस्कार हुआ।

हृदय तेरा प्रेम का सागर था, तू नफरतों से प्रीत निभाता रहा।
निश्छल मुस्कुराहटों का दमन, हृदय में शूल बन चुभता रहा।

बहुत हुआ, बहुत खोया, चलो अब सच में कुछ तो पा जाना है।
जीवन महान मानव का, फिर से अब मानवता को लौटाना है।

❋❋❋❋

जीवन का संगीत

शुभी चौबे
निरीक्षक

चाँदनी रातों में
ख्वाबों की बातों में,
बहती हवाओं में,
अनकही यादों में।

खो जाते है हम,
उन लम्हों की चाहत में,
जहाँ सिर्फ प्यार है
और खुशियां की बरसात में।

फूलों की वादियों में,
पर्वतों की कदियों में,
बहती नदियों के संग,
जीवन की कश्तियों में।

यहां हर पल खास है,
जैसे ऋतुओं का एहसास है,
जीवन एक संगीत है,
और हर दिल बस एक आवाज है।

सूरज की पहली किरण से,
चाँद की आखिरी रोशनी तक,
हर दिन की शुरूआत में,
हर रात की तन्हाई में बस तक।

जिंदगी के इस सफर में,
हर मोड़ में नई कहानी है,
खुशी हो या गम,
हर पल में कुछ तो कहानी है।

❋ ❋ ❋ ❋

राष्ट्र के नाम

शुभी चौबे
निरीक्षक

कर्म पथ पर चलते हुए,
देश हित में जुट जाएँ,
अपने कर्तव्यों को निभा,
राष्ट्र का मान बढ़ाएं।

मेहनत की मिट्टी से,
अपने देश का नाम करें,
एक-एक कण में देशभक्ति का
जज्बा भरें ।

निःस्वार्थ सेवा और समर्पण
यही हमारी पहचान
देश के लिए कुछ कर गुजरने का
रखे उच्च स्थान।

जिस धरती ने जन्म दिया,
उसका कर्ज चुकाएं,
कर्मठता और साहस से,
राष्ट्र को उन्नत बनाएं।

वीरों की धरती,
इसे सदा सम्मान दिलाएं
हर कार्य में देशप्रेम की
एक नई कहानी गाएं।

❋ ❋ ❋ ❋

जीवन पाठशाला

शुभी चौबे
निरीक्षक

जीवन की राहों में, अनगिनन कहानियाँ
हर कदम पर नई आशाएं और थोड़ी चुनौतियाँ
ख्वाबों का आकाश, मन की उड़ाने
हर दिन एक नई सीख, हर रात नए अरमान।

दोस्ती की रंगों में, प्रेम की भाषा में
मिलते है जीवन के सबक, हर खुशी, हर आशा में।
दुखों का सागर, सुख की नदियाँ
जीवन है एक संगम प्रेम और विश्वास की कड़ियाँ

सपने जो देखे, उन्हें साकार करने की आस
हर छोटी खुशी में, खोजे जीवन की मिठास
बाधाएं आएं, पर हिम्मत न हारे
साथ मिलकर सबको, आगे बढ़ने की पाठ पढ़ाएं

ये जीवन का पाठशाला, जहाँ हर दिन नया सबक
खुद को पहचानने का, हर पल एक नया मकसद
जीवन एक यात्रा, अनुभवों का खजाना
हर दिन नया अवसर, जीवन का सुंदर तराना

❋ ❋ ❋ ❋

चले आईये

मधु सोलाखे
पत्नी रोहित कुमार सोलाखे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

दो कदम का फ़ासला है चले आइये
और ना कुछ दरमियाँ है चले आइये ।।

फिजाओं में मिली है वफाओं की खुशबु।
बहकी-बहकी सी हवा है चले आइये ।।

बेवजह तुमने हज़ार शिकवे किए।
अब मुझे तुमसे गिला है चले आइये ।।

तुम ढूंढते हो खुद को इन चेहरों में।
मेरा चेहरा एक आईना है चले आइये ।।

उस तरफ चलकर दुनिया मिलेगी।
इस तरफ मेरा पता है चले आइये ।।

❋ ❋ ❋ ❋

गणतंत्र दिवस 2023

(केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर में आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ)

रोजगार मेला

केंद्र सरकार के तत्वाधान में आयोजित रोजगार मेले के तृतीय चरण का जबलपुर नगर में
केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर में
द्वारा सफल आयोजन

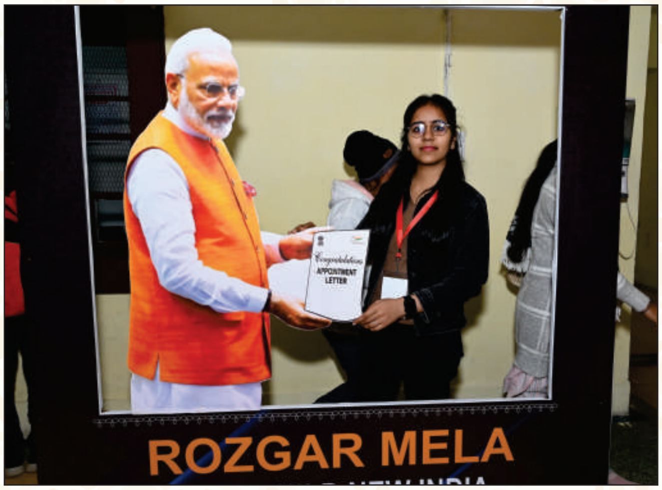

रोजगार मेला

केंद्र सरकार के तत्वाधान में आयोजित रोजगार मेले के तृतीय चरण का जबलपुर नगर में
केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर में
द्वारा सफल आयोजन

गौरवशाली उपलब्धि

(राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क, जबलपुर को प्रदत्त पुरूस्कार)

03 मार्च 2023 को रायपुर (छत्तीसगढ) में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा जी के कर कमलों द्वारा वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा पुरुस्कार ग्रहण करते हुए तत्कालीन आयुक्त श्री दिनेश पी. पांगरकर एवं राजभाषा प्रभारी श्री रोहित कुमार सोलाखे

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर (म.प्र.) को संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए मध्य क्षेत्र (मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़) के सभी बड़े केंद्र शासकीय कार्यालयों (50 से अधिक कार्मिकों वाले) में से वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए प्रथम पुरूस्कार से सम्मानित किया गया है। ज्ञातव्य हो कि राजभाषा के क्षेत्र में यह जबलपुर आयुक्तालय द्वारा अर्जित अभी तक का सबसे बड़ा पुरुस्कार है इससे पहले राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में वित्तीय वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 के लिए भी जबलपुर आयुक्तालय को तृतीय पुरूस्कार से सम्मानित किया गया था। अतः यह लगातार तीसरा वर्ष है जब जबलपुर आयुक्तालय को यह सम्मान प्रदान किया गया है ।यह उपलब्धि निश्चित ही भविष्य में कार्यालय के अधिकारियों के राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं प्रचार-प्रसार के प्रति पूर्ण समर्पण को मजबूत करेगी एवं एक नई दिशा प्रदान करेगी। यह सभी के सामूहिक प्रयासों एवं वरिष्ठ अधिकारियों के उत्कृष्ट

03 मार्च 2023 को रायपुर (छत्तीसगढ) में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा जी के कर कमलों द्वारा वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा पुरुस्कार ग्रहण करते हुए तत्कालीन आयुक्त श्री दिनेश पी. पांगरकर एवं राजभाषा प्रभारी श्री रोहित कुमार सोलाखे

मार्गदर्शन और राजभाषा के प्रति सभी के लगाव के कारण ही संभव हुआ है। उम्मीद है कि आगे भी सभी इसी तरह से राजभाषा कार्यान्वयन में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

इसके लिए जबलपुर आयुक्तालय के सभी कार्मिकों को बहुत-बहुत बधाईयां।

23 नवंबर 2023 को मुंबई (महाराष्ट्र) में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में महाराष्ट्र राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री रमेश बैस जी के कर कमलों द्वारा वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा पुरुस्कार ग्रहण करते हुए अपर आयुक्त श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एवं राजभाषा प्रभारी श्री रोहित कुमार सोलाखे

स्वतंत्रता दिवस 2023

(केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर में आयोजित कार्यक्रम की झलकियाँ)

पौधा वितरण कार्यक्रम

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर के अधिकारियों के मध्य पौधा वितरण

स्वच्छता अभियान

स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत कार्यालय के आसपास
एवं अन्य क्षेत्रों में साफ-सफाई अभियान

स्वच्छ भारत मिशन

स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत आयुक्त श्री लोकेश लिल्हारे के नेतृत्व
में शासकीय कन्या शाला जबलपुर में आयोजित कार्यक्रम

शपथ ग्रहण

सतर्कता शपथ ग्रहण

स्वच्छता शपथ ग्रहण

राजभाषा शपथ ग्रहण

क्रिकेट

स्वच्छता क्रिकेट कप का आयोजन

जब्ती

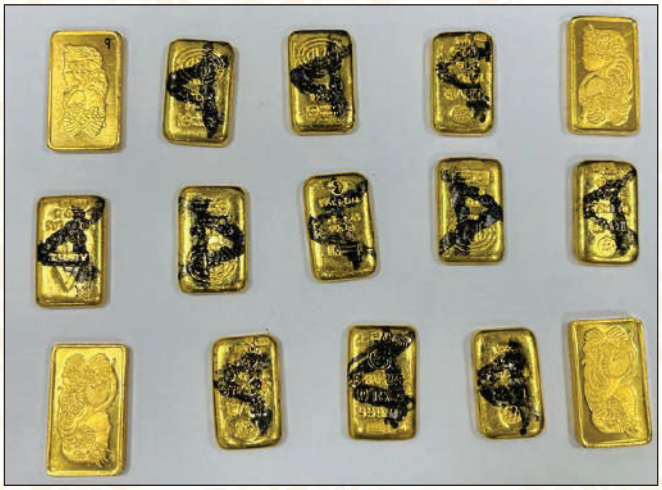

इंटेलीजेंस से प्राप्त सूचना के आधार पर जब्त किये गये सोने के बिस्कुट

जब्ती दल में शामिल अधिकारीगण

साइकिल रैली

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत जबलपुर आयुक्तालय, के अधिकारियों द्वारा साइकिल रैली का आयोजन

सघन जाँच अभियान

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त श्री लोकेश कुमार लिल्हारे के निर्देशानुसार गठित एस.एस.टी. एवं फ्लाइंग स्क्वॉड द्वारा वाहनों का सघन जाँच अभियान

जीएसटी दिवस

केंद्रीय अप्रत्यक्ष एवं सीमा शुल्क बोर्ड नई दिल्ली द्वारा आयोजित जीएसटी दिवस 2023 का केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, जबलपुर के सभा कक्ष में विडियों कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से सीधा प्रसारण

विकसित भारत के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत

(सतर्कता जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित निबंध प्रतियोगिता से चुना हुआ निबंध)

रोहित कुमार सोलाखे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भ्रष्टाचार विषय पर लिखने में मुझे थोड़ी झिझक हो रही है, क्योंकि सही मायने में इसके बारे में बोलने या लिखने का हक उसी को है जो पूरी तरह से ईमानदार हो, जो कभी भी किसी भी तरह के भ्रष्टाचार का हिस्सा ना बना हो, परंतु दुर्भाग्य वश में सौ फीसदी ईमानदार नहीं हूं। कभी मैंने पुलिस के चालान से बचने के लिए पैसे दिए हैं तो कभी मैंने रेल यात्रा के लिए अनुचित साधन का इस्तेमाल किया है, तो कभी मुझे किसी और के भ्रष्टाचार का लाभ मिला है। अपने आपको सांत्वना देने के लिए बस इतना कह सकता हूं कि मैं एक सीरियल अपराधी नहीं हूं मैंने ज़िदगी में बहुत से अच्छे काम भी किये हैं और कर रहा हूं। हालांकि ये भी सच है कि सौ अच्छे काम कर लेना आपको एक बुरा काम करने का अधिकार नही देता .... बस इसलिए इस विषय पर लिखने में थोड़ी झिझक हो रही है, काश कि मैं 100 प्रतिशत ईमानदार होता।

खैर, लिखना तो है ही सो मैं अपनी बात आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं।

भ्रष्टाचार का अर्थ

शाब्दिक अर्थ की बात करें तो इसका मतलब होता है भ्रष्ट आचरण

अगर बाकी जीव-जंतुओं की नज़र से देखा जाये तो मनुष्य से अधिक भ्रष्ट कोई हो ही नही सकता... हम अपने फायदे के आगे कुछ नहीं देखते ... हमारी वजह से ना जाने कितने जंगल तबाह हो गए... कितने जानवरों की प्रजाति विलुप्त हो गई .... और अभी भी हम अपने स्वार्थी जरूरतें के लिए हर पल दुनिया में इतना प्रदूषण फैला रहे हैं हमने पृथ्वी के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है।

और ये सब भ्रष्ट आचरण ही तो है। भ्रष्टाचार ही तो है; क्या नहीं है

लेकिन दुनिया करप्शन या भ्रष्टाचार को कुछ ऐसे डिफाइन करती है-

भ्रष्टाचार निजी लाभ के लिए (निर्वाचित राजनेता या नियुक्त सिविल सेवक द्वारा) सार्वजनिक शक्ति का दुरुपयोग है।

सरल शब्दों में कहें तो किसी नेता या सरकारी नौकर द्वारा व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने अधिकार का दुरुपयोग ही भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार एक वैश्विक घटना है। शायद आपको जानकार आश्चर्य हो कि दुनिया की शीर्ष 50 भ्रष्ट देशों की सूची में भारत का नाम शामिल नहीं है। जी हाँ, अगर ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की रिपोर्ट पर यकीन किया जाए तो चीन और रूस जैसे देश में यहां से ज्यादा भ्रष्टाचार है।

अब ये बात और है कि उन्होंने किस आधार पर ये रिपोर्ट तैयार की है, पर इतना तो पक्का है की भ्रष्टाचार कोई अकेले भारत या किसी और देश की समस्या नहीं है .... मेरी समझ से ये समस्या इंसान की है ... जिसका क्रमिक विकास कुछ ऐसे हुआ है कि वो अपने फायदे के आगे औरों की नहीं सोचता और शायद ये इंसान के जन्मजात प्रकृति का ही परिणाम है कि भ्रष्टाचार सिर्फ चंद लोगों तक सीमित नहीं है बल्कि पूरा का पूरा समाज ही भ्रष्ट समाज ही भ्रष्ट आचरण में लिप्त है। हाँ, कुछ ऐसे लोग ज़रूर है जो ईमानदार हैं पर अधिकतर लोग कहीं न कहीं भ्रष्ट है।

हो सकता है में बहुत निराशावादी ध्वनि पैदा कर रहा हूं और कुछ लोग मेरी बात से आहत हो, लेकिन अगर हमें किसी समस्या का समाधान ढूंढना है तो समस्या की जड़ को समझना बहुत जरूरी है। बेशक, ये मेरे अपने विचार है और कल को मुझे खुद ही ये गलत लग सकते है, पर अभी जो मेरा दिल कह रहा है मैं वो आपसे शेयर कर रहा हूं।

जब मैं अपने कॉलेज में था तो मेरा एक दोस्त अक्सर कहा करता था - **''ईमानदार वो होता है जिसे बेईमानी का मौका नहीं मिलता''**

महात्मा गांधी जी से प्रभावित होने के कारण तब मैं उसकी बात से काफी नाराज़ होता था, लेकिन करीब 8-10 साल के निज़ी और शासकीय कार्यानुभव, जिसमें मैंने बहुत कुछ देखा और नज़र अंदाज किया है, के बाद मुझे उसकी बात पर गुस्सा नहीं आता और लगता है कि पूरी तरह न सही पर बहुत हद तक वह सच कहता था।

वैसे तो परिभाषा के अनुसार भ्रष्टाचार को सीधे सरकार और सरकारी अफसरों से जोड़ कर देखा जाता है, लेकिन अगर कुछ देर के लिए हम इसकी परिभाषा को थोड़ा विस्तृत कर दे और सिर्फ सरकारी नहीं बल्कि आम लोगों की तरफ भी नज़र उठा कर देखे तो हर तरफ बेईमानी दिख जाएगी -

1. दूध का धंधा करने वाला उससे पानी मिलाता है।
2. सेहत दुरुस्त करने के नाम पर नकली दवाईयाँ बिकती है।
3. बिजनेस करने वाले अपने फायदे के लिए झूठ बोलने से नहीं चूकते।
4. बिजली चोरी को तो लोग अपना अधिकार समझते हैं।
5. स्कूल में प्रवेश के लिए अनुदान मांगा जाता है।
6. नौकरीपेशा आदमी टैक्स बचाने के लिए फेक मेडिकल बिल्स लगाना गलत नहीं समझता।
7. और सरकारी महकमों से भ्रष्टाचार के बारे में बताने की जरूरत ही नहीं है, उनके घोटाले लाख या करोड़ में नहीं होते लाख करोड़ में होते हैं।

पर इस निबंध में, मैं अपनी बात सार्वजनिक क्षेत्र का भ्रष्टाचार या सरकारी भ्रष्टाचार तक ही सीमित रखूंगा क्योंकि दरअसल यही वो भ्रष्टाचार है जो आम लोगों को भ्रष्ट बनने के लिए कभी मदद करता है तो कभी मजबूर।

अगर पब्लिक सेक्टर में भ्रष्टाचार नहीं होता तो देश की स्थिति बहुत अलग होती -

1. हमारे पास अच्छी सड़के होती और हादसों में हम अपनों को नहीं खोते।
2. हमारे पास चौबीसों घंटे बिजली होती और आधी आबादी को अंधेरे में जिंदगी नहीं बितानी पड़ती।
3. हमारे पास बेहतर स्वास्थ सेवाएं होती और लोगों की जान इतनी सस्ती नहीं होती।
4. हमारे किसान खुशहाल होते और कोई आत्महत्या नहीं होती।
5. हमारे सभी बच्चे स्कूल जाते और किसी को घूम-घूम कर कूड़ा उठाने की ज़रूरत नहीं होती।
6. और अगर यहाँ भ्रष्टाचार नहीं होता तो आज एक अरब 21 करोड़ से अधिक आबादी वाले देश के पास कम से कम 21 औलपिंक मेडल तो होते ही।

हम मध्यम वर्गीय या धनी लोगों के लिए भ्रष्टाचार के मारे लोगों का दर्द समझना मुश्किल है, लेकिन बस बार सोच के देखिए, यदि आप गरीब घर में पैदा हुए होते और सरकारी योजनाओं में धांधली की वजह से आपका बचपन कूड़ा बीनने या ढाबों में काम करने में बीता होता है तो आज आप कैसा महसूस करते ? हम थोड़ा और संवेदनशील हो और यह समझने की कोशिश करें कि भ्रष्टाचार ने हमारे समाज को क्या नुकसान पहुंचाया है और क्या कर रहा है।

ब्रिटिश राइटर चार्ल्स कोल्टन का कहना था -

भ्रष्टाचार बर्फ के गोले के सामान है, एक बार ये लुढ़कने लगता है तो बढ़ता ही जाता है

और अक्सर इस गोले की शुरुआत सरकारी दफ्तरों से ही होती है यानि अगर हम वही इस गोले को लुढ़कने से रोक दें तो काफी हद तक भ्रष्टाचार को रोका जा सकता है।

किसी भी भारतीय के मन में ये सवाल आना स्वाभाविक है कि आखिर हमारे देश में इतना भ्रष्टाचार क्यों है ?

पहले लोग कहा करते थे की सरकारी कर्मचारियों की सैलरी कम होती है इसलिए वे बेईमानी से पैसा कमाते हैं, पर वो एक कमजोर बहाना था। एक के बाद एक कई पे कमीशन के आ जाने के बाद भी बहुत से सरकारी अधिकारी भ्रष्ट गतिविधियां में लिप्त पाए जाते हैं।

यानि कारण कुछ और ही है, इसे थोड़ा समझते हैं -

मूलतः सरकार क्या है ? वो हमी लोगों के बीच से चुने गए जन प्रतिनिधियों का समूह है और हम कैसे लोगों को चुन कर भेजते हैं, ऐसे नहीं जो सबसे ईमानदार हो, बल्कि ऐसे जो कम बेईमान हो, विकल्प ही नहीं होता, करें भी तो क्या ?

इसलिए जो लोग सरकार बनाते हैं उसमें ज्यादातर भ्रष्ट लोग ही होते हैं और अगर थोड़े से भी बेईमान आदमी को सत्ता/शक्ति मिल जाती है तो उसे महा बेईमान बनने में देर नहीं लगती, वो कहते भी तो है -

सत्ता भ्रष्ट करती है और पूर्ण शक्ति बिल्कुल भ्रष्ट करती है

बस फिर क्या सता के नशे में ये नेता, बड़े अधिकारियों और नौकरशाही को अपने हाथों की कठपुतलियां बना लेते हैं, और बदले में, ये उच्च अधिकारी अपने नीचे वालों को और वे अपने नीचे वालों को और इसी तरह ... भ्रष्ट बनाते चले जाते हैं। भ्रष्टाचार का गोला बड़ा होता चला जाता है और आम आदमी को भी अपने लपेटे में ले लेता है और अंत में उसे भी भ्रष्ट बना देता है।

और ये पिछले 75 साल से होता आया है इसलिए ये बहुत से नेताओं और अधिकारियों को इसकी लत लग चुकी है। उनके ऑफिस में गांधी जी की तस्वीर लगी होती है और लिखा होता है, **''ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है''** लेकिन सही मायने में वे भुल चूके होते हैं कि ईमानदारी भी कोई चीज होती है।

इसके अलावा व्यक्तिगत स्तर पर, आदमी का लालच उसे भ्रष्ट बना देता है। ऊपर का अधिकारी ईमानदार हो तो भी अगर नीचे का आदमी भ्रष्ट है तो वो अपने स्तर पर भ्रष्टाचार करता है।

भ्रष्टाचार के और भी बहुत से कारण गिनाये जा सकते हैं पर उससे क्या होगा, फायदा तो तब है जब इससे पार पाने इसका खात्मा करने के बारे में बात हो, इसलिए मैं यहां अपने विचार रख रहा हूं कि भ्रष्टाचार को कैसे रोका जा सकता है।

1. माता-पिता और शिक्षक के माध्यम से :

एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था -

अगर किसी देश को भ्रष्टाचार - मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं पिता, माता और गुरु।

तो पहला कदम तो घर से ही शुरू होता है

जब कोई पिता बच्चे से कहता है कि जाओ अंकल से कह दो की पापा घर पे नहीं है तो वो जाने-अनजाने अपने बच्चे के मन में भ्रष्टाचार का बीच बो रहा होता है।

जब माँ अपने बच्चे की गलती पर पर्दा डाल कर दूसरे के बच्चे को दोष दे रही होती है तो वो भी अपने बच्चे को गलत काम करने के लिए बढ़ावा दे रही होती है और जब कोई शिक्षक परीक्षा में नकल कराता है या ऐसे होते देख कर भी चुप रहता है तो वो भी अपने शिष्यों को भ्रष्टाचार का पाठ पढ़ा रहा होता है।

माता-पिता और शिक्षक आज जो करते हैं उससे कल के भारत का निर्माण होता है इसलिए बेहद ज़रूरी हो जाता है कि वे बच्चों को उच्चतम नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाए और इस पाठ का पढ़ाने का सबसे सशक्त तरीका यही है है कि वे उनके सामने कभी ऐसा आचरण न करें जो कहीं से भी गलत या अनैतिक आचरण का समर्थन करता हो।

2. उचित सिस्टम सेटअप करके :

चूंकि भ्रष्टाचार बस कुछ लोगों तक सीमित नहीं है और ज्यादातर लोग इसमें लिप्त है इसलिए हमें नियंत्रण और संतुलन का एक ऐसा सिस्टम विकसित करना होगा जहाँ पहले से तय नियमों और गणितीय प्रणाली की मदद से चीजे संपन्न की जा सके और किसी व्यक्ति विशेष की सोच का इतना असर ना पड़े।

इस बिंदु का विस्तार है - तकनीक का सही इस्तेमाल। हम उपलब्ध प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल से भी भ्रष्टाचार काम कर सकते हैं। उदाहरण के लिए : ट्रैफिक नियमों का पालन हो रहा है ये सुनिश्चित करने के लिए हाई स्पीड कैमरा का प्रयोग किया जा सकता है और अगर कोई नियम तोड़ता है तो उसे सिस्टम अपने आप ही चालान पर्ची भेज सकता है। इससे लोग नियमों का पालन तो करेंगे ही और साथ ही लाखों ट्रक या अन्य भारी वाहन वालों और आम लोगों का शोषण भी कम हो जाएगा।

मुझे पता है कि सब करना इतना आसान नहीं है, पर धीरे-धीरे ही सही इस दिशा में बढ़ा तो जा ही सकता है।

3. कानून को सरल बना कर :

किसी ने कहा है कि

जितना अधिक भ्रष्ट राज्य होगा उतने अधिक कानून होंगे

ये बात बहुत सही है। जब नियम-कानून इतने जटिल हो जाते हैं कि आम आदमी उसे समझ न सके तो फिर उनका पालन करना उतना ही मुश्किल हो जाता है और इसी बात का फायदा उठाकर सरकारी अफसर और कर्मचारी उसका शोषण करते हैं। उदाहरण के लिए आपके पास चाहे दुनिया भर के पेपर हों, लेकिन अगर ट्रेफिक पुलिस वाला आपका चालान काटना चाहता है तो उसे कोई रोक सकता है इतने नियम है कि वो कहीं न कहीं आपको गलत साबित कर ही देगा।

कुछ वर्ष पूर्व भारत सरकार ने जो तमाम कर संरचनाएं है उन्हें हटा कर एक टैक्स जीएसटी प्रस्तुत करने की पहल की है वो इस दिशा में एक अच्छा कदम है। धीरे-धीरे हमें और भी बहुत से कानून सरल और लोगों के अनुकूल बनाने होंगे, तभी भ्रष्टाचार कम हो पायेगा।

चुनाव की प्रक्रिया पर बड़ा परिवर्तन लाकर

आज कोई भी ऐसी पार्टी नहीं है जो आपराधिक छवि और दागदार लोगों को टिकिट ना देती हो। चुनाव आयोग को चाहिए कि वो किसी भी हालत में ऐसे लोगों और इनके रिश्तेदारों को चुनाव न लड़ने दे, तब भी जब मामला कोर्ट में चल रहा

हो आज सरपंच के चुनाव में भी करोड़ों रूपये खर्च होते हैं और सब कुछ जानते हुए भी सरकार चुप रहती है। इसलिए चाहिए कि चुनावी खर्चे की जो लिमिट निर्धारित की गयी है उस पर कड़ी नज़र रखी जाए कि कोई उससे अधिक खर्च न करे और ऐसा होता है तो तत्काल उसका टिकिट निरस्त किया जाना चाहिए।

जब भ्रष्ट लोग संसद या विधानसभा में पहुंचने से रोके जायेंगे तो भ्रष्टाचार जरूर कम होगा

4. सरकारी काम-काज में पारदर्शिता ला कर :

कुछ जगहों पर टेंडर्स के लिए ऑनलाइन बिडिंग का सिस्टम लाया जा रहा है, जो कि एक अच्छा कदम है। सरकारी काम काज जितनी पारदर्शिता के साथ होगा भ्रष्टाचार के मौके उतने ही कम होंगे। सूचना का अधिकार (RTI) कानून इस दिशा में एक बड़ा कदम है। इसे और सशक्त बनाने और इसके बारे में जागरूकता फैलाने की जरूरत है।

5. TAT फिक्स करके :

सरकार का जनता से संबंधित ज्यादातर सरकारी कामों के लिए TAT यानि TURN AROUND TIME वो समय (जितने में काम पूरा हो जायेगा) फिक्स करना चाहिए और इसकी जानकारी संबंधित विभाग के नोटिस बोर्ड्स पर दी जानी चाहिए और अगर काम समय पर पूरा न हो तो संबंधित अधिकारी को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए।

ऐसा होने पर सरकारी कर्मचारी बेकार में किसी का काम टाल करके उससे पैसे नहीं वसूल सकेंगे।

6. घूस लेने और देने वालों के लिए सख्त से सख्त सजा का प्रावधान करके :

सरकारी नौकरी को 100% सुरक्षित माना जाता है मतलब एक बार आप घुस गए तो कोई आपको निकाल नहीं सकता और अधिकतर होता भी यही है, अगर कोई किसी भ्रष्ट गतिविधि में पकड़ा भी जाता है तो अधिक से अधिक उसे कुछ समय के लिए सस्पेंड कर दिया जाता है और वो पैसे खिला कर फिर से वापस आ जाता है।

इस चीज को बदलने की जरूरत है। भ्रष्टाचार से लिप्त इंसान अपने फायदे के लिए करोड़ों लोगों का नुकसान करता है, खराब सड़के, दवाईयां और खान-पान की चीजें लोगों की जान तक ले लेती है और इसके लिए जिम्मेदार व्यक्ति को सख्त सजा मिलनी ही चाहिए। नौकरी से निकाले जाने के साथ-साथ जेल और भारी जुर्माने का भी प्रावधान होना चाहिए। मीडिया को भी ऐसे लोगों को समाज के सामने लाने में कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए। रिश्वत लेने वालों के साथ-साथ उन लोगों के लिए भी कठोर सजा का प्रावधान होना चाहिए जो सरकारी कर्मचारियों को रिश्वत या घूस देने की कोशिश करते हैं।

जैसे ही भ्रष्टाचार में लिप्त कुछ लोगों पर कानून का डंडा चलेगा ... भ्रष्टाचार का ग्राफ तेजी से नीचे गिरने लगेगा।

7. स्पीडी जजमेंट देकर :

भारत में अपराधियों के बीच डर कम होने का एक बड़ा कारण है यहाँ की बेहद धीमी न्याय प्रक्रिया, जिसे ये फेमस फिल्मी डायलॉग ''तारीख पे तारीख...तारीख पे तारीख...'' बखूबी बयान करता है। अपराधी जानता है कि अगर वो पकड़ा भी जाता है तो उसे सजा मिलने में दशकों बीत जायेंगे, इसलिए वो और भी निडर होकर अपराध करता है। फ्रास्ट ट्रैक कोर्ट्स लोकपाल और नए जज की नियुक्ति और तकनीक के प्रयोग से इस प्रक्रिया को जल्द से जल्द तेज बनाया जाना चाहिए

8. भ्रष्टाचारियों की मदद लेकर :

अगर चोरी रोकनी है तो जानना बेहतर होगा कि आखिर चोरी होती कैसे हैं और इस बारे में चोर से अच्छा कौन बता पाएगा ? इसी तरह अगर भ्रष्टाचार रोकना है तो हमें इसमें दोषी पाए गए लोगों को ही मदद लेनी चाहिए कि इसे रोका कैसे

जाए। ये सिस्टम के सारे लूप होल्स जानते हैं और एक मजबूत प्रणाली बनाने में काफी मदद कर सकते हैं। शायद हम इस तरह से मदद करने वालों की सजा में कुछ कमी करने का प्रोत्साहन देकर उन्हें मदद करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार पहले ही करोड़ों बच्चों से उनका बचपन, युवाओं से उनकी नौकरी और लोगों से उनका जीवन छीन चुका है। हमें किसी भी कीमत पर इसे रोकना होगा। आज आज़ाद भारत को एक बार फिर देशभक्तों की जरूरत है... खादी का कुर्ता पहन लेने और जय हिंद बोल देने से कोई देशभक्त नहीं बन जाता... देशभक्त वो होता है जो अपने देश की जनता को अपना समझता है और उसके दुखों और समस्याओं के लिए हर हालात से मुकाबला करने को तैयार रहता है। यदि हमें भारत को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है तो हमें संसद में नेताओं को नहीं देशभक्तों को भेजना होगा... और अगर कोई देशभक्त न नज़र आये तो हमें खुद वो देशभक्त बनना होगा... तभी कभी मानव सभ्यता का सबसे महान रहा हमारा भारत फिर से दुनिया का महानतम देश बन पायेगा और हम गर्व के साथ कह सकेंगे-**मेरा भारत महान**

जय हिंद, जय भारत

❋ ❋ ❋ ❋

संघर्ष की उड़ान

शुभी चौबे
निरीक्षक

सपनों की उड़ान में, हर कदम पर जोर दिया,
कठिन परिश्रम से ही, सफलता का शोर किया ।

मेहनत की राहों में, ना कभी थकन महसूस हुई,
हर मुश्किल को पार कर, नई मंजिल की और बढ़ी ।

दृढ़ निश्चय के साथ, हर संघर्ष का सामना किया,
अडिग विश्वास के बल पर, हर बाधा को पराजित किया।

कर्मठता का दीपक, अंधेरों में भी प्रकाश फैलाएं,
सफलता की सीढ़ी पर, कदम पर कदम आगे बढ़ जाए।

यही संदेश है जीवन का, कभी ना हार मानना,
मेहनत और समर्पण से, हर सपना साकार करना ।

❋ ❋ ❋ ❋

भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत

(सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित निबंध प्रतियोगिता से चुना हुआ निबंध)

रविभूषण सिंह
निरीक्षक

किसी देश के विकास में भ्रष्टाचार एक समस्या है और भारत देश इससे अछूता नहीं है। भ्रष्टाचार एक बीमारी है जो देश को अंदर से खोखला कर रहा है। किसी भी देश की प्रगति के लिए यह परम आवश्यक है कि वह भ्रष्टाचार मुक्त हो। आज टीवी चैनलों में बैठे राजनीतिक प्रतिनिधि वैसे तो नैतिकता तथा उच्च मापदंड का दावा तो करते हैं किंतु यह एक कटु सत्य है कि देश को आज भी भ्रष्टाचार की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। चौराहे पर लाल बत्ती पार करने पर यातायात पुलिस को धन की पेशकश करना या नियत तिथि के बाद कार्यालयों में फार्म जमा करने के लिए धन की पेशकश करना बहुत ही आम बात है। भ्रष्टाचार का सीधा असर देश के विकास पर पड़ता है। यह विकास की गति को धीमा कर देता है। समाज की विभिन्न कुरीतियों में से एक यह भी है कि जो आज भी जीवित है और लगातार फल-फूल रहा है।

वैसे तो हमारे देश में भ्रष्टाचार के अनेकों कारण है किंतु वर्तमान परिदृश्य में अनियंत्रित रूप से बढ़ती जनसंख्या की तुलना में सीमित रोजगार के अवसर एक प्रमुख कारण है। युवाओं के योग्य होने पर भी रोजगार के अवसरों की कमी है परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार के माध्यम से युवा नौकरी प्राप्त करना चाहता है और इस प्रकार से भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। स्वाभाविक है भ्रष्टाचार से उपजा वृक्ष भविष्य में भ्रष्टाचार को ही बढ़ावा देता है। भ्रष्टाचार में दोषी पाये जाने पर सख्त दंड का प्रावधान न होना भी एक कारण है। वर्तमान में भारत में न्यायालय प्रक्रिया में बहुत लंबा समय लगता है जिसके कारण भ्रष्टाचार में लिप्त होने पर भी अपराधी न्यायालय की लंबी और लचर प्रक्रिया का अनुचित लाभ लेता है तथा कई बार बच भी जाते हैं किंतु व्यक्ति की महत्वाकांक्षा, लालच और आपसी प्रतिस्पर्धा भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है। रोजगार के सीमित अवसरों के चलते आजीविका कमाने के लिए लोग अनुचित और भ्रष्ट तरीकों को अपनाने से परहेज नहीं करते। भ्रष्टाचार का एक कारण देश के वर्ग विशेष का कम शिक्षित होना भी है। सरकार द्वारा गांवों तथा देशों के पिछड़े इलाकों के विकास हेतु बहुत से कार्यक्रम चलाये जाते हैं किंतु जानकारी एवं शिक्षा के अभाव के कारण इनमें से ज्यादातर भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते हैं।

भ्रष्टाचार से मुक्ति हेतु देश में शिक्षा का प्रसार अति आवश्यक है। स्कूलों तथा शिक्षण संस्थानों में, ईमानदारी को बढ़ावा देने हेतु पाठ्यक्रम शामिल किए जाने चाहिए। देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित हो तथा भ्रष्टाचार के प्रति सतर्क हो। देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत छोटे पदों से लेकर शीर्ष पदों पर बैठे लोगों के भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए सरकार की देखरेख में स्टिंग ऑपरेशन किए जाने चाहिए तथा भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाने पर कठोर दंड का प्रावधान होना चाहिए।

वर्तमान समय प्रौद्योगिकी का है। देश के विभिन्न राज्यों में जन सामान्य की सुनवाई हेतु पोर्टल की व्यवस्था है। इसी अनुक्रम में भ्रष्टाचार से संबंधित मामलों के लिए अलग से व्यवस्था की जानी चाहिए तथा फास्ट ट्रैक कोर्ट के माध्यम से मामले का निपटारा किया जाए एवं दोषी पाए जाने पर तत्काल एवं कठोर दंड का प्रावधान होना चाहिए।

वर्तमान समय प्रौद्योगिकी का है। देश के विभिन्न राज्यों में जन सामान्य की सुनवाई हेतु पोर्टल की व्यवस्था है। इसी अनुक्रम में भ्रष्टाचार से संबंधित मामलों के लिए अलग से व्यवस्था की जानी चाहिए तथा फास्ट ट्रैक कोर्ट के माध्यम से मामले का निपटारा किया जाए एवं दोषी पाये जाने पर तत्काल एवं कठोर दंड का प्रावधान हो। ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति को यह पूर्ण विश्वास हो कि यदि कोई भ्रष्टाचार करता है तो वह दंडित किया जाएगा। भ्रष्टाचार मुक्त भारत के बिना विकसित भारत की कल्पना व्यर्थ है। देश के प्रत्येक नागरिक को अपना काम ईमानदारी पूर्वक करना चाहिए। उच्च आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए। देश को सफलता के शिखर पर ले जाने के लिए प्रत्येक नागरिक का मिलकर काम करने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए ।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत : विकसित भारत

(सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित निबंध प्रतियोगिता से चुना हुआ निबंध)

राजकिशोर यादव
कार्यकारी सहायक

केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा इस वर्ष दिनांक 31.10.2022 से दिनांक 06.11.2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है एवं इसे लेकर देश भर में भिन्न-भिन्न संस्थाओं के द्वारा भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किये जा रहे हैं एवं इस बार का विषय (Theme) है ''भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत''।

भ्रष्टाचार हमारी राष्ट्रीय समस्या है। ऐसे व्यक्ति जो अपने कर्तव्यों की अवेहलना कर निजी स्वार्थ में लिप्त रहते हैं एवं नियम के विरूद्ध जाकर कोई कार्य करते हैं भ्रष्टाचारी कहलाते हैं। आज हमारे देश में भ्रष्टाचार की जड़े बहुत गहरे तक समाहित हो चुकी है।

भारत के संदर्भ में देखा जाए तो कोई भी मंत्रालय, क्षेत्र या कोई भी विभाग, भ्रष्टाचार से नहीं बचा है जिस पर कि आरोप न लगे हो।देश सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, व्यवसायिक, शैक्षणिक, खेल, मीडिया, आदि विभिन्न स्तरों पर भ्रष्टाचार का समस्या का दंश झेल रहा है।यह समस्या अंदर से हमारे देश को दीमक की तरह खोखला कर रही है। जिससे कि विश्व पटल पर हमारी छवि धूमिल हो रही है। जनवरी 2022 में भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक 2021 ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल द्वारा कुल 180 देशों के लिए जारी किया गया था जिसमें भारत को 85 वां स्थान प्राप्त हुआ हो जो कि चिंतनीय है।

जब तक इस राष्ट्रीय समस्या का स्थाई निदान नहीं मिलना तब तक कोई राष्ट्र पूर्ण रूप से उन्नति को प्राप्त नहीं कर सकता।यह कदम-कदम पर प्रगति को राह का कांटा बनता चला जाता है।

भ्रष्टाचार के प्रमुख मूल कारण -

1. महंगी शिक्षा - शिक्षा के बाजारीकरण ने इसे इतना महंगा कर दिया है कि आज जब एक युवा अपने शिक्षा पर लाखों रूपये खर्च करके किसी तरह किसी पद को हासिल करता है तो उसका सबसे पहला ध्येय यही होता है कि अपनी शिक्षा पर खर्च राशि को किसी भी तरह से ब्याजसहित वसूले फिर उसकी यही सोच भ्रष्टाचार को जन्म देती है और वो भ्रष्टाचार के दलदल में फसता चला जाता है।

2. न्याय-व्यवस्था की विफलता - भ्रष्टाचार का एक मुख्य कारण यह भी है कि प्रभावशाली लोग अपने धनबल, बाहुबल एवं पहुंच के चलते घोटाले, क्राइम करके पाक साफ होकर निकल जाते हैं जो हमारे युवापीढ़ी को इस बात के लिए प्रेरित करता है कि यदि किसी के पास पर्याप्त धनबल, बाहुबल एवं पहुंच है तो कोई कुछ भी नहीं कर सकता है और यही प्रेरणा उसे धन, बाहुबल प्राप्त करने के लिए उकसाती है तत्पश्चात वह भ्रष्टाचार की निरंतर में चला जाता है जहाँ से यह फिर कभी निकल नहीं पाता।

3. जन-जागृति का अभाव - हमारे देश की बहुसंख्यक आबादी अपने अधिकारों से वंचित है क्योंकि उसे नियमों की जानकारी नहीं होती जिसका लाभ उठाकर प्रभावशाली लोग उसका शोषण करने लगते हैं और लोग भ्रष्टाचार के चक्की में पिसते चले जाते हैं।

4. व्यक्ति में असंतोष की प्रवृत्ति - कोई व्यक्ति कितना भी कुछ हासिल कर लें परंतु उसकी और अधिक प्राप्त कर लेने की

आकांक्षा कभी खत्म नहीं होती है। कोई चीज की लालसा रखने पर यदि उसे वह चीज आसानी से प्राप्त नहीं होती तब वह किसी प्रकार उसे हासिल करने के लिए कोई भी हथकंड़े अपनाने लगता है तो इस प्रकार की परिस्थितियाँ भ्रष्टाचार को जन्म देती है और अंततः वह भ्रष्टाचार करने लगता है।

5. स्वार्थ की प्रवृत्ति - बात चाहे किसी व्यक्ति को ही या फिर किसी समाज या संप्रदाय की लोगों में निजी स्वार्थ की भावना हमेशा असामनता अर्थिक सामाजिक व प्रतिष्ठा के मतभेद को बढ़ावा देती है।

किसी उच्च पद पर आसीन अधिकारी प्रायः गुणवत्ता की अनदेखी कर अपने समाज परिवार अथवा संप्रदाय के लोगों को प्राथमिकता देने लगता है जो एक दृश्य भ्रष्टाचार ही है और इस तरह के व्यक्ति सदैव न्याय की अनदेखी करता चला जाता है।

6. जीवन-मूल्यों का हास और चारित्रिक पतन - आज व्यक्ति के जीवन से मानवीय-मूल्यों का ह्रास हो जाना जिससे उचित-अनुचित का अंतर विभेद कर पाना उसके लिए मुश्किल होता चला जा रहा है। जिससे कि उसका चारित्रिक पतन हो जाता आए दिन हम न्यूज पेपरों में प्रायः सगे-संबंधियों में आपस में मर्डर की घटना पढ़ते है।

अतः जो व्यक्ति अपने सगे-संबंधियों का मर्डर कर सकता है उससे अन्य लोगों के हितों की तो आशा ही नहीं की जा सकती ऐसे संवेदन और मूल्यहीन दुष्चरित्र व्यक्ति भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते है।

हालांकि भारत सरकार द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ समय-समय पर कई नियम बनाए गए जिनमें - भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम 1947, दंड विधि संशोधन अधिनियम 1952, भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988, सूचना का अधिकार अधिनियम 2005, लोकपाल एवं लोक आयुक्त अधिनियम 2013, व्हिसल ब्लोअर्स सुरक्षा अधिनियम 2011, काला धन एवं मनी लॉड्रिंग निरोधक अधिनियम बेनामी लेन-देन (निषेध) अधिनियम आदि एवं साथ ही साथ इससे निपटने के लिए कई संस्थान जैसे - केंद्रीय सतर्कता आयोग, आयकर विभाग, केंद्रीय उत्पाद शुल्क विभाग, सी.बी.आई., ई.डी आदि की स्थापना भी की है।

हालांकि इन सबके बावजूद भ्रष्टाचार मुक्त भारत - विकसित भारत बनाने हेतु निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैः-

1. जनान्दोलन - भ्रष्टाचार को रोकने का सबसे मुख्य और महत्वपूर्ण उपाय जनान्दोलन के द्वारा लोगों को नियमों - अधिकारों के बारे में बताकर इस पर काफी हद तक अंकुश लगाया जा सकता है। जनान्दोलन की ही सफलता को देखते हुए भारत सरकार ने भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए लोकपाल विधेयक संसद के सदनों राज्यसभा एवं लोकसभा से पारित किया। इस गठित लोकपाल की जांच के दायरे में प्रधानमंत्री से लेकर समूह-घ तक के अधिकारी/कर्मचारी आएंगे, जबकि राज्यों में लोकायुक्त के दायरे में मुख्यमंत्री से लेकर राज्य सरकार से अधिकारी तक शामिल होंगे।

2. सख्त कानून - कठोर से कठोर कानून तथा इसका प्रचार प्रसार करके भ्रष्टाचार पर रोक लगाई जा सकती है यदि जनमानस को पता हो कि भ्रष्टाचार करने वाला व्यक्ति सजा से नहीं बच सकता, भले ही वह देश की किसी भी सर्वोच्च सत्ता पर विराजमान हो तो प्रत्येक व्यक्ति गलत कार्य करने से पहले सोचेगा। दंड का यह भय जब तक नहीं होगा, तब तक भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लगाया जा सकता है।

3. निःशुल्क उच्चशिक्षा - जब देश के प्रत्येक युवा को निःशुल्क उच्चशिक्षा का अधिकार प्राप्त होगा इससे भी भ्रष्टाचार में कमी आएंगी। हालांकि सरकार द्वारा प्रथम दृष्टया 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्रदान करना इस दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है।

4. स्टिंग ऑपरेशन - हमारे देश का मीडिया काफी मजबूत एवं सशक्त है और बोलने व अपनी राय व्यक्त करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है भ्रष्ट अधिकारियों को बेनकाब करने के लिए इस अधिकार का पूरा उपयोग किया जाना चाहिए। मीडिया को नियमित रूप से स्टिंग ऑपरेशन करने चाहिए और भ्रष्ट प्रथाओं में शामिल होने वाले लोगों का नाम उजागर करना चाहिए। यह केवल दोषी को सबक ही नहीं सिखाएगा बल्कि आम जनता में डर भी पैदा करेगा। वे भ्रष्ट तरीकों का उपयोग करने से पहले कई बार सोचेगें।

5. पारदर्शिता - देश और जनहित के प्रत्येक कार्य में पारदर्शिता लाकर भी भ्रष्टाचार को रोका जा सकता है क्योंकि अधिकांश भ्रष्टाचार गोपनीयता के नाम पर ही होता है सूचना का अधिकार यद्यपि इस दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है, तथापि इसको और अधिक व्यापक बनाने के साथ-साथ इसका पर्याप्त प्रचार-प्रसार किया जाना आवश्यक है। ई-गर्वनेंस के माध्यम से हमारी केंद्रीय सरकार सभी सरकारी कार्यों में पारदर्शिता लाने का काम भारत सरकार ने सभी अपने अधीन कार्यालयीन कार्यों को ई-ऑफिस के माध्यम से करने का निर्देश भी दे दिया है।

6. कार्यस्थल पर व्यक्ति की सुरक्षा और संरक्षण - प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकार और कर्तव्यों का निर्वाह करते समय यह आवश्यक है कि उसके सुरक्षा तथा संरक्षण का इंतजाम हो। जिससे व्यक्ति निडर होकर अपना कार्य पूर्ण ईमानदारी के साथ कर सके। इसके सी.सी. टीवी पर्याप्त सुरक्षा गार्डों की नियुक्ति हो। यदि कार्य करने वाला व्यक्ति को पूर्ण सुरक्षा और संरक्षण मिले तो धनबल और बाहुबल का डर दिखाकर कोई भी व्यक्ति गलत कार्य नही कर सकेगा ।

महिलाकामिर्यों के लिए तो कार्यस्थल पर सुरक्षा और संरक्षण देने हेतु कानून बनाया भी जा चुका है, जिससे उनका किसी भी तरह का शोषण होने से रोका जा सके। यद्यपि इस कानून को और अधिक व्यापक तथा प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

7. नैतिक मूल्यों की स्थापना - इसके लिए समाज-सुधारकों और धर्म प्रचारकों के साथ-साथ शिक्षक वर्ग अपितु सभी व्यक्ति को भी आगे आना चाहिए इसके लिए स्कूली स्तर नैतिक मूल्यों, सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी से संबंधित विषयों को नियमित पाठ्यक्रम में शामिल करके शुरू से बच्चों में इसका प्रचार-प्रसार करना होगा।

8. सामाजिक बहिष्कार - किसी भी तरह के भ्रष्टाचार के कंठ में आकंठ डुबे हुए व्यक्ति को समाज व परिवार दोनों से बहिष्कार करना होगा एवं पूर्ण रूपेण सामाजिक बहिष्कार करना होगा ताकि ऐसे लोगों के मनोबल को तोड़ा जा सके जिससे वह इसकी पुनरावृत्ति न कर सके। यह उपाय भ्रष्टाचार रोकने में सबसे कारगार उपाय हो सकता है।

अतः उपरोक्त उपायों को ध्यान में रखते हुए सभी भारतीय नागरिकों को इसे दूर करने हेतु कृतसंकल्प होने की आवश्यकता है। जिससे भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियों से अपने राष्ट्र को मुक्त कराया जा सके और ''भ्रष्टाचार मुक्त भारत'' के सपने को साकार किया जा सके।

सत्यता के रथ पर ईमानदारी के पथ पर
आओं हम सब हो सवार।
फिर बनेगा विकसित भारत
जड़ से खत्म होगा भ्रष्टाचार।।

सलीम का सपना

(हिंदी पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आयोजित चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता से चुनी हुई कहानी)

व्ही.बी.एस.राजपूत
अधीक्षक

समीप अपनी अम्मी के साथ छोटे से गांव तिलाई में कश्मीर के पहाड़ी इलाके में रहता था। उसके अब्बू नहीं थे। अम्मी गाँव में ही खेतों में मजदूरी का कार्य करके उसका और परिवार का गुजर बसर करती थी।उसके दो छोटे भाई और थे।पहाड़ी इलाका होने की वजह से उसका स्कूल भी पहाड़ की ढलान पर था जहाँ सभी बच्चे नियमित रूप से खेलते कूदते हुए ही जाते थे एवं पढ़कर जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए मास्टर जी से उम्मीद भरी बातें भी सुना करते थे। सब कुछ ठीक ठाक गुजर रहा था।सलीम भी कक्षा पांच में आ गया था।कक्षा पांच के बाद तो उसके गाँव में स्कूल भी नहीं था लेकिन पहाड़ के नीचे मुख्य सड़क पर लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर आठवी तक का स्कूल था। सलीम पहाड़ी क्षेत्र का होने के कारण बचपन से ही कठोर परिश्रम करते हुए सभी लोगों को देखता था। अपनी अम्मी को सुबह से शाम तक सदैव मेहनत के कार्य करते हुए देखता रहता था लेकिन कभी उनके चेहरे पर उसने चिंता या परेशानी नहीं देखी।सारे गांव के लोग प्रकृति के सुंदर वातावरण में अपने-अपने कार्य में लगे रहते थे। गांव में बीच में ही सुंदर झील थी, जहाँ पर अब्दुल चाचा अपनी छोटी सी नाव में बैठे रहते थे।कभी कोई पर्यटक आता तो उसे नाव में घुमा देते थे।उनकी नाव में कुछ खाने पीने की वस्तुएं आदि रहती थी, जिसकी बिक्री से उनका भी गुजर बसर होता था। गाँव में बच्चे हो या बड़े सभी बहुत मिलनसार थे एवं प्रेम से मिल जुलकर रहते थे।जो भी पहाड़ में पर्यटक घुमने आते थे, वे भी जब गाँव से गुजरते थे तो उनके साथ भी सभी बहुत सहयोग से उनकी मदद करते थे।समय गुजर रहा था लेकिन एक दिन जिस घटना ने पूरी दुनिया को अपने प्रभाव में ले लिया था उसमें तिलाई गाँव भी बच नहीं पाया। कोरोना नामक वायरस के असर से कोई भी अछूता नहीं रहा। गाँव में भी कुछ लोग इससे प्रभावित हो गए थे सभी तरफ सरकार द्वारा लगाई गई लॉक डाउन की पाबंदियां लागू थी।कुछ माह तक तो सभी घर में बिलकुल कैद ही रहे थे।बाहर निकलना, घूमना सब बंद हो गया।सलीम भी छोटे से घर में अपने भाईयों के साथ ही खिड़की से झांकता रहता था।एक दूसरे के सहयोग एवं सरकारी मदद से सभी गांव वालों का किसी तरह गुजारा चल रहा था।सबके चेहरे पर हमेशा मास्क रहते थे। लोग दूर दूर से ही बात करते थे।कोरोना का इतना डर था कि अपने भी पराये से लगने लगे थे।अम्मी की हिदायत थी कि अकेले कही नहीं जाना है।दोस्तों के साथ खेलना कूदना सब बंद हो गया था। स्कूल तो पूरे साल भर बंद रहे थे।एक दिन सलीम अपनी अम्मी के साथ गांव में झील के किनारे वाले रास्ते से जा रहा था।उसने देखा कि उसके गांव में लगभग सभी लोग उदास से हैं, क्योंकि कोरोना के कारण सभी रोजगार लगभग बंद हो गए है।सभी तो छोटे-छोटे कार्य करते थे।पहाड़ी

इलाके में ढलान वाली भूमि पर खेती बहुत मुश्किल से होती थी। सिर्फ अपने परिवार के लिए ही उपज हो पाती थी। पर्यटक आना बंद हो गए थे। उनके आने से ही थोड़ी बहुत आमदनी का जरिया था। सलीम ने देखा की अब्दुल चाचा भी आज बहुत उदास से बैठे हैं। उनकी नाव से आस-पास आजकल कोई भी नहीं आता था, जिसको झील में घुमाकर वे कुछ पैसे कमा सकें। सलीम एवं उसकी अम्मी की चाचा से आते जाते दुआ सलाम हुई। झील के बाजू से निकलते समय सलीम के मन में यही बात आ रही थी कि यदि उसके गांव में कोई आमदनी का ज्यादा जरिया होता तो सभी लोगों को ज्यादा काम मिलता और लोग ज्यादा खुश रहते। उसको हमेशा अपने स्कूल के मास्टरजी की बात याद आती रहती थी कि बच्चों को हमेशा बड़े सपने देखना चाहिए और उन्हें पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करना चाहिए। सलीम सोच रहा था कि उसके गांव में पहाड़ी फल जैसे खुबानी, सेव, पहाड़ी बादाम आदि के कई पेड़ हैं, जिनमें फल तो बहुत लगते हैं लेकिन ज्यादातर तो खराब ही हो जाते हैं, क्योंकि उनकी बिक्री के लिए कोई शहर में नहीं जाता है। शहर तो बहुत दूर है। पहाड़ से पांच किलोमीटर उतरने पर एक छोटी सड़क आती है। वहां से 20 कि.मी. दूर शहर है। इतनी दूर फल बेचने कोई नहीं जाता है। क्योंकि पहाड़ी ढलान पर कच्चे रास्ते से उतरकर ही छोटी सड़क पर सामान के साथ उतरना बहुत कठिन कार्य था। सलीम सोच रहा था कि यदि उसके गांव तक सड़क बन जाए और उसके गांव की झील में ही बहुत सी नाव हो या और उनमें उसके गांव के फल, सब्जी आदि की बिक्री हो तो बहुत ही अच्छा होगा। खैर समय गुजरता गया। कोरोना का प्रकोप भी दो वर्ष बाद लगभग समाप्त भी हो गया। सलीम अब आठवीं क्लास में आ गया था और पांचवी के बाद पढ़ने के लिए अपने दोस्तों के साथ गांव से नीचे सड़क के किनारे वाले गांव के स्कूल में जाता था। उसका लगभग दस किलोमीटर पहाड़ पर चढ़ना और उतरना हो जाता था। खेल-खेल में ही अपने स्कूल का बस्ता पीठ पर टांगकर ये सभी बच्चे स्कूल जाते थे। बचपन से ही पहाड़ पर चढ़ने के कारण इनके फेंफड़े बहुत स्वस्थ थे। पहाड़ की ढलान, टेढ़े मेढ़े रास्ते इन बच्चों के लिए तो खेल के मैदान ही थे। बहुत तेजी से ये इस पहाड़ी संकरे रास्तों पर चढ़ जाते थे और उतर जाते थे। अन्य लोगों के लिए तो ये पहाड़ी रास्ते बहुत जोखिम भरे थे क्योंकि जरा पैर फिसला और नीचे खाई में गिरने का डर। एक दिन बहुत भारी बारिश हो गई। उसके बाद बर्फ तेजी से गिरने लगी। सलीम अपने दोस्तों के साथ स्कूल से लौट रहा था। भारी बर्फबारी की वजह से वह लोग पहाड़ी के बीच में ही रुक कर रह गए। एक बड़े पत्थर की नीचे आड़ में बच्चे खड़े रहे। उसी समय उनके गांव में कुछ पर्यटक ऊपर पहाड़ी से लौट रहे थे। वे लोग भी बीच पहाड़ी में फस गए थे। उनके साथ कुछ बच्चे भी थे। सारे रास्ते पर बर्फ ही बर्फ जम गई थी। रास्ता समझ ही नहीं आ रहा था। स्थिति यह हो गई थी पर्यटक ना तो ऊपर गांव में जा सकते थे, ना ही नीचे पहाड़ी पर जा सकते थे। जब सलीम और उसके दोस्तों ने देखा तो वे पर्यटकों के पास गए। उन लोगों की हालात बड़ी खराब थी। उन्हें ऐसी उम्मीद नहीं थी की मौसम अचानक इतना खराब हो जाएगा। उनमें से एक व्यक्ति तो हृदय रोग के मरीज थे। भीषण ठंड, सर्द हवा एवं बारिश की वजह से उनकी हालत बहुत ही खराब हो गई थी। रोगी की दवा तो 20 किलोमीटर दूर शहर में होटल में रखी हुई थी। उन पर्यटकों ने सलीम एवं उसके दोस्तों से कहा की किसी तरह उनको नीचे मुख्य सड़क तक पहुंचना है, अन्यथा दवा के अभाव में रोगी पर्यटक, जीवित ही नहीं रह पाएंगे। ऐसा डर उनके मन में आ गया था। मुख्य सड़क पर उनकी टैक्सी खड़ी है, जहाँ से वे शहर जा सकते हैं। चूंकि शाम हो गई थी। सलीम के सभी दोस्त अपने घर किसी तरह पहुंचना चाहते थे, क्योंकि सभी के परिवार वाले भी बहुत चिंतित हो गए थे। अतः चाहते हुए भी वे बच्चे उन पर्यटकों की मदद करने में असमर्थ थे लेकिन सलीम के मन में कुछ और चल रहा था। उसके मन में विचार आ रहे थे कि उसके अब्बा हमेशा कहते थे कि हमें किसी भी स्थिति में किसी भी मुसीबत में पड़े व्यक्ति की मदद करने का पूरा प्रयास करना चाहिए। चाहे हमें कितनी भी परेशानी उठानी पड़े। हम जब निःस्वार्थ भाव से सबकी मदद करते हैं तो ऊपर वाला

मालिक, जिसने दुनिया बनाई है, हमारी मदद करता है।उसने अपने दोस्तों से कहा कि वे किसी तरह घर पहुंचे और वह बाद में आ जाएगा। दोस्तों ने बहुत कहा कि वह भी गांव चले पर सलीम नहीं माना।दोस्त किसी तरह अपने गांव के रास्ते पर धीरे-धीरे चले गए। इस पर्यटकों को किसी तरह नीचे मुख्य सड़क तक पहुंचाने का रास्ता सलीम सोच रहा था।शाम गहराती जा रही थी। पर्यटकों को सलीम हिम्मत बंधा रहा था कि घबराने की बात नहीं है।जब चूंकि बर्फबारी रूक गई है, अतः वे धीरे-धीरे एक दुसरे का हाथ पकड़कर उसके पीछे-पीछे पहाड़ी की ढलान पर संभलकर उतरें।बर्फ गिरने से संकरे रास्ते की बर्फ बहुत फिसलन वाली हो गई थी।कोई भी अनजान व्यक्ति तो इस रास्ते पर कुछ कदम भी नहीं चल सकता था लेकिन सलीम इन्हीं रास्तों से बचपन से ही आता जाता था, अतः वह भली भांति परिचित था।एक दुसरे का हाथ पकड़कर वह सभी बहुत धीरे-धीरे तीन घंटे में ही नीचे पहुंच पाए। वहाँ पर्यटकों की टैक्सी खड़ी हुई थी।नीचे पहुंचकर सभी की जान में जान आई।वास्तव में उन्हें तो उम्मीद ही नहीं थी कि वे सकुशल नीचे पहुंच पाएंगे।सभी ने सलीम को गले से लगा लिया।वे बोले की तुम्हारी हिम्मत और विश्वास से ही हम सब आज यहाँ बच कर आए हैं । पर्यटकों ने उसे इनाम देने की कोशिश की पर सलीम ने नहीं लिया।वह बोला यह तो मेरा फर्ज था।मैंने अपने जीवन में जो सीखा, वही आज काम आया है।सभी पर्यटकों को छोड़कर अंधेरी रात में सलीम अपने बंद स्कूल के बरामदे में ही बैठा रहा।स्कूल मुख्य सड़क के बाजू में ही था। सुबह होते ही सलीम को ढूंढते हुए गांव वाले नीचे आ रहे थे।सलीम गांव की और पहाड़ी पर ऊपर आ रहा था। सलीम को सही सलामत देखकर सभी बहुत खुश हुए।सभी बोले की हमें पूरा विश्वास था के तुम सुरक्षित होगें। गांव के लोगों ने सलीम को शाबासी दी और कहा की वास्तव में वह बहुत हिम्मत वाला है, जिसने इतनी छोटी सी उम्र में ही इतने साहस का काम किया है।कुछ दिनों बाद जब मौसम बहुत साफ था, तब अचानक सलीम के स्कूल में दिल्ली से सरकार के एक बड़े अधिकारी आये।मास्टरजी ने उनका बहुत सम्मान से स्वागत किया।उन्होंने पूछा की क्या उनके स्कूल में सलीम नाम का कोई विद्यार्थी पढ़ता है, तब मास्टर जी ने सलीम को बुलाया ।सलीम को देखते ही वह बहुत प्रसन्न हुए उन्होंने कहा कि कुछ दिनों पूर्व सलीम ने जिन पर्यटकों को पहाड़ी रास्ते से सुरक्षित नीचे पहुंचाया था, उनमें से एक बड़े सरकारी अधिकारी थे, जो हृदय रोग से पीड़ित थे। उन्होंने इस घटना की जानकारी सरकार को दी है एवं कहा है कि तिलाई गांव के सलीम नाम के एक छोटे बच्चे की वजह से ही कई पर्यटकों की जान बच पाई थी।ऐसे वीर बालक को बहुत प्रोत्साहन एवं इनाम मिलना चाहिए।अतः सलीम को सरकार से पुरस्कार मिला, उससे पूछा गया कि उसकी क्या कोई बड़ी इच्छा है, जिसे सरकार अवश्य पूरा करेगी।तब सलीम ने कहा की यदि मुख्य सड़क से उसके तिलाई गांव तक एक पक्की सड़क बन जाए तो बहुत ही अच्छा होगा, यही उसकी बचपन की इच्छा है।सरकार द्वारा सलीम की मांग के अनुरूप एक घुमावदार सड़क पहाड़ी के नीचे मुख्य सड़क से ऊपर उसके गांव तक कुछ ही माह में बना दी गई।सारे गांव में खुशी की लहर फैल गई थी।सड़क बनने से गांव में अब खुशहाली आने लगी थी। पर्यटकों की संख्या भी कई गुना बढ़ गई थी।गांव में कई लोग अपने फल बेचने शहर जाने लगे थी।पर्यटकों की संख्या भी कई गुना बढ़ गई थी।गांव में कई लोग अपने फल बेचने शहर जाने लगे थे।कई लोगों ने अपनी छोटी-छोटी नाव में झील में पहाड़ी फल की दुकान सजा ली थी।सभी की बहुत बिक्री होती थी।पर्यटकों को भी वे नावों में झील में घुमाते थे।यही गाँव का मुख्य रोजगार का साधन बन गया था।सलीम का बचपन का देखा गया सपना आज सच हो गया था।कई पर्यटक खरीददारी करने के साथ-साथ अब्दुल चाचा से सलीम के किस्से सुना करते थे।सारे गांव को ही नहीं इलाके के कई गांव के लोग सलीम के बहादुरी, दयालुता के किस्से अपने बच्चों को सुनाकर प्रेरित करते थे।

❋❋❋❋

"एक अधूरी आस"

(हिंदी पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आयोजित चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता से चुनी हुई कहानी)

शुभम कुमार
हवलदार

"बचपन" जीवन की यात्रा का ऐसा समय जब प्रत्येक क्षण अपने-आप में आनंद की अनुभूति होती है। "बचपन" जिसे पुनः व्यतीत करने के लिए हर एक मन उत्सुक है लेकिन रहीम अपने आज के इस बचपन में उदास है। रहीम को पता भी नहीं कि उसका जीवन ऐसी करवट लेगा कि उसकी खुशियाँ केवल यादों में सिमट कर रह जाएगी जाएंगी। आज वह मन में एक आस लिए अस्पताल जा रहा है। अपनी माँ का हाथ पकड़े वह आगे-आगे कदम बढ़ा रहा है। रास्ते में वीराने झील को देख रहीम पुरानी यादों में डूब जाता है।

बात कुछ महीने पहले की है। रहीम चौथी कक्षा का छात्र है। वह कश्मीर के अनंतनाग जिले में रहता है। रहीम स्वयं को भाग्यशाली मानता था क्योंकि वह पर्यटकों से यह सुनता था कि वह स्वर्ग में रहता है और माने भी क्यों न ऊजली जमीन, नीला गगन और पानी में बहता शिकारा उसे सपनों की दुनिया लगती थी रहीम के पिता मो. अहमद शिकारे से सब्जियों को लाने और ले जाने का कार्य करते थे। रहीम की माँ सकीना फूलों का व्यापार करती थी। रहीम के परिवार की आमदनी पर्यटकों को शिकारे पर घुमाने से भी होती थी। सुबह-सुबह झील के किनारे लोग जमा होते। उनके बीच प्रेम एवं सौहार्द्र का वातावरण था।

रहीम अपने पिता के साथ शिकारे पर स्कूल जाता था। इस दौरान वह अपने मासूम मन में उपजे प्रश्नों को पिता से पूछता। ऐसी ही एक सुबह रहीम ने अपने पिता से पूछा - "अब्बू ये आतंकवादी कौन होते हैं ?"

"बेटा जो लोग हिंसा के रास्ते पर चलते हैं। निर्दोष व्यक्तियों की हत्या कर के आम जनता को डराना चाहते हैं, वे लोग आतंकवादी होते हैं" पिता ने समझाया।

"लेकिन अब्बू हम तो खुदा के साथ जन्नत में रहते हैं फिर भी यहाँ आतंकवादी क्यों हैं ?" रहीम ने पूछा !

"शायद वो भूल चूके हैं कि उनके भीतर खुदा है"

पिता की इस बात पर रहीम कुछ देर तक शांत बैठा रहा देखते ही देखते वह स्कूल पहुंच चुका था।

स्कूल पहुंचकर रहीम को यह पता चलता है कि स्कूल अनिश्चित काल तक के लिए बंद रहेगा। अत्यधिक बर्फबारी या खराब मौसम के कारण ऐसा पहले भी होता था परंतु इस बार कारण भयावह था। संपूर्ण भारत में कोरोना संक्रमण का विस्फोट हो चुका था। रहीम खुश था क्योंकि उसे छुट्टियों में मजे करना पसंद था। कुछ दिन बीते और अब रहीम को स्कूल की

याद आने लगी। उसे अब अपने दोस्तों के साथ खेलना था। एक शाम रहीम ने अपनी माँ सकीना से कहा ''अम्मी मैं अपने स्कूल के दोस्तों से मिलना चाहता हूं।''

सकीना ने कहा ''बेटा अभी लॉकडाउन लगा है हम केवल जरूरी काम के लिए ही बाहर जा सकते हैं।''

''लेकिन क्यों अम्मी'' कबीर ने थोड़े गुस्से से पूछा।

''क्योंकि संक्रमण फैल रहा है, हमें इससे बचाव के नियमों का पालन करना होगा वरना हमारी तबीयत खराब हो जाएगी'' माँ ने रहीम को प्यार से समझाया। रहीम उदास मन से अपने कमरे की ओर जाने लगा तब ही सकीना ने उससे पूछा ''तुम्हें बचाव के नियम याद है ?'' ''जी अम्मी, दो गज दूरी, हाथों की सफाई और मास्क'' यह कहकर रहीम अपने कमरे में चला गया।

दिन बीतते गए और कुछ हफ्तों में रहीम समय की चाल में ढल गया। वह घर में ऑनलाइन पढ़ाई करता और घरेलु कार्यों में अपनी माँ की सहायता करता। उसे अपने दोस्तों की याद आती। कभी-कभी वह मन लगाने के लिए वादियों में छूपकर घूमने जाता। पर्यटकों के आवागमन मे पूर्णतः रोक लग जाने से सकीना के फूलों का व्यापार थम गया था लेकिन मो. अहमद अब भी अपने कार्य का निर्वाह कर रहे थे। लोगों के बिना स्वर्ग की सुंदरता भी सूनी पड़ गई थी। एक दिवस जब रहीम सुबह उठा तब उसने अपनी माँ को गुमसुम एक कोने में बैठा देखा। रहीम को अपनी माँ की चिंता हुई और उसने माँ से इस संबंध में प्रश्न किया माँ ने उत्तर में कहा -

''बेटा तुम्हारे अब्बू की तबीयत कल रात से खराब है, शायद वह संक्रमित हो चुके है। रसूल चाचा अभी उन्हें अस्पताल ले जाएंगे।''

यह सुन रहीम स्तब्ध रह गया। कुछ ही देर में दरवाजे पर एक आहट हुई, रहीम ने तुरंत दरवाजे को खोला। सामन रसूल चाचा थे, उन्होंने सर से पांव तक व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण पहन रखा था। रसूल चाचा ने रहीम को अपनी माँ के पास जाने को कहा और वह मो. अहमद के कमरे में चले गए। थोड़ी देर बाद रसूल चाचा और मो. अहमद व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण पहने बाहर निकले। पिता को ऐसे देख रहीम सहम गया।

मो. अहमद ने अपने पुत्र से कहा ''बेटा रहीम तुम घबराना मत, मैं जल्द ही वापस आ जाऊंगा। अपनी अम्मी का ख्याल रखना।''

''मुझे आपके साथ चलना है'' ऐसा कह कर रहीम अपने पिता की और दौड़ा।

ऐसा करते देख सकीना ने उसे लपक कर पकड़ लिया पहले रहीम ने हाथ-पाँव झकझोर कर स्वयं को छुड़ाने का प्रयत्न किया और असफल होने पर अब्बू-अब्बू पुकारते हुए रोने लगा। यह देख वहाँ उपस्थित सभी लोगों का मन दुखी हो गया। मो. अहमद ने पुत्र को नम आंखों से देखा और कहा -

''खुदा तुम्हारे भीतर है रहीम, तुम ये कभी मत भूलना'' रहीम फिर भी रोता रहा। मो. अहमद ने दिल पर पत्थर रखकर बेटे से विदा लिया। सकीना की आंखों में विवशता के आंसू थे।

झील के ऊपर से उड़ते सीगल पक्षियों की आवाज रहीम को वापस वर्तमान में ले आती है। सचेत होने पर उसे अनुभव होता है कि वह भूतकाल के समय को याद कर रहा था। चौदह दिनों तक रहीम ने भारी मन से अपने पिता से मिलने की आस है लेकिन अब यह असंभव है, निर्यात ने कबीर के बचपन को संघर्ष से भर दिया है।

❋ ❋ ❋ ❋

उम्मीद

(हिंदी पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आयोजित चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता से चुनी हुई कहानी)

अमर कुमार
कार्यकारी सहायक

इमरान एक दस साल का बच्चा, अपनी अम्मी और अब्बू के साथ श्रीनगर के पास एक छोटे से लकड़ी से बने हुए घर में बहुत खुशी के साथ रहते थे। इमरान अपने दोस्तों के साथ पास में ही स्थित एक स्कूल में जाता था तथा उसके अब्बू मजदूरी काम करते हैं और उसकी अम्मी भी घर का सारा काम संभालने के बाद बच्चों के कपड़े सिलने का काम करती थी जिससे उनका परिवार हंसी-खुशी रह रहा था। इमरान पढ़ाई में बहुत होनहार था, वह पढ़ाई के साथ-साथ घर के कामों में भी अपनी अम्मी का हाथ बटाता था।

सब कुछ अच्छे से चल रहा था उनके जीवन में फिर तभी एक बुरी खबर ने पूरे देश को हिला कर रख दिया, वह था कोरोना वायरस की वजह से पूरे देश में लगने वाला लॉकडाउन। इमरान के परिवार ने तो पहले के एक दो महीने निकाल लिए पर जैसे-जैसे लॉकडाउन की अवधि बढ़ती गई

उनका परिवार मुश्किलों से गुजरने लगा। इमरान के अब्बु की मजदूरी लॉकडाउन की वजह से पूरी तरह बंद हो गया था, वह घर पर काफी मायूस से रहने लगे थे, उनका घर चलाना कॉफी मुश्किल हो गया था। इमरान के स्कूल भी बंद हो जाने के कारण तथा अपने दोस्तों से न मिल पाने के कारण काफी उदास रहता था। उसकी अम्मी को यह सब देख काफी बुरा लगता था। हलांकि जम्मू काश्मीर में लॉकडाउन का लगना कोई नई बात नहीं थी परंतु इतना लंबा लॉकडाउन की उन्हें उम्मीद नहीं थी। धीरे-धीरे स्थिति और खराब होती चली गई। उनके घर में अब राशन समाप्त होने लगा, वे लोग अब दिन में एक बार खाना खाकर अपना जीवन यापन करने लगे, ये सब इमरान अपनी बहुत छोटी सी उम्र में देख रहा था पर उसे उम्मीद थी कि एक दिन सबकुछ अच्छा हो जाएगा वह फिर से अपने दोस्तों के साथ स्कूल जा पाएगा और उसके परिवार की स्थिति अच्छी हो जाएगी।

एक दिन घर में राशन न होने कि वजह से वह अपनी बहन के घर, जो कि श्रीनगर में ही रहती थी के लिए निकल रही थी तभी इमरान भी साथ जाने के लिए जिद करने लगा, घर में बैठे-बैठे उसे बहुत दिन हो गए थे तो उसकी अम्मी ने पूरी सुरक्षा का ध्यान रखते हुए उसे और खुद भी मास्क लगाया पूरी बाजू की शर्ट पहनाई तथा रास्ते में किसी भी चीज को हाथ लगाने से मना किया। इमरान अपनी मौसी घर जाने के लिए बहुत उत्सुक था वो दोनों अपने घर से निकल पड़े। रास्ते में इमरान ने डल झील देखा तो बहुत मायूस हो गया क्योंकि झील पूरी वीरान पड़ी थी। गर्मियों के दौरान डल-झील में आमतौर पर विश्व प्रसिद्ध तैरता हुआ बाजार होता था, जिसमें फूल, सब्जियाँ और लोगों को ले जाने वाले शिकारे झील पर तैरते थे। इस साल डल-झील वीरान है, उन्हें आश्चर्य होता है कि क्या श्रीनगर हमेशा ऐसा ही रहेगा यह सवाल उसने अपनी अम्मी से पूछा ? इमरान नकाब के पीछे से अम्मी की आँखों को उमड़ता हुआ देख सकता है। गहरी सांस लेते हुए वह ठंडी हवा का सामना करती है और इमरान की ओर मुड़ती है।

इमरान हम आशा पर उम्मीद पर जीते हैं। यही एकमात्र चीज है जो हमें आगे बढ़ाती रहती है हम यह विश्वास करते रहेंगे कि एक दिन कश्मीर वापस सामान्य स्थिति में आ जाएगी और यह दुनिया भी सामान्य हो जाएगी।

इमरान ने अपनी माँ को गले लगाया और इस उम्मीद के साथ आगे बढ़ा की एक दिन सब अच्छा होगा। एक उम्मीद ही है जिससे हम अपनी जिंदगी को सरलता से किसी भी मुश्किल परिस्थिति में पार पा जाते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमता एवं सूचना प्रोद्योगिकी -
आज के परिदृश्य में भारत के उत्थान में सहयोगी

(हिंदी पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता से चुना हुआ निबंध)

तान्या
आशुलिपिक

"जो तकनीक मानव हित को ध्यान में रखकर बनायी गयी हो तो वो ही सर्वोत्तम तकनीक है"

आज का युग तकनीकी उन्नति का युग है। हर दिन नई तकनीकें जा रही है जो मानव जीवन को आसान और अधिक आरामदायक बना रही है। इसमें कृत्रिम बुद्धिमता और सूचना प्रौद्योगिकी दो ऐसे तकनीकी क्षेत्र है जो मानव जीवन में आधुनिकीकरण की दिशा में अग्रसर किया है और आधुनिक सभ्यता की स्थापना करने के काबिल बनाया है। कृत्रिम बुद्धिमता मानव जैसा बुद्धिमता और निर्णय क्षमता का संकल्प रखता है, जबकि सूचना प्रौद्योगिकी का मुख्य उद्देश्य जानकारी को संगठित रूप से प्राप्त संज्ञान, सहेजना और लोगों तक पहुंचाना है। इन तकनीकों का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है और इसके साथ ही भारत के विकास में भी ये एक महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमता सूचना प्रौद्योगिकी एक दूसरे के काम को आसान बनाते हैं। जैसे कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में कोई भी परीक्षण बदलाव या उपयोग की जाती है उसकी जानकारी हमें सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से (मोबाइल, कम्प्यूटर आदि) दुनिया के किसी भी कोने में मिल जाती है वही सूचना प्रौद्योगिकी सही ढंग से कार्य करें जैसे-डेटा को समझना सीखना संगठित करना और समस्याओं का समाधान में इसकी सहायता कृत्रिम बुद्धिमता करती है।

"पर्याप्त रूप से विकसित किसी भी तकनीकी और जादू में अंतर नहीं किया जा सकता।"

कृत्रिम बुद्धिमता और सूचना प्रौद्योगिकी विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से प्रचलित हो गया है और इससे कई लाभ हुए हैं। आज हम जितनी भी उन्नत प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर रहे है, वह सब इन तकनीकों पर आधारित है। एआई का इस्तेमाल हम अपने सूचना प्रौद्योगिकी में जैसे स्माटफोन में कई सारी एप्लीकेशंस के रूप में सिरी वर्चुअल असिस्टेंट ऑफ गूगल मैप टेस्ला मोटर्स रोबोट स्मार्ट मशीन के रूप में कर रहे हैं।

इन तकनीकों की सबसे बड़ी खासियत स्वचालन (Automation) है और इसका संचार परिवहन उपभोक्ता उत्पादों और सेवा उद्योगों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। स्वचालन से न केवल इन क्षेत्रों में उत्पादकता में वृद्धि होती है, बल्कि कच्चे माल का अधिक कुशल उपयोग कम लीड समय और बेहतर सुरक्षा भी मिलती है। इस स्वचालन तकनीक का एक उदाहरण 'सोफिया' नामक रोबोट है जो एक सामाजिक ह्यमनॉइड रोबोट है, जो बोलने तथा किसी व्यक्ति द्वारा पूछे गए प्रश्नों का अपनी बुद्धि से उत्तर देने में सक्षम है।

इन तकनीकों के माध्यम से मानवीय श्रम बल पर दबाव पड़ेगा और इसके द्वारा जटिल संवेदनशील और खतरनाक कामों को किया जा सकता है जो आम मानवों के लिए कठिन है, जैसे आपदा प्रबंधन आग पर काबू पाना नालियां साफ करना आदि। इसकी भूमिका चिकित्सा क्षेत्र में भी अहम रहेगी क्योंकि इससे हम दावाओं के साइड इफेक्ट, ऑपरेशन, एक्स रे, बीमारी का पता लगाने, जांच, रेडियोंसर्जरी जैसे कामों में कर सकते हैं।

"तकनीक एक अच्छा सेवक है,
परंतु उतना ही बुरा स्वामी है।"

कृत्रिम बुद्धिमता और सूचना प्रौद्योगिकी के अद्वितीयता के कारण पेशेवर क्षेत्रों में कार्यों की हानि हो सकती है क्योंकि कुछ कार्यों को स्वचालन कर सकता है और मानव कामगारों को बेकार बना सकता है। इस तकनीक के उपयोग से व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा को खतरा हो सकता है जो ऑनलाइन आपराधिक गतिविधियों के लिए एक आकर्षक लक्ष्य बनता है।

2017 में फेसबुक कंपनी ने दो रोबोट को आपसी वार्ता के लिए एक कमरे में बिठाया किंतु कुछ ही समय बाद दोनों स्वयं की ऐसी मौलिक भाषा विकसित कर ली, जिसे समझने में वैज्ञानिक सक्षम नहीं थे, अंतः दोनों को नष्ट करना पड़ा।

इन तकनीकों पर अत्याधिक निर्भरता मनुष्य की रचनात्मक शक्ति को समाप्त कर सकती है। साथ ही मनुष्य में आलस्य की प्रवृत्ति को भी बढ़ा सकती है जिससे स्वास्थ्य एवं मनोविकार संबंधी चिंताएं पैदा हो सकती है।

"कानून, राजनीति और प्रौद्योगिकी का मिलान बहुत
सारी अच्छी सोच को लागू करने वाला है।"

विश्व की लगभग सभी देशों तथा उनकी अर्थव्यवस्था में आर्थिक प्रगति एवं मानव संसाधन के विकास के लिए कृत्रिम बुद्धिमता और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग को सर्वमान्य रूप से स्वीकार कर लिया गया है। वर्तमान में इन तकनीकों का तीव्र गति से विकास हो रहा है और यह विश्व का सबसे बड़ा उद्योग बनने के लिए तत्पर है। इसके लिए प्रतिदिन हर देश अपनी अर्थव्यवस्था के लिए बड़े स्तर पर योजनाएं बना रहा है तथा विभिन्न निर्णायक कदम उठा रहा है।

कृत्रिम बुद्धिमता और नई तकनीकों को लेकर भारत में भी प्रमुख पहल की जा रही है। वर्ष 2020 में भारत ग्लोबल, पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटलिजेंस GPAL की स्थापना हेतु 15 अन्य देशों के साथ शामिल हुआ था। इस गठबंधन का उद्देश्य प्रौद्योगिकियों के उत्तरदायित्वोंपूर्ण उपयोग हेतु ढांचा स्थापित करना है।

अंतः विषयक साइबर भौतिक प्रणालियों पर राष्ट्रीय मिशन (National Mission on Interdiaplinry Cyber Physial Systems) के तहत भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) खड़गपुर में कृत्रिम बुद्धिमता और मशीन लर्निंग पर टेक्नोलॉजी इनोवेशन हब (TLH) स्थापित किया गया है जिसका उद्देश्य आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में अगली पीढ़ी के विकास हेतु वैज्ञानिक, इंजीनियर तकनीशियन के निर्माण हेतु अत्याधुनिक प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ इनका क्षमता निर्माण करना है।

****

"हिंदी को एक मजबूत, एकत्रित और विश्वासी भाषा के रूप में बढ़ाने का दायित्व हम सभी का है, ताकि हमारा देश और समाज आगे बढ़ सकें।"

कृत्रिम बुद्धिमता एवं सूचना प्रोद्योगिकी -
आज के परिदृश्य में भारत के उत्थान में सहयोगी

(हिंदी पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता से चुना हुआ निबंध)

श्वेता तिवारी
आशुलिपिक

पांच साल पहले ही प्रो. हॉकिंग ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बारे में कहा था, ''जिन्न बोतल से बाहर आ चुका है।'' वह इस बात से डरे हुए थे कि AI एक ऐसी प्रजाति को सामने ले आएगा, जो इंसानों को पीछे छोड़ देगी।

जिस तरह से अंतरिक्ष की दौड़ में दुनिया मसरूफ है, कृत्रिम बुद्धिमता को विकसित करने में भी उसी तरह व्यस्त है। हालांकि कई बड़े उद्योगपति एवं तकनीकिविद इससे भयभीत है। एलन मस्क सहित 1000 से अधिक ऐसे लोगों ने अपने 'खुले खत' में चेताया है कि ये 'समाज और लोगों के लिए बड़ा खतरा बन सकता है।'

कृत्रिम बुद्धि क्या है ? इसका आशय है इंसानों की प्राकृतिक बुद्धि के विपरीत मशीनों द्वारा कृत्रिम बुद्धि के उपयोग से कार्यों को आसानी से कर देना। घरों में स्वतः सफाई करने वाले रोबोट से लेकर वॉइस ऑटोमेशन तक एआई संचालित रोबोट काम कर रहे हैं। जिस प्रकार विद्युत शक्ति की खोज ने वैश्विक स्तर पर परिवर्तनों की नींव रखी थी, उसी तरह ए आई, भूख, गरीबी और विभिन्न बीमारियों के उन्मूलन की दिशा में सहायक होगी।

सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ - यह दो शब्दों से मिलकर बना है 'सूचना' का तात्पर्य है, तथ्य ज्ञान व जानकारी और प्रौद्योगिकी का आशाय है 'वह तकनीक जो सूचना को व्यवस्थित संप्रेषण योग्य बनाती है।' इसके माध्यम से कोई भी संदेश तस्वीर या विचार एक स्थान से विश्व के किसी दूसरे स्थान पर कम से कम समय में भेजे जा सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमता एवं सूचना प्रौद्योगिकी का भारत के उत्थान में सहयोग - भारत दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी आबादी के साथ सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और उसकी कृत्रिम बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है। पिछले महीने ही यह खबर आई थी कि भारत का पहला ए आई स्कूल शांति गिरी विद्या भवन, केरल में शुभारंभ किया गया है।

भारतीय सेना अपनी शक्ति और युद्ध की क्षमताओं को बढ़ाने का निरंतर प्रयास करती है। इसमें खास ये है कि कृत्रिम बुद्धिमता तकनीक का इस्तेमाल शुरू हो चुका है। इसमें मानव रहित टैंक हवाईयान और अधिक से अधिक क्षमताओं वाले रोबोटिक हथियारों से भारतीय सेना लैस होगी। पिछले हफ्ते ही जम्मू कश्मीर के अनंतनाग में एक मुठभेड़ में हमारे जवान शहीद हो गए। इस आपरेशन में भी आंतकवादियों का पता लगाने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया जा रहा है।

पिछले तीन दशकों में भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में विस्तार हुआ है। इससे निर्यात भी बढ़ा है और रोजगार के अवसर भी। 1980 में देश तकनीक आधारित अर्थव्यवस्था में प्रवृत्त हुआ था। सर्वप्रथम बैंकिंग क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाने लगा।

नए-नए उद्यमियों के आने से आई टी क्षेत्र में कई प्रतिमान स्थापित किए गए। इसकी बढ़ती मांग से अनेक नए इंजीनियरिंग कॉलेज खुले। आईटी कंपनियों ने जन्म लिया और इससे हमारे देश ने प्रगति की।

स्मार्ट सिटीज - नए विकसित शहरों और बुनियादी ढाँचों में ए आई का एकीकरण भी तेजी से शहरीकरण की मांग को पूरा

करने में मदद कर रहा है। इंटेलिजेंट ट्रेफिक मैनेजमेंट सिस्टम (ITMS) मुंबई में लागू होने वाली एक यातायात व्यवस्था है जिससे परिवहन के प्रवाह में सुधार होगा।

ग्रामीण भारत - कुछ महीनों पूर्व ही जुगलबंदी नामक ए आई चैटबॉट जो कि IIT मद्रास के सहयोग से बनाया गया है, ग्रामीण भारत के उन क्षेत्रों के लिए बनाया गया है जहां मीडिया सरलता से नहीं पहुंच पाती। यह करीब 10 भाषाओं को समझ सकता है एवं इसके द्वारा ग्रामीण लोग सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जान सकेंगे। वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग कहा जाता है और विश्व स्तर पर सूचना तकनीकी का लाभ व्यक्तियों कंपनी एवं विभिन्न राष्ट्रों को प्राप्त हो रहा है। आज मोबाइल, फोन, इंटरनेट आदि ने संसार को बहुत करीब ला के रख दिया है। औद्योगिक परिसर एवं सरकारी उपक्रमों की कुशलता में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में नवीन क्रांति आ गई है।

नागरिक केंद्रित व्यवस्था में सुशासन के लिए तैयार डिजिटल अवसंरचना एक महत्वपूर्ण स्थान ले चुकी है। ई-गनर्नेंस एक ऐसा क्षेत्र है, जिसके जरिए नौकरशाही का समुचित प्रयोग करके व्यवस्था की कठिनाईयों को समाप्त किया जा सकता है। ई-सुविधा, ई-अस्पताल, ई-याचिका और ई-अदालत जैसे कई ऐसे फलक है, जिनसे सुशासन को ऊंचाई देना संभव है।

आज की दुनिया में वास्तविक और भ्रम के बीच अंतर करना उतना ही कठिन हो गया है, जितना दूध को पानी से अलग करना। डिजिटल क्रांति ने समाज को इतना कृत्रिम बना दिया है कि सच या झूठ में अंतर करना कठिन हो गया है। सुंदर पिचाई ने कहा है कि ए.आई. को लेकर सावधानी बेहद जरूरी है। इसलिए हमें नए नियम चाहिए जिससे नई तकनीक का दुरुपयोग न किया जा सके।

भारत तेजी से सूचन प्रौद्योगिकी एवं कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। इससे हमारी अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा मिल रहा है। अतः यह जरूरी है कि इस क्षेत्र में नीतियाँ बनाई जाए एवं आवश्यक बुनियादी ढांचा उपलब्ध हो।

❋❋❋❋

"हिंदी के माध्यम से हम अपने विचारों को और अधिक स्पष्टता से व्यक्त कर सकते हैं।"

"हिंदी भाषा का महत्व उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता में हैं।"

कृत्रिम बुद्धिमता एवं सूचना प्रोद्योगिकी -
आज के परिदृश्य में भारत के उत्थान में सहयोगी

(हिंदी पखवाड़ा 2023 के अंतर्गत आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता से चुना हुआ निबंध)

अमरकांत कुमार
कार्यकारी सहायक

''कृत्रिम बुद्धिमता'' का परिचय - यह कम्प्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जो कम्प्यूटर के इंसानों की तरह व्यवहार करने की धारणा पर आधारित है। कृत्रिम बुद्धिमता के जनक जॉन में मैकार्थी को माना जाता है, उन्होंने इस शब्द के मामले से पूरे विश्व को अवगत कराया था। यदि इसे सरल भाषा में समझे तो यह मशीनों को सोचने समझने किसी समस्या का हल करने की क्षमता को सूचित करता है।

उद्भव - कृत्रिम बुद्धिमता पर शोध की शुरूआत सन् 1950 के दशक से हुई थी। जिसका उद्देश्य कृत्रिम तरीके से विकसित बौद्धिक क्षमता को विकसित करना है।

कृत्रिम बुद्धिमता के कार्य करने के तरीके - इसके माध्यम से कम्प्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम किया जाता है जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर संचालित करने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क कार्य करता है।

कृत्रिम बुद्धिमता सीमित स्मृति प्रतिक्रियात्मक मस्तिष्क सिद्धांत एवं आत्म चेतना जैसी जन धारणाओं पर कार्य करता है।

कृत्रिम बुद्धिमता से होने वाले लाभ - इससे होने वाले लाभ की गणना के लिए निम्न बिंदुओं को समझा जा सकता है-

1. कृषि में सहायता - इसके द्वारा कृषि में काफी मदद मिल सकता है। इसके माध्यम से कृषि के उत्पादन को बढ़ाने एवं इसमें होने वाली हानि को काफी कम किया जा सकता है। आज इसके माध्यम से बड़े भूभाग का काफी कम समय में जुताई (जोतना) की जाती है इसके अतिरिक्त बीजारोपण, जोसाई आदि की आसान हो गया है।
2. जीडीपी में बढ़ोत्तरी - इस संबंध में NITI आयोग की रिपोर्ट की माने तो कृत्रिम बुद्धिमता को बढ़ावा देने से वर्ष 2035 तक भारत की जीडीपी में 957 बिलियन डॉलर की वृद्धि के साथ ही और वर्ष 2035 तक भारत की वार्षिक वृद्धि दर को 1.3 प्रतिशत तक बढ़ाने की संभावना है।
3. शिक्षा की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी - इसकी सहायता से शिक्षा की गुणवत्ता में काफी तीव्रता से बढ़ोत्तरी को देखा जा सकता है। इसकी सहायता से शिक्षा को जन जन तक पहुंचाना आसान हो गया है। लोग गाँव-गाँव शहर-शहर शिक्षा को सरलता से प्राप्त कर ले रहे हैं, जिससे भारत में शिक्षा के विकास दर में काफी वृद्धि हुई है।
4. स्वास्थ्य सेवाओं में विकास :- कृत्रिम बुद्धिमता के द्वारा गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ सेवाओं को लोगों तक सरलता से पहुंच बनाया जा सका है। इसके माध्यम से आज कम्प्यूटर पर सरलता से विभिन्न मेडिकल समस्याओं का निवारण को समझा जा सकता है। आज कम्प्यूटर के माध्यम से हृदय धड़कन, रक्तचाप आदि को सरलता से रिकार्ड किया जाता है, जिससे मरीज सरलता से समस्याओं से बाहर निकल पाता है। इसे कोरोना के समय में काफी सहयोगी के रूप में देखा गया था जब सभी लोगों को घर से बाहर निकलना बंद था तो यह काफी सहयोगी के रूप में लोगों के सामने

आया था।

उपरोक्त लाभ के आधार पर यह समझा जा सकता है कि यह आज के परिदृश्य में भारत के उत्थान में काफी सहयोगी है।

सरकार की इस संबंध में क्रियाशीलता :- कृत्रिम बुद्धिमता के इस्तेमाल के लिए सरकार ने कई कदम उठाये हैं जिसे नीचे वर्णित किया जा रहा है।

1. मानव मशीन की बातचीत के लिए विकासशील विधिया बनाई जा रही है।
2. कृत्रिम बुद्धिमता और आर एस डी के साथ एक सक्षम कार्यबल का निर्माण किया जा रहा है।
3. कृत्रिम बुद्धिमता के नैतिक, कानूनी और सामाजिक निहितार्थी को समझना तथा उस पर कार्य किया जाना जाना
4. कृत्रिम बुद्धिमता तकनीकी को मानक मानकर और बेंचमार्क के माध्यम मापन का मुल्यांकन करना।

सूचना प्रौद्योगिकी

सूचना प्रौद्योगिकी का परिचय - कोई भी तकनीक जिसके माध्यम से हम जानकारी प्राप्त करते हैं उसे सूचना प्रौद्योगिकी कहा जाता है।इसे संक्षिप्त रूप में IT कहा जाता है।यह एक साधन है जिसके माध्यम से किसी भी सूचना को किसी यंत्रों या उपकरणों के माध्यम से प्राप्त करते हैं।

इसे विशेष रूप से समझने के लिए निम्न तथ्यों को देख सकते है - (उदाहरण स्वरूप)

1. कम्प्यूटर के नेटवर्क का प्रबंधन किया जाना।
2. थ्री डी कलाकृति की डिजाइनिंग तैयार किया जाना।
3. Home web Page का निर्माण करना।
4. डिजीटल रूप से विडियों का निर्माण किया जाना।
5. तकनीकी सहायता प्रदान करना।
6. इंटरनेट के माध्यम से वस्तुओं को बेचने वाले विक्रेता।
7. परियोजनाओं और बजट का प्रबंधन।
8. फीडिंग साफ्टवेयर का इस्तेमाल होना।
9. तकनीकी दस्तावेज लिखना।
10. किसी कंपनी के डाटाबेस का प्रबंधन करना।

आज के परिदृश्य में भारत के उत्थान में सहयोगी - सूचना प्रौद्योगिकी भारत के उत्थान में बड़ी सहयोगी है और दिन यह अपना दायरा भारत के विकास के परिदृश्य में बढ़ाता ही चला जा रहा है।भारत के विकास सूचना प्रौद्योगिकी क उपकरणों का बहुत बड़ा योगदान है, जिसे नीचे वर्णित बिंदुओं के आधार पर समझा जा सकता है।

1. टेलीफोन, रेडियों उपकरण और स्विच जो संचार में उपयोग किए जाते हैं।
2. पारंपरिक कम्प्यूटर एप्लीकेशन जिसमें डाटा स्टोरेज और प्रोग्राम से लेकर इनपुट, प्रोसेस और डाटा को शहरी उपयोग के लिए भेजना है।
3. राज्य रेडियों संचार नेटवर्क।

4. डाटा, नेटवर्क और सभी संचार उपकरण जैसे सर्वर, राउटर ब्रिज हब और वायरिंग।
5. कम्प्यूटर सूचना प्रणाली से सीधे जुड़े हुए वाहन उपकरणों का उपयोग ऑडियों, वीडियों और ग्राफिक जानकारी को एकत्र करने और उनका प्रचार करने के लिए किया जाता है। जैसे-स्कैनर, डिजीटाइजर
6. सॉफ्टवेयर और ऑफिस ऑटोमेशन सिस्टम जैसे वर्ड प्रोसेसिंग और स्प्रेडशीट और साथ ही उन्हें चलाने के लिए कम्प्यूटर का समर्थन।
7. वॉइस कॉन्फ्रेसिंग उपकरण।
8. वॉइस रिस्पांस सिस्टम जो कम्प्यूटर डाटाबेस या एप्लीकेशन के साथ सहभागिता करता है।

सूचना प्रौद्योगिकी में कैरियर की अवसरों की बहुलता :- इस संदर्भ में सरकारी क्षेत्र में अवसरों की बहुलता हो गई है। इस सेक्टर में काम करने वाले लोगों की संख्या में दिन प्रतिदिन बढ़ोत्तरी देखी जा रही है।

इन्हें वर्णित बिंदुओं के आधार पर समझ जा सकता है -

1. विभिन्न सरकारी विभाग में ऐसे पद मिलते हैं जो सॉफ्टवेयर सपोर्ट कम्प्यूटर कैश एवं हार्डवेयर की समस्या सहित किसी भी तकनीकी समस्या के निवारण में कम्प्यूटर सपोर्ट विशेषज्ञ काम करते हैं।
2. नेटवर्क सिस्टम प्रशासक नेटवर्क सिस्टम सुरक्षा और प्रदर्शन की बड़ी तस्वीर पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
3. सूचना सुरक्षा विश्लेषण किसी संगठन Computer Network सुरक्षा परीक्षण और कंपनी व्यापी सर्वोत्तम सुरक्षा प्रयोगों के विकास के लिए जिम्मेदार है।
4. इससे ध्यान रखने योग्य बात यह है कि इनमें से कुछ भूमिकांए कंपनी के आकार और दायरे के आधार पर बदल जाती है। छोटी कंपनियों में अधिकांश दैनिक कार्य अपेक्षाकृत सांसरिक चीजे जैसे समस्या निवारण प्रिंटर के इर्द गिर्द घूम सकती है लेकिन दूसरी और बड़ी कंपनियों के साथ आईटी कर्मचारियों के पास संभावित फोकस क्षेत्रों की एक सारणी होती है कुछ प्रबंधन और रणनीतिक योजनाओं में भूमिका के बड़े स्तर पर कार्य कर सकते हैं जबकि कुछ अन्य साइबर स्पेस जैसे क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

❋ ❋ ❋ ❋

**“भाषा ही हमारी पहचान है,
हिंदी हमारी अद्भुत पहचान है।”**

**“हिंदी भाषा हमारे राष्ट्र की गरिमा और गौरव
का प्रतीक है, इसका सम्मान करें।”**

चित्रकला

विभा श्रीवास्तव
पत्नी अर्जित श्रीवास्तव
कर सहायक

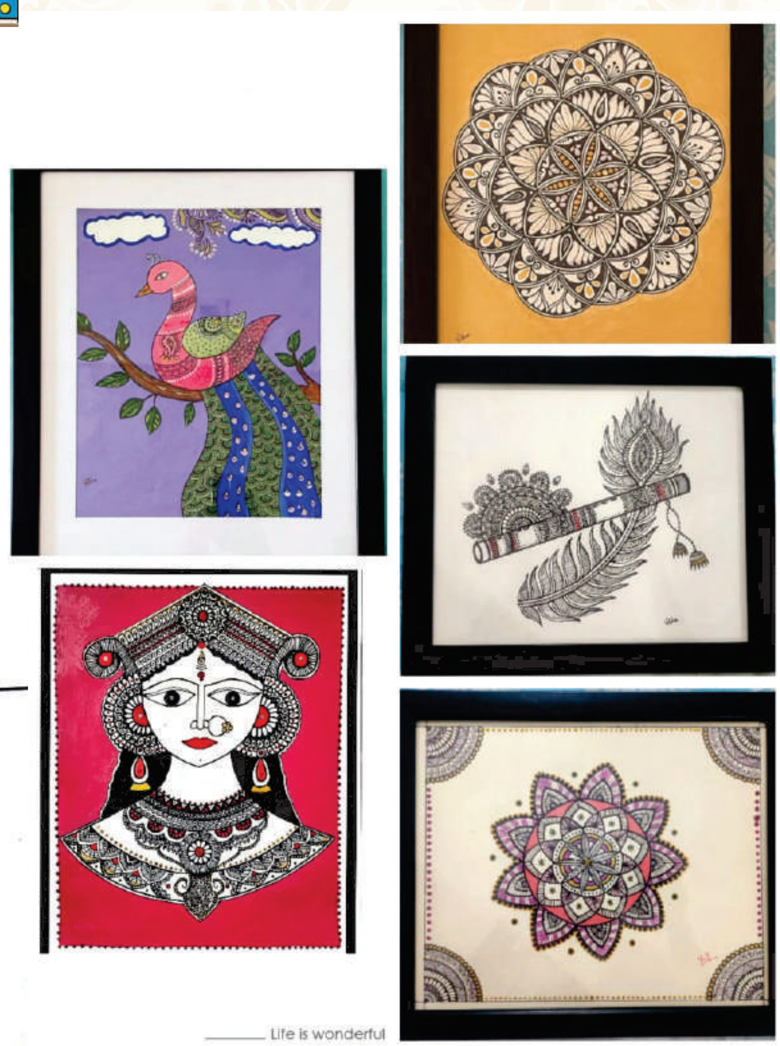

चित्रकला

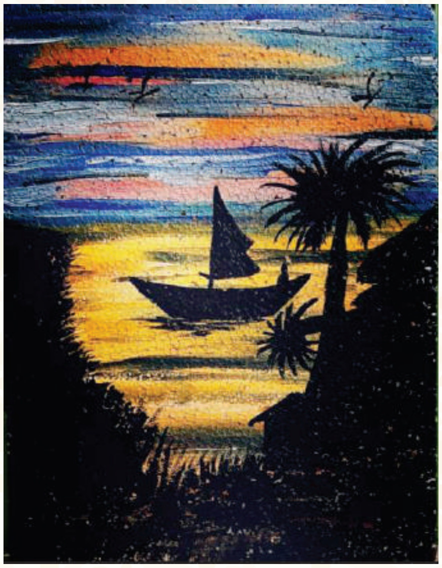

दीपाली शर्मा
पत्नी अंशु शर्मा
अधीक्षक

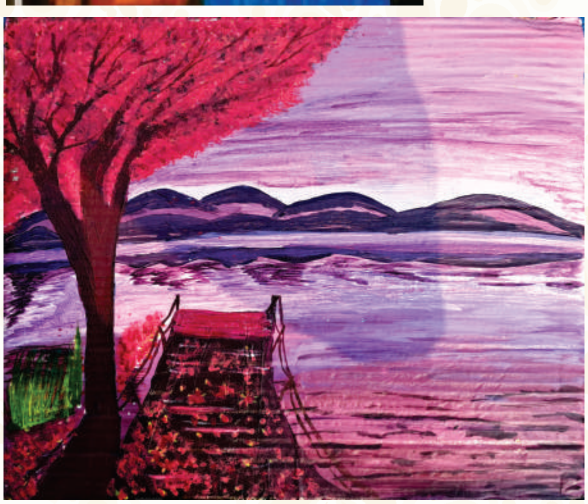

सोशल मीडिया की झलकियाँ

केंद्रीय जीएसटी एवं केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय
जबलपुर (म.प्र.)

अधिकार - क्षेत्र
(पुनर्गठित दिनांक 01.07.2017 से प्रभावी)

जबलपुर आयुक्तालय के अंतर्गत आने वाले कार्यालय

1. जबलपुर I मंडल कार्यालय
2. जबलपुर II मंडल कार्यालय
3. छिंदवाड़ा मंडल कार्यालय
4. कटनी मंडल कार्यालय
5. रीवा मंडल कार्यालय
6. सतना मंडल कार्यालय
7. दमोह मंडल कार्यालय

मुख्य पृष्ठ - मदनमहल, जबलपुर
पार्श्व पृष्ठ - बैलेंसिंग रॉक, जबलपुर